Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भारतीय कविताएं

1983

CC-0 Agamnigam Digital Pres ing by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रति वर्ष स्फुट रूप से स्थायी महत्त्व की कई रचनाएँ प्रकाशित होती हैं और सामान्य रचनाओं की भीड़ में खो जाती हैं। यदा-कदा चर्चित होती हैं, रेखांकित भी होती हैं, किन्तु एक स्थान पर सहेजी नहीं जातीं। अन्य भाषाओं की उपलब्धियों से साक्षात्कार तो दुर्लभ ही है, हम अपनी ही भाषा की सर्वोत्तम कृतियों से अपरिचित रह जाते हैं। परिचय होता भी है तो बस क्षण मात्र के लिए। यों हम सभी न्यूनाधिक यह अनुभव और स्वीकार करते हैं कि भारतीय साहित्य विभिन्न भाषाओं में रचे जाने पर भी कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में एक मुख्य धारा से सम्पृक्त है। भाषा विशेष के साहित्य के सही मूल्यांकन एवं सच्चे आस्वाद के लिए उसे समग्र भारतीय साहित्य के परिदृश्य में रखकर देखा जाना नितान्त आवश्यक एवं वांछनीय है।

भारतीय कविताएं : 1983 सभी भाषाओं की पाँच-पाँच प्रतिनिधि कविताओं की महत्त्वपूर्ण चयनिका है। चुनाव केवल उन्हीं रचनाओं से किया गया है जो लिखी चाहे कभी भी गयी हों, पुस्तक, पत्र-पत्रिका, आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि के माध्यम से पहली बार सन् 1983 में ही प्रकाश में आयीं। इससे 1983 की विशिष्ट कविताएँ एक ही स्थान पर उपलब्ध एवं सुरक्षित हो सकेंगी और समकालीन भारतीय कविता के प्रति जिज्ञासु काव्य-प्रेमियों को इधर-उधर भटकना नहीं पड़ेगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भारतीय कविताएँ : 1983

(भारतीय भाषाओं में वर्ष 1983 में प्रकाशित कविताओं में से
अग्रणी काव्य-मर्मज्ञों द्वारा चुनी गयी 74 विशिष्ट कविताएँ)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भारतीय कविताएँ 1983

सम्पादक

बालस्वरूप राही

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu
Acc. No. 651 (D)
Dated 24-9-09

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Professor of Hindi

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लोकोदय ग्रन्थमाला : ग्रन्थांक 444

भारतीय कविताएँ : 1983

संपादक : बालस्वरूप राही

प्रथम संस्करण : 1985

मूल्य : 45/-

प्रकाशक

भारतीय ज्ञानपीठ

18 इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोधी रोड,
नयी दिल्ली-110003

मुद्रक

अंकित प्रिंटिंग प्रेस

शाहदरा, दिल्ली-110032

आवरण शिल्पी : अवधेश कुमार

©
सर्वाधिकार सुरक्षित

BHARATIYA KAVITAYEN : 1983 (Poems), Edited by Balswaroop Rahi. Published by Bharatiya Jnanpith, 18, Institutional Area, Lodhi Road, New Delhi 110003 Printed at Ankit Printing Press, Shahdara, Delhi. First Edition 1985.
Rs. 45/-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चयन-मंडल

असमी	नीलमणि फूकन
उड़िया	डॉ. जगन्नाथ प्रसाद दास
उर्दू	डॉ. गोपीचन्द नारंग
कन्नड़	प्रो. एच. एम. नायक
कश्मीरी	डॉ. शशि शेखर तोषखानी
गुजराती	डॉ. दिगीश मेहता
तमिल	डॉ. एम. रामलिंगम एषिलमुदलवन
तेलुगु	डॉ. पी. एस. आर. अप्पाराव
पंजाबी	डॉ. हरभजन सिंह
बांग्ला	प्रणवेन्दु दासगुप्त
मराठी	शान्ता जनार्दन शेलके
मलयालम	डॉ. के. एम. जार्ज
संस्कृत	डॉ. मण्डन मिश्र
सिन्धी	डॉ. एल. एम. खूबचन्दाणी
हिन्दी	डॉ. रामदरश मिश्र

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रस्तुत प्रयास

अपनी स्थापना से ही भारतीय ज्ञानपीठ का लक्ष्य भारतीय साहित्य के संवर्द्धन में योगदान रहा है। अपने इस लक्ष्य की सिद्धि के लिए वह प्रारम्भ से ही त्रि-आयामी प्रयास करता आ रहा है। एक ओर तो वह जटिल किन्तु विश्वसनीय मूल्यांकन-प्रणाली द्वारा भारतीय साहित्य की शिखर उपलब्धियों को रेखांकित-पुरस्कृत करता है, ताकि साहित्य को समर्पित अग्रणी रचनाकारों को अधिकतम मान-सम्मान एवं राष्ट्रव्यापी प्रतिष्ठा प्राप्त हो और उनकी शीर्ष कृतियाँ अन्य रचनाकारों के लिए प्रकाश-स्तम्भ का कार्य करें। दूसरी ओर वह समग्र समकालीन भारतीय साहित्य में से कालजयी रचनाओं का चयन कर उन्हें, प्राय: हिन्दी के माध्यम से, बृहत्तर प्रबुद्ध पाठक समुदाय तक ले जाता है, ताकि एक भाषा का सर्वोत्कृष्ट साहित्य दूसरी भाषा तक पहुँचे और इस प्रकार विभिन्न भाषाओं के रचनाकारों एवं सजग पाठकों के मध्य तादात्म्य स्थापित हो और परस्पर प्रति-क्रिया हो। तीसरी ओर वह संवेदनशील, सम्भावनावान उदीयमान रचनाकारों की सशक्त कृतियाँ प्रकाशित कर उन्हें उनका दाय प्राप्त कराने में सक्रिय सहयोग करता है।

साहित्य राष्ट्रीय चेतना का सर्वप्रमुख संवाहक है। यदि किसी देश की सांस्कृतिक धड़कनों को समझना हो तो उसकी नब्ज़—साहित्य पर हाथ रखना आवश्यक होता है। अन्य राष्ट्र को ही नहीं, अपने राष्ट्र को भी हम प्रमुखतः अपने साहित्य के माध्यम से ही सही-सही पहचानते हैं। स्वराष्ट्र की आत्मा से साक्षात्कार करना कौन नहीं चाहता ! राष्ट्र की आत्मा साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त होती है और साहित्य भाषा के माध्यम से मुखरित होता है। किन्तु हमारे लिए कठिनाई यह है कि भारतीय साहित्य एक या दो भाषाओं के माध्यम से मुखरित होता नहीं। अतः भाषा जो एक पथ है, सेतु है, वही व्यवधान बन जाती है। इस व्यवधान के अतिक्रमण में भारतीय ज्ञानपीठ निरन्तर सुधी पाठकों का सहायक रहा है। इस बार सोचा गया कि एक और नयी राह निकाली जाए, एक और नयी दिशा का संधान हो। कालजयी शाश्वत रचनाओं तक ही सीमित क्यों रहा जाए ? जिन रचनाओं को अभी काल की कसौटी पर कसा जाना है, उन तक भी पहुँच क्यों न हो ? आज की धड़कनें पहचानने के लिए आज का आमना-सामना आवश्यक है। जो सबसे ताजी है, आज की रचना है, वही तो वर्तमान को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समझने में सबसे बड़ी सहायक बन सकती है। वही कल कालजयी सिद्ध होकर धरोहर भी बन सकती है।

प्रति वर्ष स्फुट रूप से स्थायी महत्त्व की कई रचनाएं प्रकाशित होती हैं, और सामान्य रचनाओं की भीड़ में खो जाती हैं। यदा-कदा चर्चित होती हैं, रेखांकित भी होती हैं, किन्तु एक स्थान पर सहेजी नहीं जातीं। अन्य भाषाओं की उपलब्धियों से साक्षात्कार तो दुर्लभ ही है, हम अपनी भाषा की सर्वोत्तम कृतियों से अपरिचित रह जाते हैं। परिचय होता भी है तो बस क्षण मात्र के लिए। यों हम सभी न्यूनाधिक यह अनुभव और स्वीकार करते हैं कि भारतीय साहित्य विभिन्न भाषाओं में रचे जाने पर भी कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में एक मुख्य धारा से सम्पृक्त है। भाषा विशेष के साहित्य के सही मूल्यांकन एवं सच्चे आस्वाद के लिए उसे समग्र भारतीय साहित्य के परिदृश्य में रखकर देखा जाना नितान्त आवश्यक एवं वांछनीय है।

इसी भावना से प्रेरित होकर हमने यह निर्णय किया कि भारतीय ज्ञानपीठ प्रति वर्ष समस्त भारतीय भाषाओं में प्रकाशित होनेवाली विधा विशेष की श्रेष्ठ रचनाओं को एक संकलन में एक साथ सँजोने का क्रम प्रारम्भ करे। निर्णय हुआ कि वार्षिक चयनिकाओं की इस श्रृंखला का प्रारम्भ 1983 में प्रकाशित कविताओं और कहानियों के चयन से हो। तय हुआ कि कविता-संकलन के लिए हर भाषा से पाँच कविताएँ चुनी जाएं और इस प्रकार काव्य-चयनिका में सभी भाषाओं की लगभग 75 कविताओं का समावेश हो। इससे 1983 की विशिष्ट कविताएँ एक ही स्थान पर उपलब्ध एवं सुरक्षित हो सकेंगी और समकालीन भारतीय काव्य धारा के प्रति जिज्ञासु काव्य-प्रेमियों को इधर-उधर भटकना नहीं पड़ेगा।

सबसे बड़ी समस्या थी रचनाओं का चयन। कोई एक तो सभी भाषाओं का जानकार होता नहीं। अतः इस योजना के क्रियान्वयन के लिए सोचा यह गया कि हर भाषा से रचना-चयन का दायित्व भाषा विशेष के ही किसी काव्य-मर्मज्ञ को सौंपा जाए जो कविताओं का चयन भी करे और चुनी हुई कविताओं के हिन्दी रूपान्तरों की प्रामाणिकता भी परख ले।

'भारतीय कविताएँ : 1983' हमारी इसी महत्त्वाकांक्षापूर्ण योजना का मूर्त रूप है। चुनाव उन्हीं रचनाओं में से किया गया जो लिखी चाहे कभी भी गयी हों, पुस्तक, पत्र-पत्रिका, आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि के माध्यम से पहली बार सन् 1983 में ही प्रकाश में आयीं।

यहाँ हम यह स्पष्ट कर दें कि कविता-चयन में चयन-मण्डल के हर सदस्य को हमने पूरी-पूरी स्वतन्त्रता दी है और अपनी पसन्द को कहीं भी आरोपित नहीं किया। चुनाव के लिए पूरी जिम्मेदारी, पूरी की पूरी जवाबदेही चयनकर्ता की ही है। हाँ, चयनकर्ता का चुनाव हमारा है और हमने यह पूरी सावधानी एवं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दायित्व के साथ किया है। हर चयनकर्ता अपनी भाषा के साहित्य का विश्वसनीय मर्मज्ञ एवं अधिकारी विद्वान है। अनेक तो मूर्द्धन्य भारतीय साहित्यकारों अथवा साहित्य मनीषियों में गौरवपूर्ण स्थान रखते हैं। यदि एकाध कविता के चयन से हमारी असहमति रही भी तो हमने अपने मत के प्रति आग्रह नहीं रखा और चयनकर्ता के निर्णय को अन्तिम माना। एक बांग्ला कविता का समावेश हम चाह कर भी नहीं कर पाये, क्योंकि कई बार प्रयास करने पर भी हमें मूल कवि से अपेक्षित सहयोग प्राप्त न हो सका। सम्भव है कि वह संग्रह की सम्भावनाओं के प्रति आश्वस्त न रहे हों।

स्पष्ट ही है कि प्रतिनिधि कविता-चयन का कोई भी निर्णय निर्विवाद नहीं हो सकता। इस कविता-चयन के सामने भी प्रश्नचिह्न लगाए जा सकते हैं और संभव है लगें भी। दो-चार नहीं, दर्जनों कविताएँ ऐसी होंगी जो अपनी भाषा में 1983 की उपलब्धि मानी जाएँ। अपनी भाषा में ही क्यों, सम्पूर्ण भारतीय साहित्य में एक उपलब्धि मानी जाएँ। किन्तु प्रतिनिधि रचनाओं की संख्या सीमित एवं सुनिश्चित रखना व्यावहारिक समझा गया—संकलन के आकार-नियन्त्रण के लिए भी और सभी भाषाओं के प्रति समभाव की दृष्टि से भी। हमारे लिए सभी भाषाएँ महत्त्वपूर्ण हैं। प्रतिनिधि रचनाएँ और भी हो सकती हैं या यह भी हो सकता है कि इनमें से किसी रचना को प्रतिनिधि माना ही न जाए। तब भी इतना तो है ही कि ये सर्वोत्कृष्ट हों या नहीं, इस संकलन के माध्यम से हम आज के भारतीय काव्य-साहित्य का चेहरा काफ़ी कुछ पहचान सकते हैं। पूर्ण तो कुछ नहीं होता वृत्त के अतिरिक्त। पूर्ण सन्तोष भी दुर्लभ ही है।

'भारतीय कहानियाँ : 1983' के लिए कहानियाँ प्रस्तुत करते समय दो-एक चयन-कर्ताओं ने अपनी भाषा के कथा-वर्ष के प्रति असन्तोष व्यक्त करते हुए कहा था कि ये कहानियाँ भी उपलब्धि के रूप में रेखांकित नहीं की जा सकतीं, इन्हें हद से हद ग़नीमत कहा जा सकता है। किन्तु 'भारतीय कविताएँ : 1983' के लिए कविताएं चुनकर भेजते हुए इस प्रकार का कोई असन्तोष चयन-मण्डल के किसी सदस्य ने व्यक्त नहीं किया। उन्होंने 1983 की काव्य उपलब्धियों के प्रति सन्तोष का भाव व्यक्त किया है और ये रचनाएँ निःसंकोच प्रस्तुत की हैं। कविताओं के अनुवाद का कार्य गद्यानुवाद की अपेक्षा अधिक कठिन था, किन्तु रूपान्तरकारों के उत्साह के कारण अन्ततः संभव हुआ। यों कविता के अनुवाद का कार्य बड़ा जोखिम का काम है, फिर भी हमें लगता है कि मूल का पूरा-पूरा स्वाद भले ही इन रचनाओं के माध्यम से आपको न मिल सके, कविता का कथ्य बड़ी सीमा तक प्रेषित हो सका है। यह एक सुविधापूर्ण स्थिति है कि अधिकतर भारतीय भाषाओं में अब कविता छन्द में नहीं लिखी जा रही, अन्यथा अनुवाद का कार्य और भी दुःसाध्य हो जाता। फिर भी मूल कविता के मुहावरे को अनुवाद की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाषा में पकड़ना गोताखोरी के समान है।

दरकती राष्ट्रीय चेतना और चटखते एकात्म भाव के संकटपूर्ण समय में इस प्रकार के प्रयासों की विशिष्ट भूमिका हो सकती है। परिचर्य सौहार्द की पहली सीढ़ी है। अपनी भाषा के इतर साहित्य के साक्षात्कार से न केवल भारतीय साहित्य की समझ अधिक परिपक्व होती है, बल्कि हम अपनी भाषा के साहित्य की प्रासगिकताओं को भी और बेहतर ढंग से समझते हैं। हमें प्रसन्नता है कि हमारे इस विनम्र प्रयास को प्रारम्भ से ही सभी दिशाओं से सहयोग एवं सराहना प्राप्त होती रही है। एक पत्रकार बन्धु ने तो इसे "राष्ट्र में स्वाधीनता के उपरान्त किया जाने वाला सर्वाधिक उल्लेखनीय साहित्यिक एकता आयोजन" माना है। हमारा प्रयत्न होगा कि हम यह क्रम बनाए रख सकें। यदि प्रति वर्ष की साहित्य-उपलब्धियाँ इस प्रकार सुरक्षित की जा सकीं तो इस दशक की समाप्ति पर दशक के भारतीय साहित्य पर शोध करनेवाले शोधार्थियों के लिए ये ग्रन्थ आधार-सामग्री के रूप में अपनी उपयोगिता सिद्ध करेंगे।

भारतीय साहित्य मूल रूप से एक है अथवा एक मुख्य धारा से जुड़ा है—यह एक सत्य है या मात्र एक आह्लादकारी मिथक ? इस आशय के विवादास्पद प्रश्नों का उत्तर खोजने में इस प्रकार के ग्रन्थों की सार्थकता विवादातीत मानी जा सकती है।

यों तो प्रत्येक देश की कविता उसकी सांस्कृतिक चेतना की संवाहक होती है, फिर भी भारतीय कविता के सन्दर्भ में यह सच्चाई और भी प्रबलता के साथ उभर कर आती है। मूल कारण है भारतीय संस्कृति की विशिष्टता और मूल्य-निष्ठा। भारतीय संस्कृति की पहचान संसार की किसी भी संस्कृति से अलग है। ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, अमेरिका आदि की संस्कृतियों में समानताएँ देखी जा सकती हैं, किन्तु भारतीय संस्कृति का ऐसा सादृश्य किसी अन्य देश की संस्कृति में प्रायः अप्राप्य ही है।

भारतीय संस्कृति को एकरूपता, विशिष्टता और निजता प्रदान करने में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका भारतीय दर्शन की है। भारतीय आध्यात्मिकता विश्व में अद्वितीय है। जब हम पश्चिम की स्वच्छन्दतावादी काव्य-धारा को भारतीय छायावादी काव्य-धारा के समकक्ष घोषित करते हैं तब हम भूल जाते हैं कि पाश्चात्य स्वच्छन्दतावादी कवि, चाहे वह वर्ड्सवर्थ हो या शैली, कीट्स, बायरन या कॉलरिज, फूल को फूल और बादल को बादल के रूप में ही देखता है। किन्तु महादेवी, पन्त, प्रसाद या निराला के लिए फूल मात्र फूल नहीं है, बादल मात्र बादल नहीं। वे किसी अदृश्य सत्ता के संदेशवाहक हैं। छायावाद जहाँ रहस्यवाद की पगडण्डी पर जा निकलता है वहीं से विशुद्ध भारतीयता की हरित भूमि प्रारम्भ हो जाती है। भारतीय दर्शन में महत्त्व व्यष्टि का उतना नहीं जितना समष्टि का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है। हम महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि हम उससे जुड़े हैं जो चरम महत्त्वपूर्ण है। जब अद्वैत की अध्यात्म-भावना को सामाजिक रूप मिलता है तब वसुधैव कुटुम्बकम् की उदात्त भावना का जन्म होता है। पाश्चात्य संस्कृति में व्यक्ति का अत्यधिक महत्त्व है, अतः व्यक्ति और समाज प्रायः टकराव की मुद्रा में रहते हैं। किन्तु हमारा एकात्म भाव निरन्तर सामरस्य एवं सामंजस्य स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील रहता है।

दूसरी विशेष रूप से उल्लेखनीय बात यह है कि हमारे यहाँ क्षणाभास की अपेक्षा निरन्तरता बोध अधिक जाग्रत है। हम मृत्यु से पूर्व जीवन मानते हैं और मृत्यु के उपरान्त भी जीवन की स्थिति स्वीकार करते हैं। जीवन की निरन्तरता की इस अवधारणा का भारतीयों पर ऐसा प्रभाव पड़ता रहा है कि मीर तकी मीर तक कह उठे :

मौत इक मांदगी का वक़्फ़ा है
यानी आगे चलेंगे दम लेकर

हमारे विचार से अद्वैत और शाश्वतता बोध भारतीय संस्कृति की दो ऐसी विशेष पहचानें हैं जो भारतीय साहित्य को भी विशेष चरित्र और स्वरूप प्रदान करती हैं। निरन्तरता-बोध और किंचित् परम्परा-निष्ठता का यह स्वर न्यूनाधिक सभी भाषाओं की कविता में मिल जाता है :

मेरी भाषा दादी माँ का पानदान है सात पुश्तों का
अंगुलियों का चूना लगते-लगते
अँधेरे में, यातना में, विषाद में,
आत्मा की तरह, आशा की तरह, मन्त्र की तरह
सफ़ेद झक्क दिखता है
मेरे शब्द में पूर्वजों की सभी आशाएँ, सारी रुलायी
हुँकार और रिरियाहट, टपटपाहट, गुनगुनाहट,
स्मित हँसी, थमी सांस की धड़कनें
समुद्र में नदी के साथ मिलती हैं।

सीताकान्त महापात्र की इस उड़िया कविता को जब हम सिर्पि की तमिल कविता के साथ पढ़ते हैं तो भारतीय साहित्य की मुख्यधारा के एक होने की बात आसानी से समझ में आती-सी लगती है :

काल और मैं
अंकुरित और पल्लवित हुए
एक के बाद एक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

या एक के पहले एक
ऐसा नहीं
हम दोनों
एक ही प्रसव में उपजी
प्रशाखाद्वय हैं
एक ही वेणी की
दायीं लट और बायीं लट हैं
गगन पिंजरे से निर्मुक्त
आदिम पक्षी के
पंखद्वय हैं ।

—कल, आज और कल (तमिल) : सिर्पि

काल की निरन्तरता और धरती की निस्सीमता भारतीय कवि को हताश नहीं होने देती । भारतीय संस्कृति का मूल स्वर आशा है, हताशा नहीं । हताशा को पाश्चात्य कविता का एक अग माना जा सकता है किन्तु सामान्यत: भारतीय कविता में आशा का ओज प्रवाहित रहता है । आशा का यह स्वर पाश्चात्य कविता में जहाँ-तहाँ उभरा है—"वेन विन्टर कम्स केन स्प्रिंग बी फार बिहाइन्ड ?" किन्तु अन्धकार का समुद्र तैरकर आने वाली सुबह के प्रति भार-ीय कवि जैसा आश्वस्त कोई नहीं :

"आज भले ही डूबे लेकिन आने वाला कल तो है ही
कल सूरज निकलेगा ही
और बहुत कुछ तपेगा और तपकर हलका होगा,
—बहुत कुछ को मिलेगी धूप ऊनी-ऊनी
और तब हमारा आज का स्थगित कार्यक्रम
फिर से गतिमान होगा, शानदार ढंग से सूरज के साथ
बरसात बारहों महीने तो रहती नहीं ।"

—कल सूरज निकलेगा (गुजराती) : चन्द्रकांत शेठ

इसका अर्थ यह नहीं निकाला जाना चाहिए कि भारत का आधुनिक कवि आधुनिकता के श्राप और सामयिकता के उत्ताप से बिल्कुल बेख़बर है। वह जा सोया है किसी रस-सरोवर में, डूबा है आकण्ठ । नीलकण्ठ होना उसे आता नहीं । आधुनिकता के विष को पिया है उसने, किन्तु तब भी बचाया है स्वयं को और कविता को विषाक्त होने से । भारतीय कविता चाहे कन्नड़ में हो, चाहे तमिल या तेलुगु में, यथार्थ से साक्षात्कार करने का दम उसमें है । वह कड़वाहट बेचती नहीं, पर कड़वाहट से बचती भी नहीं । आज की विसंगतियों, विषमताओं को भारत की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हर भाष' की कविता में चुनौती दी गयी है :

निकला है यह विज्ञापन बालकों की ओर से
रेडियो में, समाचार पत्रों में, टी० वी० में और
सिनेमा में, 'खो गयी हैं माताएँ
तोड़-ताड़ कर पालने को सोपानों पर
बच्चों को फेंक-फाँक कर रास्ते के पार
निकल गयी हैं पहुँच से कहीं बाहर
न रहीं अब वे माताएं कर गयी हैं सीमोल्लंघन
रास्ते पर जहाँ सब मिल पाते हैं या
बैंक में जो हैं प्रसूतिघर चेकों के लिए
या शालाओं में जहाँ तुतलाये जाते हैं अक्षर।

—**खो गई हैं माताएँ** (कन्नड़) : एच० एस० शिवप्रकाश

बाप रे ! बाप रे !!
भारत में
एक
काम को ढूंढना
वास्कोडिगामा को
भारत ढूंढने में
हुए कष्टों से भी
अधिक ही है।

—**भूचाल गर्जन** (तमिल) : पावण्णन

बाबू, आप मुझे जानते तो नहीं हैं
पर मैं आप की जाति का हूँ
जाति निर्मूलन दल का उम्मीदवार हूँ
एक बार अपना मत देकर मुझे
दिल्ली पहुँचा दो
फिर कभी इधर
मुह नहीं दिखाऊँगा—
सौगन्ध खाकर कहता हूँ।

—**नाखून के निशान** (तेलुगु) : बोयि भीमन्ना

चयनिका में संकलित नारी कविताएँ संवेदना की सूक्ष्मता के लिए विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बारह सालों में सिर्फ़ एक बार कुरिंजिपुष्प खिलते हैं
जब वे नये सिरे से खिलेंगे तब
मेरे पाँवों में क्या पहाड़ पर चढ़ने की ताक़त रहेगी ?
क्या कल मानव कुल्हाड़ी, आग
और गीध की आँख ले उधर भी नहीं पहुँचेगा ?

—**कुरिंजिपुष्प**-(मलयालम) : सुगत कुमारी

कब पता था कि चिन्तन और प्रेम सौतेली बहनें हैं
जो हमेशा लड़ती झगड़ती रहेंगी…
कब पता था कि मेरी सब से क़ीमती सोच
दुर्घटना में मर जायेगी…
कब पता था कि आत्मा पवन के वस्त्र पहनकर
चुपचाप सोये दरिया का माथा चूमकर लौट जाया करेगी…

—**कब पता था** (पंजाबी) : मंजीत टिवाणा

चाहे बांग्ला हो, चाहे कश्मीरी, भारतीय कविताओं को एक साथ पढ़िए और देखिए उनमें आज के यथार्थ का कड़वा स्वर कितना साफ़ सुनाई देता है :

मेरे विश्वास के छज्जों को
उड़ा ले गये मेरे ही तूफ़ान
जिस पंखुड़ी का रस पी रही थी
रंगबिरंगी तितली
उससे अब चू पड़ता है बूंद-बूंद ज़हर
कोई भी स्थिति ऐसी नहीं
जिसे सहारा कहा जा सके
कोई आवाज़ ऐसी नहीं
जिससे साँसें मिलाकर
खोज ली जाये रात के स्वप्न-नगर की राह
ठण्डे सूरज का पथ ही छोटा पड़ गया है
कोई भी चेहरा ऐसा नहीं
जिस पर उभरेगा सूर्य

—**विश्वास** (कश्मीरी) : चमनलाल चमन

तुम्हें देखता नहीं क्यों, देखकर भी पहचानता नहीं
भोर की मुखाकृति कहाँ छिपा रखते हो सारे दिन ?

—**भोर की मुखाकृति** (बांग्ला) : सुनील गंगोपाध्याय

ग़ज़ल उर्दू की सर्वाधिक लोकप्रिय काव्य विधा है। किन्तु दिलचस्प बात तो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह है कि उर्दू के साथ-साथ, बल्कि उससे भी ज़्यादा, वह अन्य भारतीय भाषाओं में लोकप्रिय होती जा रही है। हिन्दी में तो वह आज की जीवन्त कविता का एक उल्लेखनीय अंग बन चुकी है। अन्य भाषाओं में सिन्धी और गुजराती में उसका प्रचलन बड़ी तेजी के साथ उभरा है।

वर्ष 1983 में प्रकाशित उल्लेखनीय भारतीय कविताओं का यह संकलन सुधी पाठकों को समर्पित करते हुए एक ओर उल्लास का अनुभव हो रहा है, तो दूसरी ओर यह पाकर मन अत्यधिक उदास है कि इसमें संकलित हिन्दी के दो कवि हमसे विदा हो गये—विजयदेव नारायण साही और भवानी प्रसाद मिश्र। ये दो कवि अपने-अपने क्षेत्रों में सिरमौर कवि रहे हैं। इनकी कविता अविस्मरणीय है। क्या हम भूल सकेंगे भवानी भाई की यह मार्मिकता—

होना तो उनका है
जो चुप हैं
जैसे बीज
माटी के भीतर का

—होना तो उनका है (हिन्दी) : भवानी प्रसाद मिश्र

हमें पूरा विश्वास है कि प्रस्तुत संकलन भारतीयता और भारतीय कविता की सही-सही पहचान आंकने में उपयोगी सिद्ध होगा। 'भारतीय कविताएँ : 1983' के प्रकाशन में जो विलम्ब हुआ, उसका हमें खेद है। किन्तु पूरी तरह प्रयत्नशील रहते हुए भी हम इस विलम्ब को टाल नहीं पाये। सभी भाषाओं से कविता-चयन और फिर उनका हिन्दी में रूपान्तरण, सभी सहयोगी साहित्यकारों के चित्रों एवं संक्षिप्त परिचयों का एकत्रीकरण—ये सब काम समयसाध्य सिद्ध हुए। योजना की रूपरेखा ही ऐसी है कि यदि किसी एक भी भाषा से, एक भी साहित्यकार से सहयोग मिलने में देर हो जाये तो हम संकलन प्रकाशित नहीं कर सकते। फिर इस दिशा में यह हमारा प्रथम प्रयास है और इसके संकटों से हम क्रमशः परिचित हुए हैं। आशा की जा सकती है कि आगामी संकलन आने में अधिक विलम्ब न हो।

हम चयन-मंडल के सभी सदस्यों, सहयोगी कवियों, अनुवादकों और उन पत्र-पत्रिकाओं आदि, जहाँ से ये कविताएँ ली गयी हैं, के प्रति हृदय से आभारी हैं। हमें प्रसन्नता है कि सहयोगी साहित्यकारों ने इस आयोजन में सोत्साह भाग लिया और काम आगे बढ़ाने में हमारी सहायता की।

इस चयनिका-क्रम के प्रति आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

—बालस्वरूप राही
सचिव, भारतीय ज्ञानपीठ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रम

असमी	कविता	नीलमणि फूकन	11
	पोलाकाटा : 5 जनवरी 1980	हरे कृष्ण डेका	13
	अरण्य में कबिरा फ़कीर	रफ़ीकुल हुसैन	15
	एक कविता	अनीस-उज़-ज़मान	17
	जरासंध समय की अन्ध सन्तान	रबीन्द्र सरकार	18
उड़िया	श्री राधा	रमाकान्त रथ	21
	महाभारत	जगन्नाथ प्रसाद दास	23
	शब्द	सीताकान्त महापात्र	25
	स्मरण-विस्मरण	सौभाग्यकुमार मिश्र	27
	जाने वाला	राजेन्द्र किशोर पण्डा	29
उर्दू	एक दोस्त की याद में	'शहरयार'	33
	एक नज़्म	निदा फ़ाज़ली	34
	पुल	अमीक़ हनफ़ी	35
	परिन्दों भरा आसमान	बलराज कोमल	36
	नागफनी	क़ाज़ी सलीम	38
कन्नड़	पुरुषार्थ	सिद्धलिंगय्या	43
	कोई भी आये···	एच. एस. लक्ष्मीनारायण भट्ट	44
	खो गयी हैं माताएँ	एच. एस. शिवप्रकाश	47
	पहले कभी···	के. एस. नरसिंह स्वामी	49
	जन हत्या असम में	गोपाल कृष्ण अडिग	51
कश्मीरी	बाँसुरी वादक	मोतीलाल 'साक़ी'	57
	बहते रहेंगे दरिया	सैयद रसूल पोम्पुर	58
	विश्वास	चमन लाल 'चमन'	60
	पाँच नदों का पानी	रहमान राही	63
	प्रेम कथा	दीनानाथ नादिम	67

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुजराती	ग़ज़ल	राजेन्द्र शुक्ल	73
	कल सूरज निकलेगा ही	चन्द्रकान्त शेठ	74
	कुआँ	शीतांशु यशश्चन्द्र	76
	नगर से निर्वासित नल राजा की स्वगतोक्ति	चिनु मोदी	80
	देट्स ऑल	लाभशंकर ठाकर	84
तमिल	कल, आज और कल	सिर्पि	93
	नमक कम	तमिलन्बन	98
	भूचाल गर्जन	पावण्णन	100
	समाज के असुर	एषिलमुदलवन	103
	कवि जब वैज्ञानिक बना	वैरमुत्तु	105
तेलुगु	कन्याकुमारी में अरुणोदय	एम. एस. एन. शास्त्री	109
	सागर का पुष्प	आचार्य तिरुमल	112
	बरस पड़ीं जो शिल्पाकृतियाँ	सी. नारायण रेड्डी	114
	आलोक किरण	दाशरथी	117
	नाख़ून के निशान	बोयि भीमन्ना	119
पंजाबी	देश प्रेम	लालसिंह 'दिल'	125
	पिघले हुए पल	हरभजन हलवारवी	126
	प्रवासी	अवतार	128
	इबारत एक पत्र की	सरोद सुदीप	130
	कब पता था	मंजीत टिवाणा	132
बांग्ला	सबके लिए	प्रणवेन्दु दासगुप्त	137
	भोर की मुखाकृति	सुनील गंगोपाध्याय	138
	स्मारक	शक्ति चट्टोपाध्याय	139
	भगवान	आलोक सरकार	140

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मराठी	वापसी	कुसुमाग्रज	145
	खेल	शरच्चन्द्र मुक्तिबोध	147
	अक्षर पत्थर ही बनते हैं	केशव मेश्राम	149
	पतझड़	द. भा. धामणस्कर	150
	घरघराहट	नारायण कुलकर्णी कवठेकर	151
मलयालम	त्रिपथगा	एन. वी. कृष्ण वारियर	157
	धरती के प्रति चरमगीत	ओ. एन. वी. कुरुप	162
	हवाना	के. अय्यप्प पणिक्कर	167
	कुरिंजि पुष्प	सुगत कुमारी	173
	युगलप्रसाद	विष्णु नारायण नंपूतिरि	175
संस्कृत	भारतवर्ष भूमि और पंजाब	अमीर चन्द शास्त्री	181
	मैं स्वतन्त्रता बोल रही हूँ	रमाकान्त शुक्ल	184
	वंशी विलास	सी. आर. स्वामीनाथन	188
	जयति मंगला संस्कृतवाणी	रुद्रदेव त्रिपाठी	193
	स्फुट पद्य	जगन्नाथ पाठक	195
सिन्धी	सिन्धी ग़ज़ल	नारायण श्याम	201
	सिन्धी ग़ज़ल	प्रभु वफ़ा	202
	मानव : एक द्वीप	रीटा शहाणी	204
	सिन्धी ग़ज़ल	एम. कमल	206
	रिश्ता अजनबीपन का	कृष्ण राही	207
हिन्दी	याद्दाश्त के सबब	नरेन्द्र मोहन	211
	चूज़े	अब्दुल बिस्मिल्लाह	213
	बनारस	केदार नाथ सिंह	215
	साँप काटे हुए भाई से	विजयदेव नारायण साही	218
	होना तो उनका है	भवानी प्रसाद मिश्र	221
	सहयोगी कवि : परिचय		223
	चयन-मण्डल : परिचय		262

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

असमी | नीलमणि फूकन
हरे कृष्ण डेका
रफ़ीकुल हुसैन
अनीस-उज़्-ज़मान
रवीन्द्र सरकार
(रूपान्तर : पुलिनबिहारी बड़ठाकुर)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कविता

—नीलमणि फूकन

घट सकता है यह आज रात
किसी भी क्षण
कहीं भी ।

मेरे सारे श्रम की व्यर्थता
बार-बार प्रमाणित होते रहने पर भी
कुछ नहीं सीखा मैंने
फिर भी मैं दिए ही जाता हूँ सभी कुछ
और बदले में पाता हूँ
एक और अन्तर्दाही दिन जिसकी माँग
बढ़ती ही जाती है ।

फिर भी पता है मुझे
मेरे लिए नहीं है एकान्तवास
मेरे लिए नहीं है एकाकीपन का विलास
न ही मेरे लिए है नीलिमाओं के अपार विस्तार में
प्रेम-पण्डुकों की कुण्ठित उड़ान ।

घट सकता है यह आज रात
और यदि घट ही जाता है
तो नहीं जानता मैं क्या करना होगा
और न ही पता मुझे कि क्या कहा था तुमसे
क्षण-भर पहले ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह दुर्बोध अग्निकुण्ड
भयावह रात का
तुम्हारी चुप्पी सुलगा सकती है
कहीं भी
किसी भी क्षण ।

और मेरे आंसू ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पोलाकाटा : 5 जनवरी 1980

(साम्प्रदायिक हिंसा का शिकार दक्षिण कामरूप का एक गाँव)

—हरे कृष्ण डेका

गाँव के संकरे मार्गों पर चलते हुए
पोलाकाटा के स्त्री-पुरुष
भटक गये मार्ग से : सही या ग़लत ।

दूर बहुत दूर आकाश में
एक बौखलाया-सा लाल अश्व सरपट चला जाता हो जैसे
लगता है उन्हें यही
उनके घरों
और लक्ष्मी नदी की लहरों में पड़ते उनके प्रतिबिम्बों को
चाटती हुई लपटों की जिह्वाओं में
(माघ बिहु[1] की लपटों के लिए पूर्वाभ्यास ?)

गाँव की सड़कों पर नये चेहरे
नहीं जानते वे कि वे कौन हैं
और झुलसे हुए धान के खेतों में
ढँप चुकी हैं सारी पगडण्डियाँ
जहाँ कभी विचरता था मनुष्य ।

---

1. आग के चारों ओर आमोद-प्रमोद करते मनाया जाने वाला असमी उत्सव

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गीदड़ लौट गये बिलों में लज्जित होकर
अन्य जानवर भाग गये दूर, बहुत दूर।
फिर कौन हैं वे
जिनकी चीख़ें गूँज रही हैं गाँव की हवा में?

आह! रक्तवर्णी अश्व
जो कभी सरपट दौड़ा था आकाशगंगा में
वीरान सड़क पर पड़ा है संज्ञाहीन।
लगता है लक्ष्मी नदी की ख़ूनी धाराएँ
उसके ऊपर से गुज़र गयीं!

संभव है सोख लें
समय की सुहावनी हवाएँ
आज की शोकाकुल स्मृतियाँ।
विस्मृति फैला सकती है अपना इन्द्रजाल
पोलाकाटा के स्त्री-पुरुषों पर।

किन्तु किसे पड़ी है रोकने की
यह पागलपन
आज?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अरण्य में कबिरा फ़कीर

—रफ़ीकुल हुसैन

राख और धुएँ भरे
इस अरण्य-पथ में
ओ कबिरा फ़कीर
क्या खोज रहे हो तुम
हाथों में लिये मुश्किलासान का टिमटिमाता दीया[1] ?

क्या तुमने पा लिया बहुत पहले खोया अपना वह बच्चा
तरबूज़ के पत्तों के बीच से
झाँकते जिसके नक्षत्र-नयन से
झरते हैं वंशी-स्वर
वह नारी जिसकी माँग में महकते थे बेल-फूल
और वह कोल्हू के बैल-सा बलिष्ठ तन
कल यहीं था नृत्यरत
हाथों में लिये कटा मुण्ड
माँगता हुआ एक कटोरा शीतल जल

माटी की गन्ध बसी अब तक अन्तर्मन में
अधबुना कशीदा करघे पर
अपनी नन्हीं-सी कुटिया के आसपास के गोधूलि-पुष्प
तुलसी के बिरवा-तले टिमटिमाता दीप

---

1. लहसुन के तेल से जलने वाला त्रिमुखी दीप जिसके एक मुख में शिखा जलती है, दूसरे में काजल बनता है और तीसरे में पैसे चढ़ाये जाते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छोड़ आये तुम
ओ कबिरा फ़कीर
लहसुन का तेल
गंजती अज़ान
कुटिया की राख
पेचीदा राहों पर किस कोने में ?

कहाँ है नदी और तुम्हारी रक्षित नौका का पाल
ओ कबिरा फ़कीर
टिमटिमाते मुश्किलासान दीये के सहारे
धुएँ भरे वन-पथ पर और कितनी लम्बी है तुम्हारी यात्रा ?
सामने लहलहाता गेहूँ का खेत
क्या यह देगा जन्म एक और शिशु को
···एक ज्योति-किरण ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक कविता

—अनीस-उज़्-ज़मान

हुर्र, हुर्र, हुर्र
पानी पाताल में है या नहीं
घूरो क्यों बेबस
इस खेत को ?

सुन नहीं पाते क्या
वर्षा बुलाती है
दूरस्थ पहाड़ी के निर्झर को

भूलो मत, तुमने ही खो दिया स्वयं को
इस बंसवार के सूखे पत्तों में

भूलो मत,
चटियाना वृक्ष के हरे घने पत्तों के झुण्ड में
हो गयीं विलीन
पीढ़ियाँ तुम्हारी असंख्य

भूल कहाँ सकते हो तुम यह अनजान सुन्दर धरती
गुँजित जो करती है तुम्हारी मौसी चम्पा के शोकाकुल गीत !

नहीं पता, दूर नहीं अब सावन
लाएगा अपने संग आशा-किरण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जरासंध समय की अन्ध सन्तान

—रवीन्द्र सरकार

उछलता-कूदता
कौन पुकारता है मुझे
इस भोर के झुटपुटे में
कहाँ गयी वर्षा की सघन गर्भवती मेघमाल
इस उर्वर धरती का जीवन-संवेद

नष्ट देश
तुम हो अन्ध सन्तान जरासंध समय की
किन्तु भूल कर पथ
भटक गये किसी वीरान जंगल में

आँखें तुम्हारी तो चिपकी हैं
दूर आकाश से
शस्य श्यामल इस प्रान्तर को लील कर
बहती है रक्त-नदी
तिरती है जहाँ नाव मृत्यु की

निविड़ रात्रि के अँधेरे को भेदते
बाहर निकल पड़ते हो
साँस रोके
देखते अपना ही प्रतिबिम्ब उस रक्त-सरोवर में
—रचना जो तुम्हारी ही—
पाते हो वीभत्स आनन्द तुम

ओ जरासंध समय की
सत्य-भ्रष्ट नष्ट सन्तान

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उड़िया	रमाकान्त रथ
	डॉ० जगन्नाथ प्रसाद दास
	डॉ० सीताकान्त महापात्र
	डॉ० सौभाग्य कुमार मिश्र
	राजेन्द्र किशोर पंडा
	(रूपान्तर—राजेन्द्र प्रसाद मिश्र)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्री राधा

—रमाकान्त रथ

कहाँ जाऊँ ? हर जगह
मेरे खड़े होने का स्थान रेखांकित दिखता है
अँधेरे में छुपने का स्थान दिख जाता है
अँधेरे में छुपने की बात सोचते ही।

पेड़ के नीचे से गुजरने पर
पत्तों की फुसफुसाहट सुनता हूँ…
उठकर कोई गया ही होता है कि
पुनः कोई आ पहुँचता है।

एक पक्षी मेरे सिर को लगभग छूता हुआ
पुनः ऊपर उड़ जाता है,
तालियों की गड़गड़ाहट से रात की
निर्जनता फटने लगती है

तारों से क्या कहूँ ?
मैं तो उनके उत्तर का
हर शब्द पहले से जानता हूँ,
चुप रहने पर भी छुटकारा कहाँ ?
सुनता रहूँगा सुनने की बातें
हवा से।

मेरा भाग्य मेरा अपना है
कुछ दिनों तक मैं यह सोचा करता था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भला मैं कैसे जानता कि उसे भी संसार
अपनी किसी सूची में जोड़ लेगा ?

मृत्यु के आतंक से भी भयावह आतंक में
मैं स्वयं कूद जाता हूँ, दौड़ जाता हूँ अपने अतीत में
जब लगता था कि तुम जन्मे हो
सिर्फ़ मुझे ढूँढ़ने और मुझे पाने के लिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

महाभारत

—जगन्नाथ प्रसाद दास

छद्मवेश धारण किये आजीवन
अज्ञातवास में रहा नहीं जाता
लौटकर पुनः आना होता है
अपनी-अपनी कर्मभूमि में

तटस्थ रहना संभव नहीं
क्योंकि यहाँ युद्ध अनिवार्य है
और सबको
एक न एक पक्ष लेना ही होगा

यहाँ जीवन के महाकाव्य में
सब कुछ लिपिबद्ध है
साम्राज्य और क्षमता के लिए
चुनाव के पाँसे
भूमिहीनों के लिए भूमि-सुधार अधिनियम
सूच्यग्र परिमित मेदिनी
हरिजन बस्ती के लाक्षागृह
खेत और कारख़ाने का रणक्षेत्र
अभाव और दारिद्र्य का व्यूह
विरोधी दलों का अचूक ब्रह्मास्त्र
एवं निम्न वर्गों की
विवस्त्र असहायता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोई नैतिकता नहीं
कूटनीति के विचार-विमर्श में
वृद्ध माँग लेते हैं
यौवन का उत्तराधिकार
मान-सम्मान समर्पित हो जाता है
अनुचित प्रतिश्रुतियों को पूरा करने में
सतीत्व विभाजित हो जाता है
यहाँ कामान्धता सर्वस्वीकृत है
नारी मात्र एक गर्भाशय है
साक्षी अन्धा हो जाता है
बलात्कार और अपहरण
दैनंदिन की घटनाएँ
तथा पराक्रम ही अधिकार है

प्रतिदिन के धर्म क्षेत्र में
सायरन की शंख-ध्वनि
युद्ध प्रारम्भ होने की सूचना देती है
सूर्यास्त उसका अन्त नहीं
बल्कि पुनः युद्ध की तैयारी है
इस युद्ध का कोई विधि-विधान नहीं
केवल पराजित होना ही अधर्म है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शब्द

—डॉ० सीताकान्त महापात्र

नहीं मालूम मुझे
किस अबूझ भाषा में
देवी-देवता आपस में बातचीत करते हैं
गोपनीय गूढ़ रहस्य, जीवन और मृत्यु, साँझ या सवेरा
नहीं मालूम वह कौन-सी व्यग्र शब्दलिपि है
जिससे ऋषि-मुनि प्रबोधन देते हैं
अपनी अमर आत्मा को
दु:ख-शोक, हँसी-रुलायी की परिधि से बाहर।

नहीं मालूम वह निर्लिप्त स्वर
जिससे चातक बुलाता है बादलों को
तारा बुलाता है झिलमिल करती ओस की बूंदों को
आत्मा बुलाती है रक्तमांस के शरीर को
शब्दहीन क्षणों में, दिन-प्रति-दिन, जन्म-प्रति-जन्म
धूलि-धूसरित हज़ारों शब्दों की ओट से।

मेरे शब्द में अनन्तकाल से मिले रहते हैं
अनगिनत कामनाएँ और दु:ख के तीव्र कोलाहल
मेरी भाषा में पड़ी रहती हैं
सभी छोटी-छोटी आशाएं और आकांक्षाएँ
व्याप्त दु:ख की तरह, मध्यवित्त परिवार
असीम अशान्त और क्षोभ की तरह
तारे-बुझे आकाश में गुनगुनाहट भरी स्मृति का सवेरा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरी भाषा दादी माँ का पानदान है सात पुश्तों का
अंगुलियों का चूना लगते-लगते
अँधेरे में, यातना में, विषाद में,
आत्मा की तरह, आशा की तरह, मन्त्र की तरह
सफ़ेद झक्क दिखता है
मेरे शब्द में पूर्वजों की सभी आशाएँ, सारी रुलायी
हुंकार और रिरियाहट, टपटपाहट, गुनगुनाहट,
स्मित हँसी, थमी सांस की धड़कनें
समुद्र में नदी के साथ मिलती हैं।

मेरा शब्द तो अन्तिम वसन्त की
अप्रतिभ कोयल की खो रही अधमरी कूक है
मेरी भाषा तो गूँगे-बहरे शिशु का
सूर्य-दग्ध मिट्टी में ख़ुद को रोपकर
देवताओं के अज्ञात वैकुण्ठ की ओर
अनन्तकाल से फैला हाथ है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्मरण विस्मरण

—डॉ० सौभाग्य कुमार मिश्र

मैं जानता था तुम्हें ऐसे ही भूल जाऊँगा,
यह वक़्त अचानक आ जायेगा
हाड़ मांस रक्त में
एक दूसरा देश जाग उठेगा,
मेरे सारे पाप
एक-एक करके गिरने लगेंगे
विद्रोहियों की गोली से।

वे सारी दूरियाँ तुमने गढ़ी थीं
अनायास ही। दरवाज़े की फांक से मेरा
ससर-पसर होकर आना देखते समय।
अब वन, समुद्र, उजड़ा जीर्ण-शीर्ण मकान
अन्य अनेक लालसा की सीमाएं हैं।
तुम क्षमा नहीं कर सकते, न करो,
तुम्हारा विस्मरण मेरे लिए
कदम्ब के नीचे गर्मी की दुपहरी है।

दोनों ने मिलकर तो अनेक खेल खेले थे
अब, जब कहीं कोई न होगा,
तुम पीछे से चोर की तरह चुपचाप आकर
मेरी आँखें मूँद दोगे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आँखें अच्छी तरह देखने से पहले
मेरे दोनों हाथों में दो हाथ,
दो वसन्त ऋतुएँ—एक जन्म के समय की,
दूसरी तुमसे हार जाने की।

कोई नहीं जीता, नहीं जीत सका;
वन में घुसकर छिपी हुई छाया
न तुम हो, न मैं हूँ
पानी के अन्दर फेन के नीचे तैरते आश्वासन
टूटे खण्डहरों में गूँजती आवाज़ें
न तुम्हारे लिए हैं, न मेरे लिए
मैं जानता था तुम्हें यों ही आसानी से भूल जाऊँगा
और इस तरह एक बार याद भी करूँगा

दूसरे काम से कमरे से बाहर निकलने से पहले
क़मीज़ के बटन लगाते समय
नज़दीक कोई नहीं होगा, जकड़ लूँगा तुम्हें
अपने सारे पापों के उष्ण आलिंगन में।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जानेवाला

—राजेन्द्र किशोर पंडा

जानेवाला उठता है, चला जाता है
शुभ घड़ी नहीं ढूँढ़ता
अनुकूल संकेत नहीं चाहता
किसी जोगिन की परवाह नहीं करता
उठता है और चल देता है, बस।

मार्ग अमार्ग, गम्य अगम्य नहीं समझता;
अपने क़दमों को, डगों को लाँघ जाता है
अपने मन को, कल्पना को पार कर जाता है।
ऐसा कोई समय नहीं जब
ऐसा कोई स्थान नहीं जहाँ
वह न पहुँचता हो निरन्तर।

घातक से मित्रता, ऋषि से अभिमान
ग्वालिन से प्रीत, रानी से गार्हस्थ्य,
पुत्र से प्रतिद्वन्द्व, योद्धा से झूठेखेल
मंज़िल से लुका-छिपी
सब कुछ बेरोक-टोक चलता रहता है।

कोई अभिवादन नहीं करता जानेवाला
न मिलने पर, न बिछुड़ने पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जानेवाला रहता है
काष्ठ-मूर्त्ति-सा विराजमान
यात्राएँ उस तक पहुँचती हैं
स्थान, काल घिर आते हैं
उस पर छा जाते हैं
और अगले ही पल लौट आते हैं।

यान वाहन नक्शा सारणी प्रत्याशा परिणति
हर चीज से बेख़बर है वह
उसके लिए जाना जो है, रहना वही है
प्रत्येक क्रिया पद में वह सक्रिय रहता है
हर पल गतिशील रहता है।

जानेवाले से नहीं पूछा जाता
कहाँ से आये हो कहाँ जाना है
वाक्य उसकी ज़िन्दगी के
भरे रहे चमत्कारपूर्ण अव्यय से।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उर्दू | शहरयार
निदा फ़ाज़ली
अमीक़ हनफ़ी
बलराज कोमल
क़ाज़ी सलीम
(लिप्यन्तर—डॉ० गोपीचन्द नारंग)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक दोस्त की याद में

—शहरयार

तुम्हारी हिजरत[1] के सारे मौसम गुज़र चुके हैं
यहाँ से आगे की मंज़िलों का ख़याल छोड़ो
ये मुल्ज़िमों-से सजे कटहरे
किसी नुमाइश के वास्ते हैं
यही बहुत है
सरों पे नफ़रत भरी हवाओं के साइबां हैं
कि आज सूरज की ज़र्द आँखों में ख़ून-सा है
यहाँ से आगे जो मोड़ आए
वहीं पे ख़ैमों को गाड़ देना
वहीं पे चीलें तुम्हें मिलेंगी
वहीं पे तुम लोग च्यूँटियों की ग़िज़ा बनोगे
वहाँ से आगे न बढ़ सकोगे
कि इस की ख़ुशबू की धुन्ध सिम्तों पे छा गयी है

1. प्रवास

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक नज़्म

—निदा फ़ाज़ली

यही ज़मीं जो कहीं धूप है कहीं साया
यही ज़मीन जो तुम भी
यही ज़मीं मैं भी
यही ज़मीन हक़ीक़त है, इस ज़मीं के सिवा
कहीं भी कुछ नहीं
बीनाईयों[1] का धोखा है
वह आसमान जो हर दस्तरस[2] से बाहिर है
तुम्हारी आँखों में हो
या मेरी निगाहों में
दिखाई देता है लेकिन कभी नहीं मिलता
यही ज़मीन सफ़र है
यही ज़मीं मंज़िल
न मैं तलाश करूँ तुम में
जो नहीं हो तुम
न तुम तलाश करो मुझमें
जो नहीं हूँ मैं

1. दृष्टियों, 2. पहुँच

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुल

—अमीक़ हनफ़ी

बड़ी मुद्दतों में मिरे सहन की मीठी नीम एकदम गूंज उठी
हरी पत्तियों में कोई बाजा बजा
कोई सुर पिघल कर हवाओं में बहने लगा
बड़ी मुद्दतों में दरख़्त आज फिर मुझ से कुछ कहने-सुनने लगा
कोई सुर पिघल कर हवाओं में बहने लगा
मैं तब्दील होने लगा
लगा रेल की सीटी सुन कर कोई लोमड़ी चीख़ती हो
लगा हार्न सुनकर के कुत्तों का दल भौंकता हो
लगा कारख़ानों के भोंपू गधों की तरह रेंगते हों
लगा जैसे प्रेशर कुकर में ग़िज़ाओं[1] का दम घुट रहा हो
लगा जैसे छत पर चढ़ा तेज पंखा बहुत देर से
बड़बड़ाता चला जा रहा हो
अगर कोई सुर में है तो बस वही तन्हा बुलबुल
कि जिसने ज़रा देर को नीम की डालियों को चमनज़ार[2]
ख़य्याम नशापुरी का बना कर
मुझे अपनी पत्थर चुगी आत्मा से मुलाक़ात का
फिर से मौक़ा दिया है

---

1. भोजन, 2. उपवन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परिन्दों भरा आसमान

—बलराज कोमल

लोग कहते हैं
आवाज़ का
एक चहरा भी होता है
अन्दाज़ भी, जिस्म भी
सुर्ख़ सूरज का सोना
दरख्तों के उस पार
महताब[1] की सीमगूँ मौजे-उर्यां[2]
समन्दर की आवेज़शों[3] का
पुर इसरार नग़मा[4]
मोहब्बत की लज़्ज़त[5] की गर्मी
कभी शबनमी नन्हीं-मुन्नी-सी लोरी
कहानी
सियाहकार शब[6] में
कोई ख़ूनआलूदा बाबे-अदावत
मक़ाफ़ात का सिलसिला[7]
दिल की वीरानियों से गुज़रता हुआ
कोई हर्फ़े-मलामत, नदामत[8]

---

1. चांद, 2. रूपहली, नग्न लहर, 3. उतार-चढ़ाव, 4. रहस्यपूर्ण गीत, 5. आनन्द, 6. गुनाहों भरी रात, रक्तरंजित शत्रुता का परिच्छेद, 7. प्रतिकार का क्रम, 8. निन्दा एवं पश्चाताप के शब्द।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हजूमे-नक़ूशे-फ़रावां का हंगाम[1]
मैं याद करता हूँ
मैं याद आता हूँ
आवाज़ चहरा हसीं जिस्म
सब ज़ाविए,[2] दायरे[3] और क़ौसे[4]
शबो-रोज़[5]
रफ़्तार की आग में
मौज-दर-मौज[6] बहती हुई रागिनी
दूर की वादियों में
सरे-शाम
दम तोड़ती रोशनी
नग़मगी, रोशनी नग़मगी
तीरगी,[7] बेबसी, ख़ामशी
रंगो-ख़ुशबू से सरशार[8]
सदियों पुरानी ज़मीन
दूर जाता हुआ कारवां

जिस्म आवाज़ का वहशिये-वेज़बां[9]
इक जुनूँ एक माकूस बरहम[10] सकूं
ज़ेरो बम, ज़ेरो बम[11]
इज़्तिराब, इज़्तिराब[12]
अजनबी मौसमों का जहाँ
फ़ासलों, सरहदों से परे
वसअतों में परअफ़शां[13]
परिन्दों भरा नीलगूं, बेकरां, नीलगूं आस्मां[14]

---

1. प्रतिबिम्बों के विशाल समूह का समय, 2. कोण, 3. वृत्त, 4. चापें, 5. दिन-रात, 6. लहर-पे-लहर, 7. अन्धकार, 8. मुग्ध, 9. मूक बर्बर, 10. एक उन्माद, एक क्रुद्ध परिवर्तित ख़ामोशी, 11. उतार-चढ़ाव, 12. बेचैनी, 13. विस्तार में पंखों की ज्योति फैलाता हुआ, 14. नीला विशाल आसमान।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नागफनी

—क़ाज़ी सलीम

(फिलिस्तिनी मुजाहिदों के लिए)

कोख सेहरा[1] की कितनी हरी है
हर तरफ कैक्टस के उभरते हुए हाथ
हाथों में
काँटों भरी उँगलियाँ
फूटते अनगिनत हाथ
हाथों में
काँटों भरी उँगलियाँ

क्या तुमने देखे हैं
वे पेड़ जो बेज़मीं हैं
अपने ही जिस्म में दौड़ती
बेमहाबा[2] जड़ें ।
पत्थरों की रगें
जानती हैं
रोईदगी[3] के ख़ज़ाने
शहीदों के ख़ज़ाने
शहीदों के ख़ूं में
छुपे बारूदख़ाने

---

1. मरुस्थल, 2. निःसंकोच, 3. वनस्पति,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऐ ख़ुदा
हिजरतों की घड़ी[1] है
सरज़मीं तेरे वादे की
शायद क़रीब आ चुकी है

कोई जी कर दिखाये
मौत पर फ़तेह पाने के अरमान में
ये तो तेरा करम है
रेत का दूध उतरा है
बगूलों के पिस्तान[2] में

कीनापरवर[3] हवाओं की साज़िश को
सब जानते हैं
शायद इसी वास्ते
आज इतना लहू जिस्म में जोड़ रक्खा है
जो चीरो तो रस ज़िंदगानी का
टप टप गिरे

काटते जाओ
काँटों भरी उँगलियों से
जिस्म सालम उभर आएँगे
जिस्म से फूटते
अनगिनत हाथ
हाथों में
काँटों भरी उँगलियाँ

---

1. प्रस्थान-समय, 2. स्तन, 3. प्रतिकारी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कन्नड़	सिद्धलिंगय्या
	एन० एस० लक्ष्मीनारायण भट्ट
	एच० एस० शिवप्रकाश
	के० एस० नरसिंह स्वामी
	गोपाल कृष्ण अडिग
	(रूपान्तर—प्रधान गुरुदत्त)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुरुषार्थ

—सिद्धलिंगय्या

घर की छत पर बैठे हैं ये जो बुज़ुर्ग
थके-मांदे हैं जले जाकर आग में प्रेम की
उभरे वक्ष, लाल होंठ और चमक में आँखों की
परख अर्थ जीवन का, हुए हैं आप रोशन।

उगायी है लता इन्होंने जहाँ-तहाँ मल्लिका की
सतायी हैं कमलिनियाँ दिखाई पड़ीं जहाँ;
पास लाकर होंठों को, ऊँचा उठा प्रीति को
शर्मा दिया है इन्होंने आसमान को।

नाच में दिन-रात के, कल-कल में नदियों के
हिनहिनाहट में घोड़ों की, थी ख़ूबी कोई;
छोटी-सी झोंपड़ी में तन अपना बेचती उस
औरत के संकट में थी गहराई कोई।

दाह देह का मिटाया जिसने सामने भगवान के
देवदासी की उस संतान की क्या हालत है हुई ?
धिक्कार कर भगवान को, रख भरोसा मानवता में
बन चले हैं वे रईसों की छाती में चुभते काँटे कई।

बन स्वयं राजा-रानी राज्य में नंगेपन के
चलाये हैं इन्होंने कारोबार उन गन्धर्वों के;
है नहीं जात-पांत की तनिक भी ख़बर उस
कोमला को, सोई है जो आग़ोश में गरम।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोई भी आये, होगा क्या उससे ?

—एन० एस० लक्ष्मीनारायण भट्ट

"बरस हुए क्या साठ आपको"—यह सवाल जब
लगा कान को ऐसे कि "वक़्त हुआ क्या आने का ?"
—तो दिल ही दिल काँप गया मैं थोड़ा-सा
कौन था वह, पूछा था जिसने यह सवाल ?
दामाद था क्या वह, रहा जो साथ में ?
या बेटा या दोस्त उसका, जो करता रहता है
आवारागर्दी हमेशा बहाने सिनेमा के, रेस के,
कार के और बार के ?
जाने पूछा था क्या उन्होंने ?
पूछा भी क्योंकर उन्होंने ?
देख मेरी यह ख़ुशमिज़ाजी
तारीफ़ में उसकी, पूछा भी होगा।
जाने कौन ?
बोले भी होंगे लड़के ये पागल मारे जलन के।

सोचा होगा शायद कि आयेगा कोई क्योंकर।
कोई भी आये, उनको है कहाँ भय किसी का ?
झूल रही है छाया फाँसी के उन सैकड़ों फन्दों की,
जिस को ले आये हैं आनेवाले यहाँ ऋण के रूप में।
यह रही माँ जिसने सिखाया देखना सपने; और रहा
वह बाप जिसकी मियाद सपने देखने को
हो गयी है पूरी; कहूँ क्या उसके बारे में—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हाथ पकड़कर आयी मेरी उस आँख के तारे के बारे में—
जो माप-तौलकर मेरे क़द को, हिसाबों में अपने,
नीलाम कर देती है मुझको चौराहे पर
भरे बाज़ार के बीच—ऐसी माया है वह।
जला दिया उसने मुझको उबलते घी के समान
जिसको न उगलते बनता है, न निगलते।
मिठाई से बाल-बच्चे और कठार जैसे रिश्तेदार कई,
पास-पड़ोस में पैदा हुए कितने ही दोस्त पटाखे के
—पाला पड़ा है इन सबसे वृत्ति व प्रवृत्ति के कारण।
हट गया कोहरा सवेरे का और बढ़ चला दोपहर उद्रिक्त ?
तो निकल आयीं सच्चाई की कठोर दाढ़ें
उसी मुख में जहाँ खेल रहा था सपना।

माह भर की ज़िन्दगी अब बन चली है बासी
कल थी नक़ल परसों की, आज है कल की;
कल भी होगा आज की कार्बन कापी।
इस ज़िन्दगी में जो उलझी है तर्क में, गणित में
और जाल में अंकों के—मैं हूँ इक पापी जिसको
मिला नहीं है सुख।

इन सबसे हो अतीत और पार कर तारों को
स्थित हैं जो अनन्त, मिल रहा है उसकी ओर से
निमन्त्रण बूँद-बूँद के रूप में
चोरी-चोरी पगों से आये काम के बिलाव ने
अंधेरे में खाकर उगला था जीवन के जिस अवशेष को
हुआ अनिरीक्षित रूप से सिंचन अमृत का उसके ऊपर।

हालत ऐसी है जब,
कोई भी आये, होगा क्या उससे ?
आने का यदि दें निमन्त्रण, तो भी
कोई चिन्ता नहीं मुझको।
छुए मुझको आकर, छुड़वा दे छूकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कलइयों के उस ढेर को, बन्द है जो
पिंजड़े में छोटे-से।
उड़ने दें पंछी को गगन में,
सुख से हो भरपूर तैरने दें सागर में उजाले के।
दूर आप दीखते मोती जैसे और धरते धीरे-धीरे
रूप अणु का और बन जाते अन्त में आप गगन
उस ठौर पर जो दिखाई देता नहीं आँखों को।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खो गयी हैं माताएँ

—एच०एस०शिवप्रकाश

निकला है यह विज्ञापन बालकों की ओर से
रेडियों में, समाचार पत्रों में, टी० वी० में और
सिनेमा में : "खो गयी हैं माताएँ।"
तोड़-ताड़ कर पालने को सोपानों पर
बच्चों को फेंक फाँक कर रास्ते के पार,
निकल गयी हैं पहुँच से कहीं बाहर
न रहीं अब वे माताएँ कर गयी हैं सीमोल्लंघन
रास्ते पर जहाँ सब मिल पाते हैं या
बैंक में जो हैं प्रसूतिघर चेकों के लिए
या शालाओं में जहाँ तुतलाये जाते हैं अक्षर,
पंगु-घण्टों में और नटखट लम्हों में
और छिन में आप बन युग भी और जग भी,
और वहाँ भी जहाँ हो रही हो वर्षा घनघोर
और उस सर्दी में जो ला रही हो जलन का—
अनुभव ठण्ड की अपनी तीव्रता से,
और उस ठौर पर जहाँ धरती फट गयी हो,
उन दुकानों में जहाँ शोरगुल मचा रहता है शाम को
आजों के विगत दिनों में, और विगत दिनों के
अनागत दिनों में, है और नहीं के बीच के ट्रैफ़िक में
खो गयी हैं माताएँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है नहीं ऐसी कोई, पिलाती हो कॉफ़ी उदीयमान चाँदों को
है नहीं ऐसी कोई, कराती हो अभ्यंजन उदीयमान सूर्यों को ?
हे बहिनो, माँओ और पिताओ,
मिलकर भी न मिलनेवाली प्रेयसियो,
किसी साबुन की बड़ी ही सुहसित मुस्कान के बहाने
द्वेष हमारे ऊपर साधने वाली हे तारिकाओ,
आप सबको जोड़ लेने पर भी, छोड़ देने पर भी
गुणन या विभाजन करने पर भी मिलती नहीं
—खो गयी हैं माताएँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पहले कभी···

—के० एस० नरसिंह स्वामी

यों देख मुझको पहले कभी की थी तुमने
कहीं बातचीत मुझसे, हे मेरी प्रियतमा ?
पकड़ हाथ चले हैं जीवन-भर हम दोनों;
आँखें तरेती हो क्योंकर यों क्रोध में ?

बहुत दिनों का प्रेम था फैला पूर्णिमा जैसा
निकल चला मैं पकड़ने उन तारों को;
मारे क्रोध के तुमने चूम लिया आँखों को
बार-बार जब, जाग तब मुस्कुरा पड़ा मैं ।

देख रही हो क्योंकर यों पीठ की ओर मेरी,
ढो सकता हूँ वे चीज़ें सारो तुम्हारी ।
खुला है सागर और नैया भी तैयार,
पहुँच सकते हैं तीरों पर कई और ।

देख सकते हैं हम निराकार में ही,
साकार की सृष्टि दुनिया-भर में ;
जानता नहीं, है कहाँ संतोष दुखविहीन ?
पूर्ण बिम्ब कोई हो सकता है कहानी मनगढ़ंत ।

है नहीं कोई गिनती हमारी हँसी की,
है नहीं लेखा उसका दुकान में भी सेठ की ;

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है नहीं अब घर में तूफ़ान भी अँधाधुन्ध :
जल रहा है दिया कमरे के भीतर।

स्वाँग भरा है कि जानता हूँ मैं तुमको
वहाँ तक जानती हो तुम भो मुझको।
बाधियों के बीच हँस पड़ा हूँ इतना
साथ तुम्हारे कि उड़ जाये छत घर की।

भले ही बाल हो जायें सफेद आ घेरता नहीं
बुढ़ापा हमको—मिली है यह ख़बर मुझको
अब दोस्तों से; मिल रहा है आशिष हमको—
जीवन बने ऐसे कि मिले हर्ष सबको उससे।

देखी हुई चीज़ें हैं कई, देखना है और बहुत;
हार-जीत के उस पार होता है सच्चा प्यार;
इन तस्वीरों के उस पार है इक और तस्वीर;
रंग-बिरंगी ज्योति का है वह इक फ़व्वारा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जनहत्या असम में

—गोपाल कृष्ण अडिग

चुनाव है सारभूत तत्त्व जनतन्त्र का;
समय समय पर उसको है चलाना—
वह भी जब ज़रूरत इसकी होती है
महसूस हुकूमत चलानेवाले प्रभुवर्ग को हमारे।
चुन-चुन कर गोली मार बन्दूक लाखों आप
चला रहे हैं मत अब मतपेटी में यमराज की।
आपत्कालीन समय में हुई थी दुर्घटना,
उससे क्षयमान हमारे संविधान को थी ज़रूरत
नये रक्तदान की। अनिवार्य है उसके लिए
रक्त-कण असमी शुनश्शेपों के—है यह
फ़ैसला अविचल कलजुग के हरिश्चन्द्रों का।
किसी की क्या परवाह—चुन-चुन कर काट फेंकने का
वह अधिकार है उत्तार बल, आप दिया हुआ
भवतारिणी को संविधान की ओर से अपने।
जनकोटि भी है भारत की पीड़ित भवरोग से।
अक्षरों के अनुक्रम में आता है असम पहले।
असमियों का है जो रोग, मिल रहा है उसको,
परिहार शस्त्र-क्रियाकर्म की 'वैकुण्ठ-समाराधना से,
चला रही है जिसको कारुण्यमयी महामायी
ख़ुद अपने ही हाथों से।

मत है बहुत ही मुख्य 'मत' से अतीतों को भी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बताइये न, कहा गया है यह कहाँ और किस—
संविधान में कि असमियों को ही है करना
मतदान असम में ? मनुजों के मत हैं मुख्य !
मत और मतान्तर की है न यहाँ गुंजाइश कोई।
करें यदि मतदान वहाँ लोग बंगला देश के, तो
उससे होगी ग़लती भी आख़िर क्या ? वे भी तो
हैं मनुज ही; हैं न वे भी मत-वाले आख़िर ?
इक तरह से देखें तो लगता है वही बेहतर :
मत से जो हैं अतीत, मिलेंगे उनको विदेशियों के
मत सारे के सारे; उगेगा नहीं क्या सींग इक और
सिर में परधर्म सहिष्णुता की अपनी संस्कृति के ?

या हज़ारों की संख्या में तैनात सशस्त्र पुलिस के
लोग ही यदि दस-आठ बार कर दें आप मतदान,
तो होगा कैसे आक्षेप इसके प्रति संविधान को ?
असम में है होना चुनाव अमुक तारीख़ के अन्दर—
उठते नहीं ये सवाल कि कौन, कहाँ, कैसे और
क्या आदि के—मन में गाँधीजी के उन वारिसों के,
मानते हैं जो कि मानव-समुदाय है एक और
मानव भी सिर्फ़ अपने को। लाखों की तादाद में
यदि मुँह की खानी पड़े असमियों को या जलकर
हो जाना पड़े राख, होगी कहीं गिनती उस बलिदान की ?
होगा कोई नुक़सान उनको ? मिलेगा उससे उनको
लाभ दुगुना अवश्य; जुड़ जाती है इक और शोभा
राजघराने के रत्न-खचित किरीट में रक्त-रत्न की।
साधित हो जाता है फल इक और दिग्विजय का
जनसंख्या नियन्त्रण के महासमर में।

मुख्य है समग्रता देश की; इस अर्थ है हमको
बनाना मज़बूत 'हाथ' को। होंगे नहीं मुख्य कोई और :
न मैं, न तुम, कदापि नहीं असमी कोई; 'हाथ' है—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुख्य, और जीतना है बना मुख्य बहुत ही फ़िलहाल;
बनता है इस अर्थ मारना, कार्य इक अनिवार्य !

जय हो सत्य की, जय हो अहिंसा की
जय हो भारत माता को, जय हो संविधान की
जिसने धोखा दे दिया है देकर हमको
परमाणु बम चुनाव का ।

यह क्या झूठ है कि तांत्रिक सभी बता गये थे
कि नृपालों के नरमंडल के रोग के अर्थ है
रामबाण बनती नरहत्या ? रक्तदान और रक्तपान
—मिला है आधुनिक आयुर्वेद को एक नया आयाम
—कायाकल्प के अर्थ ! होगा अवश्य ही आचन्द्रार्क
राजघराना अब हस्तिनावती का। वाह रे वाह,
है यह कैसा संविधान और कैसा कार्यविधान !
और कैसा मारणहोम और धूम भी कैसा, ख़ुशबू भरा !
भारतमाता गंधी को मिली है संतृप्ति कैसी
और आयी है उसमें उमंग भी कैसी ?

बचा न सके क्या विश्वामित्र भी तुम्हें, हे शुनश्शेप ?
उठ आयेगा नहीं क्या यज्ञकुण्ड से महर्षि देवरात ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कश्मीरी | मोतीलाल 'साक़ी'

सैयद रसूल 'पोम्पुर'

चमनलाल 'चमन'

रहमान राही

दीनानाथ नादिम

(रूपान्तर—शशिशेखर तोपखानी)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाँसुरी वादक

—मोतीलाल 'साक़ी'

बारूद के ढेर के साथ
पीठ टिकाकर बाँसुरी बजाने वाले !
तू तरंगायित करता जा
मल्हार के राग को
शायद नम हो जाएँ ओठ आकाश के
उम्र हो गयी हमें
धूप में दग्ध होते हुए अब तो।

बाँसुरी बजाने वाले !
हृदय अकुला रहा है
ज़रा-सी ठण्डी छाँह के लिए
जो कहीं नहीं—कहीं भी तो नहीं

बाँसुरी बजाने वाले !
देख अँधेरा अँगड़ाई ले रहा है
रोशनी के निमित्त
तू शुरू न कर बैठना
दीपक राग

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बहते रहेंगे दरिया

—सैयद रसूल 'पोम्पुर'

बचपन है दामन में लगी आग—
लोगों का कहना है
(जंगल की आग क्यों नहीं कहते उसे
जो लग जाये तो फिर बुझती ही नहीं ?)
ज्यों बिखरता है
पेड़ों की टहनियों को डुबाता हुआ
गरजते हुए पहाड़ी नद का वसन्तकालीन प्रवाह :
ऐसा है बचपन
कँटीली झड़ियों में उलझा
अग्नि का देवता !
न कोई मध्य, न आदि, न अन्त !

आग—
रुई में लगी शहतूत की लकड़ी-की-सी तेज़ आग
है बचपन—
हासिल : बस एक मुट्ठी राख !
नहीं, वह भी नहीं
(कोई चेहरे पर मले तो क्या ?)

बचपन है
घूम रही तलवार समय की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चंचल बच्चे के हाथ में एक पक्षी
जो उड़ जाता है एकाएक
और पंख फड़फड़ाने की आवाज़ तक नहीं होती

प्रेम में काँटे भी कपास लगते हैं
नदी के इन किनारों के हर पत्थर को
आँखों से भोगा है मैंने
वक्ष में वही निश्छल प्रेम लिये
आज मैं आया था
कि तुम्हें बस पी लूँ,
हाथों से टटोलूँ अमृत !

पोखर तक पहुँचा तो देखा
तुम्हारा घड़ा फूट गया था
और साक्षी थे केवल तुम्हारे
सुशीतल चरण
जो घाट की सीढ़ियों को
सौंपे जा चुके थे
लो, तुम्हारे फूटे घड़े के टुकड़े
इकट्ठे कर लाया हूँ
उठोगी नहीं ?
(या और ऊँचा तकिया लगा दूँ सोने के लिए ?)
घड़े फूटते ही रहेंगे
और दरिया बहते रहेंगे यथावत्

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विश्वास

—चमनलाल 'चमन'

मुझे विश्वास था कि
पिघलेंगे हिम के देवता
कोहरे की गुफाओं को कुरेदती हुई
आयेगी धूप
बादलों के घोड़ों पर
उतरेंगे आकाश के सम्राट्
और हमारे सोतों के जल से
पावन करेंगे अपनी आत्मा
गुलाब चूसने की लालसा में
उठेगी मदिरा-पात्रों में लपट
किवाड़ की कुआँरी चूलें
मन रखेंगी बारिश के क़तरों का
धूल भरे रास्तों पर शबनमी शीतलता
होगी धूलों के फ़ानूस लिये
उम्र-भर की कालिख-पुती दीवारों को
धो डालेंगी वर्षा की धाराएँ

अब भी धूप के चकत्ते देख
मुझे दामन में धधकती आग का भ्रम होता है
मैं स्वप्न-कक्षों में प्रवेश करने की नीयत से
सोया हूँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और चिनगारियाँ छिटकाने वाले हाथों से
वसन्त को लाने की सोच रहा हूँ
शिशिर की ठण्डी हवाओं के आगे
मैंने छोड़ दिया है अपना तन
और मरोड़ा है आषाढ़ की धूप की ऐंठ को

जाती हुई अबाबीलों को बुलाने के लिए
विदग्ध ओठों से गाया है गीत
आश्वस्त था मैं कि मेरे तलुओं की धूल से
भभक उठेगी आग
मेरी इच्छाओं की नदी में
आयेगा आलोक का उफान
ईश्वरत्व उमँग उठेगा मेरे आँगन में
और मेरी बीमार आँखों में
कौंध उठेंगी किरणें

मुझे विश्वास था—
और मुझे मेरे विश्वास ने लूट लिया।
जिन खिड़कियों से मैं करता था
वासन्ती हवा की प्रतीक्षा
कठिन माघ की धुन्ध ने
उनके गिर्द बुन लिया है झालर
सीख लिया है बर्फ़ की चट्टानों ने
मेरा रास्ता काटते हुए निकलना
चन्दन-वृक्ष में रहा नहीं अब वह असर
हवा के झोके
सोयी हुई नदियों में ज्वार लाये
और स्रोत से निकलते ही
पथरा गये जल-प्रपात
कालिखपुती दीवारों पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फैल गये मकड़ी के जाले
और नाव के सिरों पर
लटक गये हैं भँवरजाल

मेरे विश्वास के छज्जों को
उड़ा ले गये मेरे ही तूफ़ान
जिस पंखुड़ी का रस पी रही थी
रंगबिरंगी तितली
उससे अब चू पड़ता है बूँद-बूँद ज़हर
कोई भी स्थिति ऐसी नहीं
जिसे सहारा कहा जा सके
कोई आवाज़ ऐसी नहीं
जिससे सांसें मिलाकर
खोज ली जाये रात के स्वप्न-नगर की राह
ठण्डे सूरज का पथ ही छोटा पड़ गया है
कोई भी चेहरा ऐसा नहीं
जिस पर उभरेगा सूर्य

मेरी सरलता देखो—
मैं अब भी धूप की टेकरी पर
तलुओं की आग बुझाता हूँ
तूफ़ानी हवाओं में निकलता हूँ
टिमटिमाता दीया लेकर
और छायाओं के सामने आशा का दामन फैला
करता हूँ व्यर्थ प्रतीक्षा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पाँच नदों का पानी

—रहमात राही

हर दिन पहाड़ को चाट-चाट कर
शाम हुई।
हर दिन कहा शाम को उसने :
आँख अगर खोलोगे,
सुन पाओगे
कोह क़ाफ़[1] के इसी पार
परियों का गायन
और साज़ का पर्दा ही तब
रूप बदलकर राग बनेगा

शीतलता की जुही
गुल दोपहर खुले नंगेपन का—
पंखुरी-पंखुरी फूल नोंच डाले सब मैंने
लेकिन फिर भी नज़र न आयी जब वह ख़ुशबू
तब वह बोला :

---

1. सिसिफ़स के मिथक से साम्य रखने वाले एक कश्मीरी मिथक की ओर संकेत जिसमें दो पात्र दिन-भर क़ाफ़ पहाड़ को चाटते रहते है ताकि उस पार स्वर्ग दिखायी दे, लेकिन हर शाम को पहाड़ अपने पहले का-सा आकार ग्रहण कर लेता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कान रखोगे खुले अगर तुम,
देखोगे सुनहरी मछलियों को
सागर-तल में
नव-वसना

शीतल केशों में उँगलियाँ फेर
काँपते पोर तपे जब
फिर भी सुनी न जब मैंने
रक्त-नदी की चीख़
रगों में अपनी
कहा तब उसने :
गन्ध अगर ले पाओगे तो
छूते ही हिमपुंज
आग की लपट पियोगे

अपना ही यह जला-भुना उत्तप्त कलेजा चख कर
जब न गन्ध से महक उठी
वह राह मदभरी
तब वह बोला :
अगर जीभ का कोई काँटा
नश्तर-सा लग जाए ज़ख़्म की तह में
तो मरकत की उज्ज्वलता से ही छलकेगी
अमृत-जल की गन्ध !

और अन्त के बाद पुनः जो नूतन अन्त उभर कर आया
कहाँ ढूँढ़ पाया मैं उसमें
उसको जिसका कोई अन्त नहीं है ?
तभी कहा उसने फिर मुझसे :

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अरे ओस के कण !
किरण प्रफुल्लित कर देगी जब तन-मन
तब जानोगे—
और भेद करना तब
संभव हो न सकेगा

अन्धी राहों में भी बिल्कुल प्रकट बात यह :
पत्थर को उखाड़ कर है तलवार निकलती ।
अर्थ काव्य का,
नदिया का रहस्यमय उत्स फैलता ही है

पाँच नदों[1] का पानी तो आख़िर पानी है—
लहर-लहर से मिली
और मिलकर खो गयी भंवर में
कच्चा तेरा घड़ा और बहती है नभ में
नदी दूध की ।
सुबह-शाम है बस उत्तेजित एक अग्नि-क्षण
छहों दिशाओं को जो भस्म किये जाता है

घोर रात में घन-वन में जब
सिंह-गर्जना सुनकर
घोड़े का-सा जिगर
होश गँवाकर
बौरा देगा
शायद तब जाकर बगिया का द्वार खुलेगा
और चेतनाबद्ध देह में
फूटेगा तब उत्स चेतनोपरि का ?
और खिलेगा कमल रक्त के सर में

---

1 पाँच इन्द्रियाँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तब शायद आँखें
ख़ुशबू की आवाज़ सुनेंगी
और बावरा घर बैठे ही राज[1] करेगा
सहसा यह आवाज़ कहीं से आयी—
"मिली तुझे क्या लल्लेश्वरी नग्न-निर्वसना[2] ?"
शम्स फ़क़ीर[3] ने पाया कोष अपरिमित धन का ?"

---

1. एक कश्मीरी सूफ़ी कवि की पंक्ति की ओर संकेत जिसमें घर बैठे ही आकाश में ऊर्ध्वगमन की बात कही गयी है।
2. 14 वीं शताब्दी की महान कश्मीरी संत कवयित्री।
3. 18 वीं शताब्दी का एक कश्मीरी सूफ़ी कवि।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेम-कथा

—दीनानाथ नादिम

तब बचपन में
देवी-मन्दिर के आँगन में
देर-सवेर हमारा मिलना
और पक्षियों की बोली सुन
बच्चों जैसा सहज हुलसना
तेरा हँसना :
राशि गन्ध की
ओर विलसना :
राग-रंगमय
तुझे देख
मेरा वह चेहरा लाल लिये
पल-पल शर्माना
टुकुर-टुकुर तुझको निहारना
तुझे याद करना, बिसारना
मेरा तुझको पकड़ा देना
वह बदाम का फूल
और अजाने ही तेरा वह उसे मसलना
और एक दिन
इशवर के पवित्र कुण्ड में
तेरा वह स्नान को आना
कब तू पूजा को आये बस

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इसी प्रतीक्षा में मेरा
चुपचाप खड़े रह समय बिताना
या लोगों की भरी भीड़ में
मुझे ढूँढ़ते
तेरा मुझको
मेरा नाम पुकार बुलाना

चंचल बच्चों की टोली में
वह तेरा सहसा दिख जाना
जैसे उड़ती तितली कोई
मेरा तुझको अपने दुख की बात बताना
सुनकर जिसको
तेरा मुझको धीर बँधाना
साथ निभाना

या कि गंगवाल तीरे रंग भरे मेघों से
पूछ-पूछ कर
आख़िर तेरा पता लगाना
चलकर पर्वत के कगार पर
तुझ पर अपनी जान वार कर
पाना तेरा ठौर-ठिकाना

उस दिन तेरा
शेषनाग की नील झील के
तट पर
अकस्मात् मिल जाना
और तड़ित् के चल प्रकाश में
धीरे-धीरे
सरवर तीरे
प्रेम-प्रीति के भेद बताना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

महादेव पर्वत पर या फिर
वर्षा की घनघोर धार में
कान लगाना इंतज़ार में
जहाँ गरजते बादल
अपनी धूनी जाकर वहाँ जलाना

और आज जब
समय अस्त होने का आया
क्यों रूठे तुम ?
भूल गये सम्बन्ध पुराना ?
डरते हो क्या
अपनी टूटी देह पुरानी
लिये न यह पीछे पड़ जाये,
यहाँ न आये ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुजराती | राजेन्द्र शुक्ल
चन्द्रकान्त शेठ
सितांशु यशश्चन्द्र
चिनु मोदी
लाभशंकर ठाकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग़ज़ल

—राजेन्द्र शुक्ल

या ख़ुदावत् या ख़लक़वत् होता हूँ
दो ही मिसरों के फलकवत् होता हूँ

इसलिए तो निष्पलकवत् होता हूँ
हस्तमध्ये आमलकवत् होता हूँ

देखनेवाला सिरजता दृश्य सारे
मैं अनुस्यूत-सा झलकवत् होता हूँ

हर्फ़ सारे डूबते हैं जिन क्षणों में
उन क्षणों में भी हलकवत् होता हूँ

गर खोलो तो खुलता हूँ द्वारवत्
बन्द हो तो अर्गलकवत् होता हूँ ?

(रूपान्तर—मृदुला पारीक)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कल सूरज निकलेगा ही

—चन्द्रकान्त शेठ

आँखें तो यूँ ही हो जाती हैं भीगी-भीगी
और फिर सब कुछ लगने लगता है भारी, भारी, सजल !

खिड़कियों में जम्हाइयाँ
दीवारों में गहरी सुस्ती,
हवा एकदम बन्द, हताश पाल-सी,
और धूप एकदम झड़ने लायक़ पीली-सी।

होता है : आज की हवा में
मैं नहीं उगूँगा, नहीं फैलूँगा, न फलूँगा।
भले ही मैं दीये में डूबा ही रहूँ, मक्खी-सा
मैं उड़ूँगा नहीं।
मुझे कहीं पहुँचना नहीं,
पहुँचना नहीं है किसी को कहीं भी।
भले ही चाबियों के गुच्छे के गुच्छे पड़े रहें जंग खाते हुए
मुझे नहीं खोलना है कोई ताला, कोई यन्त्र।
भले ही आकाश सोता रहे आठों प्रहर
मुझे जगाना नहीं है किसी सूरज या चन्द्र को,
भले रुक जाय उजाला
मेरी आँखों तक पहुँचते-पहुँचते बीच में ही;
भले रुक जायें लहरें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे सागर की, यकायक, पतवार देखकर।
भले परोसी हुई थालियाँ रहें ज्यों की त्यों,
और रतजगे से तपते रहें छत्र पलंग
भले वेदना के कंप से खलबलाते रहें
मेरे अन्दर और बाहर के सभी लोक ;

मुझे कुछ भी नहीं करना है
इस असमय सील भरी ज़िन्दगी में।
धँधोलनेवाला भले ही धँधोलाये
बह जाने वाला भले ही बह जाये,
भले टूट जायें लंगर
और भले ही धँसते रहें जहाज़ चट्टानों की ओर
आज भले ही डूबे, लेकिन आने वाला कल तो है ही।
कल सूरज निकलेगा ही।
और बहुत कुछ तपेगा और तपकर हल्का होगा,
—बहुत कुछ को मिलेगी धूप ऊनी-ऊनी ;
और तब हमारा आज का स्थगित कार्यक्रम
फिर से गतिमान होगा, शानदार ढंग से सूरज के साथ।
बरसात बारहों महीने तो रहती नहीं।

(रूपान्तर—भोलाभाई पटेल)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुआँ

—सितांशु यशश्चन्द्र

सब इकट्ठे होकर कुआँ खोदो,
कुआँ खोदो, कुआँ खोदो, कुआँ।

आग लगी तब कुआँ खोदो
ऐसे किसी व्यंग्य का यह अवसर नहीं।

यह तो सूख गया है पानी
सूख गया है पानी, पानी, पानी अपनी धरती में।

फावड़ा, गेती, कुदाली
लोहा लोहा लोहा !
लोहा लाओ।
लाओ डायनामाइट।

गहरे गहरे गहरे।
देखो तो सही चारों ओर।
दूर पास और वहाँ
देखो तो सही चारों ओर।
किसी के द्वारा नोंच-नोंचकर उखाड़े हुए परेवे के पंख
तितर-बितर हैं चारों ओर
धरती धरती नहीं।
धरती है धूप का बूरा।
धरती है टूटा हुआ मन।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मारो
ज़ोर लगाकर मारो
हर गेती के सिरे से निकले चिनगारी
ऐसे मारो !
इस प्रकाश में ही दिखाई देगा
शायद हो पानी ।

वाणी
नहीं कोई भविष्य का आसार।
वाणी की रस्सी से नहीं बाँधा जा सकता आनेवाले कल का सांड़
अरे त्रिधाबद्ध ऋषभ
वेदना से छटपटाना एक ही चीख़ से तोड़कर तीनों बन्ध
भाग खड़ा हुआ है कभी का
—तुम जानते नहीं
अबोध
तुम जानते नहीं ।
नुची उधड़ी परेवे जैसी
तड़प रही है धरती
और ऐसी ही नुची-खुची है आज हमारी वाणी ।

"धन्य धन्य
धन्य तुम्हारी वाणी के
आगे हौज़ भरे हैं।"
"अरे पानी पानी पानी !"

बीच में आदमी मर रहा है
औ' इर्द-गिर्द इकट्ठी होकर डकार रही हैं
चीख़ रहे हैं इकट्ठे होकर रेडियो-सिनेमा चीख़ रहे हैं
कमरे स्कूलों के चीख रहे हैं, दफ्तर-कचहरियाँ चीख़ रही हैं
आँकड़े, अरे
अरे चीख रहे हैं कविजन !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"धन्य धन्य
धन्य तुम्हारी वाणी के
आगे हौज़ भरे हैं।"
हौज़ ?
मैं कहता हूँ, नहीं।
कुआँ
कुआँ
कुआँ खोदो,
वहाँ नहीं, यहाँ।
कुआँ खोदो
कल नहीं, आज।
खोदो
धैर्य धरकर खोदो
शायद हो सोता अब हाथ भर ही दूर बस।
हाथ।
कैसे रबड़ की रस्सी से बन्धे हैं हमारे हाथ !
प्रत्यक्ष ग़ुलामी गयी
किस दरवाज़े से होकर के गुप्त ग़ुलामी घर में आकर छिप गयी ?
छुपी वह तो हमारी हथेली की परछाईं में।
छुपी वह तो हमारे हृदय के पाँचवें ख़ाने में।
छुपी वह तो हमारी मति की भूलभुलैया में।
छुपी वह तो सुपारी जैसी, हमारे अपने शब्दों की डिबिया में
छुपी वह तो नन्ही लौंग जैसी, जीभ तले औ' गलफोड़े में।
छुपी वह तो एक राई का दाना, हरेक की आँख की पुतली में
खटकती है,
खटकती भी है ?
और लगता है कि आँख की पुतली ही मानो आँख को खटकती है
अरे नहीं
छींटे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मारो छींटे पर छींटे
नयनों को पानी के।

पानी पानी पानी पानी
खोदो
ओर बचा हो तो बहने दो आँखों का भी नीर।
इन्द्र से भी बढ़कर अंग-अंग से।
पसीने की हज़ारों लाखों
खुलने दो तुम्हें
सब कुछ देख लेती आँखें
देखो तो सही
देखो न
निरखन्
गगन में
जोजी जीजो करते उड़ रहे चील-गिद्ध-बाज़

आज
और आज
खोदो
सारा दिन
सारा रात
एक-दूजे के साथ मद्धिम आवाज से निजी ज़ुबान में
एक नितान्त व्यक्तिगत और एकदम सबकी करें बात
गहरे
और गहरे
और गहरे गहरे गहरे।

(रूपान्तर—मृदुला पारीक)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नगर से निर्वासित नल राजा की स्वगतोक्ति

—चिनु मोदी

अस्ताचल की ओर जाते
सूर्य से पूछूं ?
नीड़ की ओर जाते
पंछी से पूछूं ?

नहीं,
बंदी होते
भटकते गुंजारव से ही पूछूं
कि
मेरे आवास का स्थान
तुम जानते हो ?

किन्तु
निस्तब्ध दिशा जैसे
हठी वामांग जैसे
दन्तूशल हारा गजराज जैसे
हे मेरे मूक प्रश्न !

प्रतिस्पर्धा द्वारा फेंकी गयी
और
अनिरुद्ध गति से
मेरी ओर धँसती

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सांग,
सांग मुझे डरा नहीं सकती
किन्तु तुम ?
किन्तु तुम मुझे
पहाड़ पर से धँसते
बरसाती जल के सामने
तृणवत् कर देते हो।

जड़मूल से उखाड़ कर,
मुझे स्थानच्युत कर,
विशाल पृथ्वी के
डरावनेपन का
प्रत्यक्ष परिचय कराते हो।
फिर भी
चुभी हुई
और भीतर
गहरे अति गहरे
पैठी हुई
शूल की भाँति
तुमको
मैं
दूर नहीं कर सकता

हे मूक प्रश्न !
अभिव्यक्त न होकर
तुम मुझे कुरेदते हो,
तुम मुझे डराते हो,
व्रण के कारण
लगातार उपस्थित
वेदना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम मुझ में भारी हो

लाओ,
इस नगर के सीमान्त पर खड़े
दीर्घ आयुष्य
भोग रहे
वृद्ध वटवृक्ष से पूछूं
कि
यदि जानते हैं
तो मुझे बतायें
हे वृक्षराज
कि
आवास स्थान भी
काल बाधित है ?

मेरी शिशु अवस्था थी
तब
एकदा
पुण्यश्लोक पिता जी के साथ,
रथ में जाते-जाते
मैंने
आपको
यहीं खड़े हुए देखा था ।

आज
मेरी इस प्रौढ़ अवस्था में भी
आपको
तो
यहीं खड़ा देखता हूँ
कालातीत होकर
आप तो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यहीं के यहीं बसे हैं
हे वृक्षराज !
तब फिर
मैं कल जहाँ बसा था
उस स्थान पर
आ···ज क्यों नहीं हूँ ?

समुद्र की गोद से
कोरे तट पर
सीपी की तरह
मुझको मेरी इच्छा के विरुद्ध
क्यों फेंक दिया गया है ?
समुद्र की ऐसी इच्छा थी ?
तरगों ने मारुत की आज्ञा मानकर
मुझे तट पर उछाल दिया ?
मैं
—सागर में—
जल में जल होकर
न रहा
इसलिए उछाल दिया गया हूँ ?
डाल पर से
चुन लिये गए फूल जैसा
मैं
मैं अब कहाँ जाऊं ?
डाल पर
मुझे फिर से रख दिया जाय
तो भी
मैं आगन्तुक मात्र

['बाहुक' नामक दीर्घ कविता का एक अंश]

(रूपान्तर—भोलाभाई पटेल)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देट्स ग्राल

—लाभशंकर ठाकर

कुर्सी पर वह बैठा है, टेककर लघरा[1]
कुर्सी के हत्थे पर उसके हाथ हैं, चिपके हुए, झुर्रीदार निष्कम्प।
सामने एक टेबल के फ्लावरवाज़ में फूल हैं रंगीन
हल्की हवा में लहराते तनिक।
फहराता ज़रा-सा शुद्ध चाँदी जैसा बड़ा-बड़ा सिर
जिसमें भीतर घिसी टेप्स की गुत्थियाँ हैं, अस्त-व्यस्त।

एक तितली उड़ती हुई आयी—
कुर्सी के दाएँ हत्थे पर हाथ की मुड़ी हुई मुट्ठी पर बैठी।
गड़-गड़ गराड़ी पर से खिसकती बाल्टी
टनन् से गिरी-की आवाज़ भीतर कैसेट में सुनाई दी लघरे को
गरड़-गरड़ खिंचती आती है बाल्टी ऊपर
और ख़ाली होती है, कान में
चर्र-मर्र खिंचती बाल्टी में खड़ा है नग्न खुद खिंचता ऊपर
खींचनेवाली के पयोधरों को ताकता मग्न
बाल्टी में ही खड़ा-खड़ा चूसता चुचुक, नग्न
नीरव मूक नारी के नितरते नेत्र सुख में
काँख में उठाया हुआ पयपानलीन, मूँछ, मूँछ में खाज,
आते उसके बाल
खुचुर-खुचुर खुजलाने गया तो

---

1. घोंचू

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मूँछ आ गयी हाथ में—
मरद मुच्छड़, आगे पुच्छड़
टेप खर्रर-खट् अटक गयी
प···फ···प···फ हँसी काँपते होठों से फट पड़ी
कैसेट की गुत्थी में पूँछ चाटी जीभ से, फ्रेन्च, चप्-चप्
पिकाडेली की एक गली के मकान की तीसरी मंज़िल पर
देह की शाख शाख पर कुसुम, चू···म···चू···म
कुलबुलाती मणि उठाता फन
बनी-ठनी के उतरते वल्कल, पल-पल एक के बाद एक
पर ठीक नाभि का ढलान ढलते
कुछ थी नहीं, न रंध्र न छिद्र
पर मैं अनुत्सुक हूँ
रन्ध्रहीन उपनिषद-वेद इज़म्स-रिदम्स।
आई कान्ट पेनिट्रेट—
यू आर फॉल्स

इना-मीना-जोना लोलोब्रिगेडा—
जेनिटी-सेनिटी-वेनिटी-फेनिटी प्युमेनिटी
तुम्हें कैसे पहचानूँ भोगूँ ? नहीं है तुममें छिद्र
उत्सुकता से कर बढ़ाकर नीवीबन्ध कैसे खींचूँ ?
छिद्र तो कल्पना है, आदर्श है, एम है
पर पाटलीपुत्र अब लेम है।
लेम लटकता, लटकता, अटकता, अटकता भी बढ़ता है,
खड़ा होता है,
पर एम हो तब न ?
किसको बींधे ? विथ ओपन धारदार चक्कू से
कुश जैसी धारदार धी—
भी नपुंसक भटक-भटककर लटक रही है
लाइक माय कोक।
अपक्व मोतियाबिन्द के आरपार, नीचे उसने, घोंचू ने देखा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फिर काँपती अँगुलियों ने स्पर्श से देखा।
फिर होंठ बड़बड़ाए : 'पुअर'
फिर आदतन निकला, 'सुअर'
वैसे कभी टाइम था तुम्हारा भी टाइट फ़ाइट का
टेक्सास के नगरों में अजाने चौकड़ी भरी, इसी क्षण,
लुव्र के पिछवाड़े

पैण्ट की चेन खसकी
पीछे-पीछे-पीछे छुए न छुए वहाँ
कूदकर जाती है आगे इलेक्ट्रिकल माइक्रोसर्किट्स में
बें-बें करती मायाविनी
और I पीछे-पीछे प्रलम्ब उपस्थ के साथ, ब्रेन में
भटका है I लगातार अन्धकार की आँखें खोजता
प्रोटीन मोलेक्ल्यूस में

पत्थर के पंख खोजता हायार्किन में
अग्नि से दीया जलाता डेलिरियम में
सबमरीन से खिसकता मायथोलॉजी में
लव दाइ नेबर के आकाश में उड़ता
ब्रह्म के टुकड़े करता शार्प डेज़्लिंग नेसेसरी लाइट से
मेटाफ़िज़िकल घास चरता सेल्फ़ डिस्ट्रक्शन में।

आज तक
हिस्टॉरिकल हिस्टिरिकल साइकोलॉजिकल सोश्यल ह्यूमन
इन ह्यूमन, वुमन, इन वुमन
तन-मन-धन-वन सुलगता सन फ़किंग फन-धन-ट्रन
सूत-सूतर-मूतर-उतर के
सर्व विशेषों को, शेषों को, निःशेषों को
कम्प्यूटर में ठूंस-ठूंसकर बैठा है I
विदाउट पेनिट्रेशन—
हरित चारा चरती मायाविनी तरल, चंलल तिर्यक्

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अजा का ब्रह्म बें-बेंकार सुनता हुआ, घिसी हुई,
खोखली मास्टर टेप में
अर्थहीन सलिंग बैठा है I घोंचू का I

हींग के छोंक बीच, कबूतर के बीट बीच, मैक्समूलर भवन
और रांड बांझ के ग़बन बीच, एरकण्डिशण्ड पवन और
जवान हुए च्यवन बीच,
वेद-उपनिषद के लवन और खाण्डववन के दहन बीच
भूकम्प में दब जाते झुण्डों और वेश्याओं के सरकते
नाड़ों के बीच

बैठा है घोंचू का I
सुषुप्त, अन्तर्मुख, दबा-सिमटा
बहरेपन के साथ, आधे अन्धेपन के साथ, सूखी चमड़ी के साथ
आने वाले कल की काल्पनिक कुर्सी पर
टेककर बैठा है घोंचू, घोंचू का I
कुर्सी के हत्थे पर उसके हाथ हैं
पेनिट्रेशन के बिना सुख कैसे भोगूँ?
परिपूर्णता के कगार पर
निरन्ध्र मांस की दीवार के साथ टकराकर सुख
छिन्न-भिन्न हो जाता।

झुर्रीदार हाथ से सकम्प
पाजामे के बटन खोलने का प्रयत्न
दबे सिमटे सूखे अन्तर्मुख में आर्द्रता थी
या उलझी घिसी हुई टेप में?
अन्तर्मुख के अग्रभाग पर उसने, घोंचू ने पाजामे का वस्त्र घिसा
और कैसेट में कोई खिलखिलाकर हँसा!
तेरी दुनिया में—
व्हेर टु पेनिट्रेट
जेट जैसी गति से रन्ध्र की रति से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ढूंढ़ता है छिद्र
व्हेर टु पेनिट्रेट ठेठ-मूलपर्यन्त ?
सन्त की तरह चाटूँ, मेरे मूल तत्त्व को चाटूँ
मेरे मणि के फुत्कारते फन से
कण-कण को चाटूँ, अन्तर तुमको मारूँ
रिमझिम रुनझुन नक़द नेट
बट व्हेर टु पेनिट्रेट ?
पिकाडिली की गली के तीसरे तल्ले पर
स्ट्रिपटीज के ताल पर, उतरती हुई खाल पर सरसर
झालजोल के झटके से, ललित लटके से, अनिमेष मटकने से
अम्बर उतर गये कषायों के सारे घाघ
मैं आँख से अन्धा क्या ?
निर्वस्त्र निरन्ध्र में हत-अनाहत—मेरा सत
माय कोक, टेंगल्स
माय पुअर कोक।
काँपती उँगली से उसने, लघरे ने, सुप्त को स्पर्श किया, समेटा
'स एकाकी रमते।'
काँपते होठों से खड़खड़ाते खुरदरे अक्षर खिरे खर खर
'स एकाकी रमते।'
और लॉफ़्टर, खड़खड़ाता, खुरदुरा, खूँ-खूँ, एकाकी।
और फिर वह, घोंचू, कुर्सी में थोड़ा फैलकर बैठा तभी ऊपर
कैसेट के रास्ते पी···पी···पी···प आवाज़ के साथ
सरकती आती सफ़ेद कार की
आवाज़ सुनाई दी, पी···प···पी···प
कार रुकी, दरवाज़ा बन्द होने की आवाज़।
वही थी
हरित फहराते वस्त्रों के साथ उड़ती-उड़ती वह आयी
तर्जनी पर लटकती मोटर की चाबी
हवा में उसने, घोंचू ने, मोतियाबिन्द के उस पार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हाथ लम्बाए, झुर्रीदार, चाबी को पकड़ने
माय कोक
हवा में सफ़ेद कार के बाहर वह खड़ी है, गेरुई, खुले बाल
और तर्जनी पर टेंगलिंग माय कोक, गिरधर गोपाल
आती है सामने से जिन्स-चिपकी-जंघिनी
तर्जनी पर टेंगलिंग गाजर
तोड़-मरोड़कर काट ले मेरा यह—
निरर्थक, निरालम्ब, बम्ब, ओ अम्ब !
त्रयम्ब, त्र्यम्ब, त्र्यम्वालु[1] भले
बियाबान जंगल में भले
बजता रहे भले
नारी तुम नारायणी के नितम्ब भले
कुमुदिनी जैसे उदरों के भले
पीन-पुष्ट-हठ-उन्नत-लोचन लोभी, लड्डुकम् के भले
नाभि-कुसुम के नीचे ढलते झुकते ढलानों के भले
बजता रहे भले
त्र्यम्ब, त्र्यम्ब त्र्यम्बालु भले
घोंचू के I हाथ, झुर्रीदार निष्कम्प
फहराता है शुभ्र चाँदी, जैसा बड़ा-बड़ा सिर घोंचू के I का सिर
जिसमें भीतर, घोंचू के सुषुप्त, अन्तर्मुख, दबे सिमटे I में, भीतर
घिसी हुई टेप्स की गुत्थियाँ हैं, अस्तव्यस्त
संक्षेप में पुअर, इमेजिनेशन ।
भोंथरी तो भोंथरी खच् खच् काट सकती है
अथवा दूसरे ढंग से कहें तो
बेसुध कर सकती है···
तीसरी तरह से भी कहा जा सकता है
पर देट्स आल

(रूपान्तर—मृदुला पारीक)

---

1. ढोल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तमिल	सिट्पि
	तमिलन्बन्
	पावण्णन
	एष़िलमुवलघन्
	वैरमुत्तु

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कल, आज और कल

—सिर्पि

प्राणों की विकास यात्रा
रेंगती हुई, रेंगती हुई
तैरती हुई, तैरती हुई
उड़ती हुई, उड़ती हुई
अग्रसर हुई जब
क्रियाशील होनेवाले
आदिम जीव के
छलक पड़ने से
छितरी एक बूंद हूं मैं···
विश्व के शून्य मण्डल के
गुह्य गर्भाशय में
मैं और काल
साथ-साथ छिपे रहे
तारिका-धूलि के कणों के रूप में !

काल और मैं
अंकुरित और पल्लवित हुए
एक के बाद एक
या एक के पहले एक
ऐसा नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हम दोनों
एक ही प्रसव में उपजी
प्रशाखाद्वय हैं
एक ही वेणी की
दायीं लट और बायीं लट हैं
गगन-पिंजड़े से निर्मुक्त
आदिम पक्षी के
पंखद्वय हैं

मेरे श्वास की प्राण-शक्ति से
ताज़ी बनी ख़ून की नहरों ने
मस्तिष्क के ऊसर को
हरा-भरा बना दिया न
तभी काल भी
चूज़े-सा सृष्ट हुआ

मेरे पहले वह नहीं था
उसके पहले मैं नहीं था
हमारा अद्वैतत्व ही ऐसा था···!

विश्व के अन्तरिक्ष में
उदित और प्रज्ज्वलित
फिर मृत होकर निद्रालीन
विस्मयकारी दृश्यों के
हम मौन साक्षी बने रहे

सूर्य रूपी लाल चिड़िया ने
अपने एक ऊष्म पंख को
भूमि के रूप में गिरा दिया
यह हमें मालूम है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसके
विस्फोटित मुखों में से
उमड़े वायु के ताप में
जमे हुए हिम की दरारों में
मूसलधार वर्षा की धाराओं में
प्रथम सागर की तरंगों में
धँसे मरोड़े और
उतराते रहे हम

राक्षसोचित महा अरण्यों में
'डाइनसार' की पीठ पर
हम सवारी करते रहे
चार पैर वाले जीवों ने
पीछे के पैरों को
ज़मीन पर गाड़कर
आगे के पैरों को
हाथों के रूप में सीधा कर
अपने मस्तिष्क को जब चौंका दिया
तब मैं बना मैं
काल बना अलग वस्तु···

उसी दिन
'आज'
वर्तमान का क्षण बनकर
जीवित हो उठा
'कल'
पुराना बनकर
व्यर्थ हो गया
आनेवाले 'कल' ने
चमत्कारों के ज़रिये

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आमन्त्रित किया

मूल आनुवंशिक अंशों में
मुँह छिपाकर रहता था मैं
अब पक कर, प्रौढ़ बनकर
मनुष्य का रूप पाया
काल रूपी कन्या भी
मौसमों के रूप में प्रौढ़ बनी !

कल— मेरी पीठ
आनेवाला कल— मेरा मुँह
आज— वर्तमान में
क्रियाशील मेरे पैर।

क्षण पर क्षण
क़दम पर क़दम रख कर
अणु के गर्भाशय में
युगों को बसा कर
अनन्त यात्रा में मैं
संग में काल

हाथ में हाथ मिलाकर
दोनों अग्रसर होते हैं

अणुओं का पुत्र हूँ मैं
तभी तो धरती में कहीं भी
घटनेवाली कोई विपत्ति
मुझे रुला देती है
कोई भी सुखद घटना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझे उत्साहित और
जाग्रत कर देती है

आगे मेरे लिए कभी
मृत्यु की समस्या नहीं है
मैं···मैं···अब
स्वयं काल बन गया हूँ ।

(रूपान्तर—डॉ० एन श्रीधरन)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नमक कम

—तमिलन्बन्

मौसीजी
मर गयी थीं
उस दिन···
पावस कालीन
नयनों वाली हुईं
नारियाँ ।

सड़क पर डाली गयी बेंचों पर
सीमेन्ट, चावल
सिनेमा, राजनीति
मिट्टी का तेल—
मौसीजी को छोड़
बाक़ी विषयों पर
गपशप करनेवाले पुरुष ।

मौसजी के बेटे
उसी के बटुए को
चीर कर निकाले
रुपयों से ख़रीदे
बांसों से तैयार अर्थी को
जल्दी-जल्दी उठाने लगे ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुहल्ले की खिड़कियों पर
खचाखच भरे चेहरे
उन पर अपने-अपने
मरे रिश्तेदारों की
स्मृति की झलक और
पुराने शवों को उखाड़कर
मौसीजी को गाड़ देने का भाव।

मौसीजी का शरीर
जल जाने के पहले
पक गया जो उप्पुमा[1]
उसमें
सब आगन्तुकों को
नमक कम लगा
मगर मुझे तो
नमक ज़्यादा-सा लगा।

(रूपान्तर—डॉ० एन०श्रीधरन)

---

1. जलपान/नाश्ते की चीज। चावल को पीसकर, नमक मिलाकर मिर्च, सरसों, तेल आदि डालकर पकाया जाता है। यह कम समय लेता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भूचाल गर्जन
निकल रहा है

—पावण्णन

हमारे
नौकरी चाहकर भेजे गये
आवेदन-पत्रों के मेघ
निरीक्षण-शिखर के
निकट पहुँचने के पहले ही
कुछ
सिफ़ारिश की हवाओं के द्वारा
बिखरा दिये गये हैं

प्रत्येक फूल पर
टिड्डियों ही के
खेलते समय
निर्धन मधुमक्खी
कहाँ जायेगी ?

प्रत्येक चयन में
सिफ़ारिश की पताकाओं के
धूमधाम के साथ
उड़ते समय
हमारे भविष्य को
कहाँ बाँधेंगे ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रुण मेघों का
सूख जाना
कुछ
छोटी फुहारों का
सूख जाना भी
समस्या की गरमी
के कारण से ही…

एक
नौकरी मलयानिल का
स्पर्श करने के पहले ही
अनेक
विषैले साँपों को
छूकर जाने की
विधि किसने बनायी ?

एक
नौकरी द्वीप तक
पहुँचने के पहले
अनेक
चक्र के घुमावों को
लाँघकर जाने का
विधान किसने बनाया ?

बाप रे ! बाप रे !!
भारत में
एक
काम को ढूंढ़ना
वास्कोडिगामा को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भारत ढूँढ़ने में
हुए कष्टों से भी
अधिक ही है।

कष्ट-चीलों के
काटने-काटने से
अति पीड़ित
तरुणों की पलटन
वहाँ देखो···
भूमि को फाड़नेवाला
भूचाल गर्जन कर
निकल कर आ रही है।

(रूपान्तर—डॉ० पी० एस० परशुरामन्)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समाज के असुर

—एषिलमुदलवन्

तैर रहे हैं मैल, आज
उबलते हुए पानी से
हुए मदमत्त, बिना पिये ही

शहर बीच कोलाहल में
फूटते बरसाती कुकुरमुत्ते-से।
पा कर गन्ध मरमर की
लेंगे विकराल रूप।

निश्वास से इसके
लगी नदी में आग
होगा चकनाचूर अचल पर्वत भी

सिर के बल चलेंगे
अब ये असुर
बनाकर पत्थर हृदय को
सहारा लेकर सहस्र हाथों का
ताण्डव नृत्य करेंगे अब

स्थापित मूल्यों की भी
माँगेंगे बलि देवता ये
करेंगे पल में पूरा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनगिनत लीलाओं को ।
मालूम नहीं इन
अवतारों की माया
करेगी प्रभावित किस-किस को

नेतृत्वकर्ता के ये हाथ
हैं छोड़ सकते
ऊपर किसी के
इन असुर पशुओं को

ज़रा-सी भी गयी रस्सी चूक
रहे यदि ग़फ़लत में
उस नेतृत्व को ही
जायेंगे ये निगल

(रूपान्तर—डॉ० एम० शेशन्)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कवि जब वैज्ञानिक बना…

—वैरमुत्तु

(बचपन की इच्छाएँ ही संभवतः दर्शन की जननी हों। कली को खिलते देखने की बचकानी लालसा के कारण कवि को प्राप्त अनुभव एवं पीड़ाएँ)

अभिलाषा हुई एक, बालपन में मेरे,
अभिलाषा थी एक ऐसी, बँधी हुई हृदय की गहराई में,
अभिलाषा थी एक ऐसी, निकट से देखने की
चिटकती हुई कली के उस पल को
चिटकती हुई उन नन्हीं पंखुड़ियों को।
वह कोमल ध्वनि मेरे कानों में पड़े,
उसके खिलने की, प्राणवान होने की सुखानुभूति में
डुबाने की है मेरी अभिलाषा।

क्या खिल उठीं वे कलियाँ
उस मन्द पवन के छूने से,
या उन भौंरों के टकराने से
इस नन्हें रहस्य को जाने बिना
रहा कवि के सपनों में डूबा,
रहा बैठा लता की ओट में,
रहा बैठा उस बालक-सा
जो लगा पकड़ने भौंरे को,

अभिलाषा ऐसी कि वे नन्हीं कलियाँ मुझे बुलायें
मैं भी उन ख़ुशी के क्षणों में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रहूँ प्रसन्न सौ बरस तक।
सम्मुख उस नन्हें रहस्य के
संचित मेरा ज्ञान भी पराजित।
रहा मैं जागता रात्रि की बेला में उस दीपक-सा।
थी प्रतीक्षा उस नन्हीं कली के खिलने की।

थकीं मेरी आँखें लम्बी प्रतीक्षा से, आ गयी थोड़ी झपकी,
उपरान्त उस छोटे पल के, जाग उठा जब मैं
देखा, खिल उठीं वे सुनहली पंखुड़ियाँ।
हुआ दुखित मन, कहते हुए—जा जा
और भर निराशा से गया बैठ धरा पर।
रहस्य को आँखों से क़ैद करना ही
शायद कविता है,
मात्र ऊँचाई पर खिले फूल ही नहीं
सभी सुन्दर वस्तुएँ रहस्यात्मक हैं।

(रूपान्तर—डॉ. एम. शेषन्)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तेलुगु | मधुनापंतुल सत्यनारायण शास्त्री
आचार्य तिरुमल
डॉ. सी. नारायण रेड्डी
डॉ. दाशरथी
डॉ. बोयि भीमन्ना
(रूपान्तर—डॉ. आई. पांडुरंग राव)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कन्याकुमारी में अरुणोदय

—मधुनापंतुल सत्यनारायण शास्त्री

दिशाहीन मैं देख रहा था सघन तिमिर वापी में धँसकर
प्राची का तब द्वार खोलकर प्रकट हुई अरुणा सुमनोहर
मणिमण्डित कंकणस्वन रंजित कर सरोज-सीकर पसारकर
आ बैठी कन्या सुकुमारी मन-मन्दिर में मुझे देखकर।

कन्या क्या, वह मंजुल स्वन था, अरुण मन्त्र का सुरुचिर स्वर था
सुप्रभात कमलाक्षी का वह आलक्तक चरणारुण कण था
आभा से प्रतिभासित निःस्वन चरणों की लाली से पुलकित
सागर की श्यामल सीमा को ढूँढ़ चली आयी है जनहित।

दिनकर जब घर से निकले तब सप्ताश्वों के शीश सजाकर
सुन्दर तरु की शाखाओं पर खिली लाल कलियों को लेकर
पद्मराग मणियों के उद्गम उदयाचल को उन्मेषित कर
ताम्रपर्ण सैकत पर निखरी मुक्ताओं का रंग परखकर
प्राण पवन से पुलकितमति-सी हल्की-हल्की जागृति श्रुति-सी
सागर संगम की मंगलमय गीत सुधा-सी मागध स्तुति-सी
प्राभातिक कन्या कुमारिका प्रकट हुई प्राची में द्युति-सी
अलिकुल के कल-कल निनाद से श्रुति सुमनोहर सुमधुर स्मिति-सी।

नारिकेल तैलालेपन से स्नान सलिल से सिंचित सुमधुर
केरलांगनाओं की कोमल केशराशि पर मचल-मचल कर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चलनेवाली सुन्दर कंधी-कन्याएँ भी बाल हंस के
कान्तिपुंज के करस्पर्श से पुलक उठीं रुक-रुककर हँस के।

जलधि गर्भ से बाडव-बाला झाँक रही हो कौतूहल से
या श्रीमाता मंगल-स्नाता चीर सुखाने आयी घर से
सागर-मंथन में सुरतरु की शाखाओं के नव पल्लव हों
बाल सूर्य के राज वैद्य के कर में चर्चित इंगुर द्रव हों
प्राची की रंगीन भित्तिका चित्र-विचित्र कला से शोभित
पल-पल में पग-पग पर नव-नव रंग बदलकर चित्र सुचित्रित
कभी बैंगनी, कभी गुलाबी, कभी लाल सित हरित नीलिमा
अनियत गति अपवाद रीति से चित्र लेखनी बनी लालिमा।

कन्या के सुन्दर मधुवन में बारह मास वसन्त मनोहर
सागर की उत्ताल तरंगें, आम्र मंजरी, पिक पंचम स्वर
कण-कण में कमनीय काकली सुनने में आती है सुमधुर
हिन्द महासागर दक्षिण में पूरब पश्चिम से रस निर्भर।

त्रिगुणात्मक बनकर जगती में जन-जन को जाग्रत करता है
सूर्योदय इस भव्य धाम का अग-जग को प्राक्तन करता है
प्राची का तिलकांकित आनन सुप्त जीव को जगा-जगाकर
अपने पास बुला लेता है सकल जगत् को बना उजागर।

एक नयन स्वामी स्मारक पर, अपर नयन श्रीपाद सदन पर
एक हाथ माँ के चरणों पर, एक हाथ जलनिधि जीवन पर
एक पैर महिषासुर उर पर, एक पैर घनघोर तिमिर पर
एक प्रकाश किरण दक्षिण पर, एक सुदूर हिमाद्रि शिखर पर
यही द्वैत-अद्वैत—इसी ने घेर लिया प्राची के तट पर
पर प्रभात की सार्वभौम वह शोभा थी नीरव, पर सुमधुर।

कन्या का कारुण्य-तरंगित, कान्तारुण कमनीय रूप वह
कोटि-कोटि जन्मों की संचित वांछा का था परम लाभ वह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिट्टी का पुतला क्या अपना रूप अरूप समझ पाता है ?
पहले था विश्वास नहीं, पर लगता है ऐसा होता है।
रूप-अरूप अभेद एक है, अव्यय शिव सुन्दर सब अपना
अपने को अपने में पाकर पुलक उठा मेरा सब सपना

नयन सजल, कम्पित कर अंजलि, जपा पुष्प शोभा की सीमा
सम्मुख देख निरख निःस्वन स्वन सुनकर बोल उठा, "मेरी माँ !
तेरी ही उज्ज्वलता जग को उज्ज्वल करती है, मेरी माँ !
सूर्य चन्द्र पावक में तेरा तेज विराजमान है श्री माँ !"

उस दिन का आलोक सनातन—विरह मिलन से रहित सदामिल
सुख-दुख पुण्य-पाप से अविकल—वह बन्धूक कुसुम-सा निर्मल

माँ कन्या कौमारी का वह नासाभरण वज्र-सा द्युतिमय।
त्रिगुणात्मक सागर संगम में डूबे का वह अभय सदाश्रय।
अन्धकार में हाथ पसारे प्राणी को वह दीप दिखाता।
भव जल निधि में चलनेवाले बेड़े को वह पार लगाता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सागर का पुष्प

—आचार्य तिरुमल

पृच्छक नेत्रों को प्रगतिशील कान्ति से आलोकित करता हूँ
पतझड़ के पत्तों को प्रस्तर पर प्रकीर्ण आदेश बनाता हूँ

मैं—
भविष्य को चीरकर आगे बढ़नेवाला तीर हूँ
खिलनेवाले फूल में महकनेवाला प्राण समीर हूँ
उड़ने वाले झण्डे की अपार शान हूँ
सच पूछा जाये, तो अक्षर नक्षत्रों का दीवाने-आम हूँ।

मैं—
हिमगिरि की हिमवेदी से आवाज़ देता हूँ
तो हिन्द महासागर के स्वर में स्वर मिलाकर
कन्याकुमारी मेरी पुकार सुनकर जवाब देती है
प्राची का द्वार खोलकर ध्यान से देखा जाए—
तो पहाड़ के ऊपर से छलाँग मारकर कूद पड़ा सूर्य
पश्चिम के सागर में तैरता हुआ
मेरी ही तरफ़ चला आता दिखाई देता है

मैं—
वानरता का वारिस नहीं हूँ
मानवता का वारिस हूँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरा मन्दिर ममता का है, भीड़-भाड़ या रमता का नहीं
मेरे विचार नदियों की जलधारा की तरह प्रवाहित होते हैं
मेरे विश्वास हरियाली की तरह सुन्दर दरियाँ बिछाते हैं
मेरा प्रेम और अभिमान कोकिल की काकली बनकर मुखरित होते हैं

मेरी भाषाएँ, मेरी राष्ट्रीय भावनाएं
कान्ति की किरणों से सजकर मेरा कण्ठहार बन जाती हैं,
मेरे विद्वानों की विद्वत्ता से
चन्दन के वृक्ष स्पन्दित हो उठते हैं
मेरे कवियों के चरण अश्रुतरंगों पर चढ़कर
पैदल आकर मेरे चमेली के चमन में संचरित होते हैं
जो लोग जीव नदियों में कश्मल का दर्शन करते हैं
फूलों में कीड़ों को खोजने का प्रयास करते हैं
प्रकाश के द्वार को अँधेरे की रँगोली से सजाते हैं
उनके पैर छूकर मैं प्रणाम करता हूँ।

दया, धर्म, सत्य और सुख के लिए
मैंने अपना हृदय निकालकर उसे समुद्र पर फैलाया है
वही सागर का पुष्प बन कर
शान्ति का बाष्प बन कर
मेरा देश बन कर
हँस दिया

उस हँसी को तलवार बना कर
मैं तुम को अर्पित कर रहा हूँ
जागृति में ही नहीं, बल्कि सुषुप्ति में भी
इस तलवार को छोड़ना नहीं
भीषण गर्मी में झुलस-झुलस कर
तेरी दृष्टि चाहे पिघल भी जाए
स्वाभिमान को कभी नहीं छोड़ना
कभी नहीं मुरझाना
हार को तोड़ना नहीं। फूलों को बटोरना नहीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बरस पड़ीं जो शिल्पाकृतियाँ

—डॉ. सी. नारायण रेड्डी

छत पर लेटे-लेटे मैं
नज़रों को आतिशबाज़ी खेलता हूँ तो
पाता हूँ कि
फुलझड़ियों की तरह
पश्चिम की संध्या के फैलाए रंगों में
आकाश में सर्वत्र
असंख्य शिल्पाकृतियाँ अंकित हैं—
संगमरमर पर उत्कीर्ण चित्र
इन्द्रनील मणियों के सुन्दर मन्दिर
अन्तरराष्ट्रीय चित्रशालाओं के
अनर्घ अनन्त वर्ण चित्र—
आकाश अपने आप में
एक बड़ी प्रदर्शनशाला है
जिसमें हर बादल
एक कला-खण्ड है

चारों तरफ़ मचल-मचल कर
चलनेवाली नज़रों को देख कर
शिल्पाकृतियाँ
भीतर-ही-भीतर हँस पड़ती हैं
और उस हँसी में
लाल रुधिर सफ़ेद बन जाता है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

न-गर्जन को गले निगल कर
जड़ीभूत कर चरणों में गड़ कर
दु:ख को पीकर हाय-हाय कर
मौन बन गयी जड़ता

हमको यह सौन्दर्य किसलिए ?
हृदयों के भीतर संस्तंभन
अमृत के अक्षय पात्रों का—
यह क्यों ?
पानी के लघु सीकर के हित
चिल्लानेवाली धरती को
गीली उँगलियों से सहलाने में असमथ
यह सारा सौन्दर्य क्यों ?

आकाश !
ये रंगीन कुसुम तुमने क्यों दिये ?
क्या किया तुमने हमारी कालिमा को ?
क्यों इतना मोड़-मरोड़ दिया है हमको ?
हम तो हिरण-बालिकाएँ हैं
हरियाली में स्वच्छन्द विचरना इष्ट हमें—
प्रदर्शिनियों से प्रयोजन क्या हमारा ?
हवा को क्या हुआ ? चलती क्यों नहीं ?
शीशमहल को तोड़-ताड़ कर
हमको बाहर क्यों न छोड़ती ?
ठण्डी साँसों से तन सहलाकर
सुधा घड़ों से क्यों न डालती ?

प्रश्न बन उठा कोलाहल
उत्तर मिला उत्ताल तरंग
बन्धन-मुक्त हुआ घन-गर्जन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जलधर के अवरुद्ध कण्ठ से
रंग-बिरंगी शिल्पाकृतियाँ
काली बनती जा रही हैं
कालिमा घुस गयी
बिजली की नाईं

अब चल पड़ी हैं शिल्पाकृतियाँ
पिघल उठे हैं जीवों के कण
लिप्त हुआ लावण्य
नभ ओझल
कूद पड़ा साहस बटोर कर
आर्द्र हृदय अवनी पर फिर से
धरती ने पी लिया एकदम
एक घूँट में सारा जल
सहस्रधारा के चरणों से
कोटि-कोटि नयनों से
जिन में
छलक रहा था सघनानन्द ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आलोक-किरण

—डॉ. दाशरथी

आदमी आदमी को भुला रहा है
अपने आपको द्वेष-भाव से देख रहा है।
आज का मानव जिस डाली पर बैठा है,
उसी को काटनेवाला अज्ञ बन रहा है।
छोटी मछली को बड़ी मछली खा लेती है
आदमी भी आदमी को खानेवाला ख़ूँख़ार
बनता जा रहा है।

जान देने के बजाए जान लेने पर
आदमी उतारू हो रहा है।
जीवन-देवता के सुखद स्पर्श को ठुकरा कर
मृत्यु-राक्षसी के गहन गूहन में अपने को खो रहा है।
धरती को शून्य में ढकेल रहा है
अपना मरणोत्तर गीत आप रच रहा है।

वसुन्धरा के सुन्द (र) मन्दिर को
निष्प्राण निर्जन शनि मंगल शुक्र के
नाभस गोल बना रहा है
अन्तरतम के अन्ध तिमिर में अस्त-व्यस्त हो रहा है
कान्ति शान्ति की ध्वजाओं को देखकर कतरा रहा है।
हिमगिरि की उच्छ्वासित उमंगें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सागर की उल्लसित तरंगें
कार्तिक शशि की धवल निशाएँ
इन्द्रचाप की रुचिर दिशाएँ
नन्हें मुन्नों की नवल पंक्तियाँ
कुसुम-कुंज की मंजुल गलियाँ

हरी-भरी वनराजि—-खेत
यौवन के आमोद-प्रमोद—
इन सबसे दूर, सबसे ओझल
सघन तिमिर की छाया में
समा जाने का उन्माद बढ़ता जा रहा है।
निराशा के निबिड तिमिर के निशीथ में
छोटा-सा दिया जलाने का प्रयास करनेवाली
गृहिणी के हौसले में
थोड़ा-सा विश्वास अभी शेष है—
आशा के आलोक की हल्की-सी किरण
टिमटिमा रही है
दिया बुझानेवाले दुष्टों पर रुष्ट यह दिवाली
पटाख़े छोड़ रही है तिमिर-नरकासुर पर
सत्यभामा की तरह।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नाख़ून के निशान

—डॉ. बोयि भीमन्ना

प्रेयसी के नाख़ूनों की नोच
कहलाती है काव्यशास्त्र में—'नखक्षत'
वही विषकन्या की पहुँचाई चोट हो तो
कहलाती है—'नखाघात'
नखक्षत स्वपक्ष है
नखाघात विपक्ष है
पर नख तो निष्पक्ष है।

सहस्रदल सौगन्धिक
मेरी जीवन है
मेरी हर राका पूजा-दल है
मेरे प्राणों के सारे दल
पूजा में दलित गलित हो चुके हैं,
फिर भी मैं कहलाता हूँ—दलित

दुनिया में
नैतिकता-अनैतिकता में
कोई अन्तर नहीं है
जिसमें अपनी सुख-सुविधा है
वही नैतिक है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जिस से औरों को सुख मिलता है
वही अनैतिकता बन जाती है।

आराधक सबको सुन्दर पाता है
पर द्वेषी को ईश्वर भी दोषी दिखता है
रसाल सदा रस का आलय रहता है
पर तुम को कोयल बनना है या कुठार
यह बिल्कुल तुम्हारे ऊपर है

आगे कहीं कुछ आलोक अवश्य होगा
अन्यथा तुम आगे कैसे बढ़ पाते
तुम्हारे पीछे भी बहुत सारा लोक है
पीछे और अँधेरा मत छाने दो।

अच्छा-बुरा एक-दूसरे के विरोधी हैं
एक अपना पक्ष है और दूसरा प्रतिपक्ष है
अच्छा क्या है, बुरा क्या है—
प्रश्न यह नहीं है,
प्रश्न है बहुमत का, मैजॉरिटो का।

अपने-अपने विश्वास में अपने को ईश्वर मिलता है
पागल को अपने पागलपन में ही आनन्द मिलता है
किसी की क़ब्र किसी के लिए मन्दिर बनती है
किसी की खोपड़ी किसी की थाली बनती है।

क्या तुम शंकर जैसे समाजवादी हो ?
वामन जैसे राजनीतिज्ञ हो ?
बुद्ध जैसे मानवतावादी हो ?
तब तो तुम भीख माँगने की योग्यता रखते हो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाबू, आप मुझे जानते तो नहीं हैं,
पर मैं आप की जाति का हूँ
जाति निर्मूलन दल का उम्मीदवार हूँ
एक बार अपना मत देकर मुझे
दिल्ली पहुँचा दो
फिर कभी इधर
मुँह नहीं दिखाऊँगा—
सौगन्ध खाकर कहता हूँ।

साहब का अल्सेशियन कुत्ता ही तो कुत्ता नहीं है,
हर कुत्ता कुत्ता ही तो है
घर पर बाँध कर पाला-पोसा तो
वह भी कुर्सी पर बैठेगा
ठाठ दिखाएगा, राज चलाएगा

नीचे गिरे पत्तों को क्यों कुचलते जाते हो
उन को इकट्ठाकर जलाकर तो देखो
उस ज्वाला में तुम देख पाओगे—
गत वसन्त के दलित किसलय की विगत शोभा
उस धुएँ में दिखेगी विगत आशयों की आह
उस राख में मिलेगा विगत वैभव का चिता-भस्म।

गुण्डा-गर्दी के जन्मदाता कौन हैं ?
प्राकृतिक न्याय से वंचित प्रजा
पर उसको बढ़ावा देने वाले होते हैं—
न्याय से आँख चुराने वाले नेता-निर्णेता

समाधानहीन समस्माओं से जूझकर मरने की अपेक्षा
उनको समस्या ही न मानकर जीना बेहतर है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रकाश के लिए छाया समस्या नहीं बनती है
पर छाया का मूल कारण तुम्हारी दख़ल है ।

भड़काती है—राजनीति
भेद मिटाती है—कविता
राजनीति कुरुक्षेत्र है
तो कविता बृन्दावन है ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंजाबी	लालसिंह 'दिल'
	हरभजन हलवारवी
	अवतार
	सरोव सुवीप
	मंजीत टिवाणा
	(रूपान्तर—डॉ० हरभजनसिंह)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देश-प्रेम

—लालसिंह 'दिल'

तेरे नीले पर्वतों के कारण नहीं
न नीले पानियों के कारण
यदि ये बूढ़ी माँ के बालों जैसे होते
बर्फ़ के गाले जैसे भीं होते
तो भी मैं तुझे प्यार करता
दौलत के ये ख़जाने
मेरे लिए तो नहीं
भले ही नहीं
प्यार का कारण कोई नहीं होता
झूठ कभी निरुद्देश्य नहीं होता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पिघले हुए पल

—हरभजन हलवारवी

उमर के वे दिन जिन्हें सूखा मार गया
सांस में से गुज़रते सारे के सार पल
यों लगते हैं
जैसे नंगे पाँवों में चुभते कंकर
फ़र्श पर बिखरे काँच के टुकड़े
जिन्हें बर्दाश्त करते-करते
हम भूल जाते हैं
हरी घास पर चलने का
स्वाद कैसा होता है
फूलों की घाटी में से गुज़रने का
एहसास क्या है
क्षितिज पर पौ फटती है तो सिन्दूर
कैसे गिरता है
आकाश पर सुरमई सन्ध्या के पंख
कैसे फैलते हैं

फिर कभी वह समय भी आता है
कंकरों जैसे सारे के सारे पल
अचानक पिघल कर बहने लगते हैं
पत्थरों में कल्लोल करती
पहाड़ी नदी जैसे लगते हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हम इन्हें ओक भर कर
पी सकते हैं

बर्षों की तल्ख़ प्यास
सूखा मारे दिनों का एहसास
हमारे निकट नहीं होता
लहरों का ठण्ड़ा सुबक स्पर्श
जिस्म में कम्पन का
संगीत भरता है
पिघले हुए पलों की नदी के
इस ओर हम होते हैं
पिघले हुए पलों की नदी के
उस ओर फूलों की घाटी होती है
उस समय यह नदी
पिघले हुए पलों का
पानी भी होती है
और पुल भी
जो हमारे जिस्म और रूह के
आर-पार होता है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रवासी

—अवतार

मेरे लौट आने तक
किस किनारे पर नौका खड़ी होगी
किस चौराहे पर बादल बरस रहा होगा

मेरे लौट आने तक
मेरी उमर के सभी वृक्ष मर चुके होंगे
धूप और छाँह को सूना कर गये होंगे

मेरे लौट आने तक
मेरे माँ-बाप के फूल जा चुके होंगे
आंगन के सभी रंग धुल चुके होंगे

मेरे लौट आने तक
सभी संध्याओं के सूर्य अस्त हो चुके होंगे
मुझ से अनजान लोग अपने आप में मस्त होंगे

मेरे लौट आने तक
गाँव के पक्षी मेरा राग भूल जायेंगे
मेरे मित्र क़ब्रों में समा जायेंगे

मेरे लौट आने तक
गाँव के दरवाज़ों में पीठ-जैसी दीवारें होंगी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे लौट आने तक
मेरे लौट आने का चाव भी लौट जायेगा
मन समुद्र में कहीं ग़र्क़ हो जायेगा

मेरे लौट आने तक
मेरा गाँव मेरे लिए परदेश बन जायेगा
मेरा अपना वेश चाँदी के रंग-सा हो जायेगा

मेरे लौट आने तक
मेरे लौट आने तक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इबारत एक पत्र की

—सरोद सुदीप

वैसे तो उदास नहीं होता मैं
छोटी-छोटी बात पर हँसी आ जाती है
माँ का पत्र आया—बेटा तेरे पाँव बहुत दूर चले गये हैं
तब जलती-जलती सिगरट जल गयी
जहाज़ आये होंगे, चले गये होंगे
सभी द्वार खुले हैं, एक भी गुज़र जाने के योग्य नहीं
कल नींद नहीं आयी तो न सही
कहीं न कहीं कोई ख़ुशी बैठी होगी
उसके पास जाओ और कहो :
यह भी एम फ़ालतू भ्रम था

मधुमक्खी एक फूल पर बैठती है,
फिर दूसरे पर फिर तीसरे पर
और उड़ जाती है
चश्मे ने तुम्हें देखा और उसे तुमने
और बात ख़ुदग़र्ज़ी पर आकर ख़त्म हो गई

कल जो पल जाग उठा था
वह आज बुझ गया है···
बच्चों समेत कबूतरी खा ली गयी
और कबतर शाम तक
टूटे हुए पंखों के इर्द गिर्द गुटकूँ, गुटकूँ करता रहा···
सारा ब्रह्माण्ड है, बहुत कुछ जानने योग्य है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किन्तु मेरे पास आते-आते एक प्रश्न
कुछ दूरी पर खड़ा हो जाता है
एक मज़ाक़ की तरह…

माँ के पत्र का उत्तर लिखने के लिए बैठा था
लिफ़ाफ़े पर मेरा अपना पता लिखा गया है
वैसे तो उदास नहीं होता मैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कब पता था

—मंजीत टिवाणा

कब पता था कि चिन्तन और प्रेम सौतेली बहनें हैं
जो हमेशा लड़ती झगड़ती रहेंगी···

कब पता था कि मेरी सब से क़ीमती सोच
दुर्घटनाओं में मर जायेगी···

कब पता था कि आत्मा पवन के वस्त्र पहन कर
चुपचाप सोये दरिया का माथा चूम कर लौट जाया करेगी···

कब पता था कि मेरी काली चुनरी में
दोस्तों के दिल तारों की तरह टिमटिमायेंगे···

कब पता था कि चाँद और सूरज
मेरी साईकल के पहिये बन जायेंगे
रास्ता मेरे क़दमों के नीचे चक्कर काटेगा···

कब पता था कि नदी की नग्नता उसके वस्त्र बन जायेगी
कब पता था कि सारे का सारा समुद्र हारमोनियम बन जायेगा
और हवा की उँगलियाँ सजन के पपोटे

कब पता था कि जब तुम मेरी कविताएँ पढ़ोगे
तुम्हारे अन्दर उगे वृक्ष और जामनी फूल खिल जायेंगे···

कब पता था कि रात की जिल्द के अन्दर
दिन—सफ़ेद काग़ज़ों की तरह जड़े जायेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कब पता था कि एकाकीपन नाम की नदी के ऊपर
नामों का पुल बनेगा
किन्तु रिश्तों का शहर नहीं बस सकेगा···

कब पता था कि कामपोज़ की गोली बिचोलन बनेंगी
नींद के साथ मेरी सुलह कराने के लिए···

कब पता था कि मेरे दर्द की दवा जेब में डालकर
वह पाकिस्तान चला जाएगा और लौट आएगा···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बांग्ला | प्रणवेन्दु दासगुप्त
सुनील गंगोपाध्याय
शक्ति चट्टोपाध्याय
आलोक सरकार
(रूपान्तर—सिद्धेश)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सब के लिए

—प्रणवेन्दु दासगुप्त

तुम सब जो पानी में डूबे हो
तुम सब जो किनारे

तुम सब जो सुखी हो, स्कॉच की बोतल खोलते हो शाम को
तुम सब जो नींद की गोली खाकर भी सो नहीं पाते रात में

तुम सब जो भागते-दौड़ते रहते हो घोड़े की तरह
तुम सब जो घर के बीच भी निश्चल

तुम सब जो पक्षी की तरह बौने डैने से उड़ते हो आकाश में
शिकारी का तीर व्यर्थ लौट आता है

तुम सब जो पिल्लू की तरह बहते हो गन्दे पानी में
मरने का सुअवसर न पाकर ज़िन्दा हो

तुम सब जो बहुत जानते हो, साहित्य संस्कृति
छुरी-काँटे की तरह एकदम अनायास ही चला सकते हो

तुम सब जो समझना चाहकर भी समझ नहीं पाते
पॉर्नोग्राफ़ी पढ़ते हो, वह भी छिप-छिपाकर,

सब के लिए मैं अब बताना चाहता हूँ

बिल्ली उचककर आज चहारदीवार फाँद गयी है
इधर-उधर दोनों तरफ़ एक ही शून्य।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भोर की मुखाकृति

—सुनील गंगोपाध्याय

भोर की मुखाकृति कहाँ छिपा रखते हो सारे दिन ?
दिन सारे 'रेफ व रफला' देकर लिखा
स्नेह गलता है धूप में, रोमछिद्रों में भर उठती झाँझ
हँसते हुए चेहरे यही एक-दूसरे के कानों में ढालते विष
पक्षी नहीं पिंजड़ा हिलता-डुलता, बेकार की दौड़
जूते के नीचे धूल धूल नहीं साबुत बारूद
तुम्हें देखता नहीं क्यों, देखकर भी पहचानता नहीं
भोर की मुखाकृति कहाँ छिपा रखते हो सारे दिन ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्मारक

—शक्ति चट्टोपाध्याय

दो बूढ़े सिल्वर ओक कानों ही कानों में फुसफुसाते हैं—
सामने ही पोर्च, आरामकुर्सी पर बैठा है सोता स्मारक
मनुष्य का। आँखों, कानों, जीभ व सूराख़ों में चींटें घुसकर

जो भी जीवित नहीं, मृत माँस दाँत से पकड़े हुए।
सक्रियता बढ़ जाती है मृत के भीतर···
गोलपोस्ट सहित मैदान पड़ा रहता है खिलाड़ी विहीन।
व्यर्थ व बेकाम बंसीवाला केवल समय बिताने
के फेर में है, शाम होती है, खेल की तरह मरता दिन।

दिन डूबकर शाम, किश्तों में बँटी रात
उसके बाद तत्परता बढ़ती है घर-घर प्रकाश की।
तुरन्त बाद पूरब आँगन हो उठता है जंजालविहीन
मेघशून्य आबो-हवा के बीच उतर आता है गेरुआ प्रभात
दिन उठते ही। दिखता है महाशून्य के बीच एक
अर्द्धशत वर्णोच्छ्वास ज़िन्दा है, स्मारक बना है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भगवान

—आलोक सरकार

मेरा वही उत्सव, उसका आयोजन,
कितना कठिन आयोजन, कितना
श्रम और जागरण और वही अपेक्षा

अपेक्षा ही प्रधानतः श्रम, मैं
इसी तरह सोचता हूँ। जागरण भी
एक अपेक्षा। मेरी सोच अभी
अपेक्षा की तरफ़ अभिमुख।
प्रकाश-सज्जा अब और वैसी हलचल नहीं
यहाँ तक कि तपता धुँधला वातायन
मेरी सोच अभी एक अन्धकार गली

अपरिचित एक पहल, पीछे
क्या है वह भी अवान्तर प्रसंग
गली पीपल पेड़ के समक्ष, समझ काँटेदार पेड़

और वही जागरण ताज़ा रक्तिम एक
श्रम-मेरा वही उत्सव
निश्चित और अडिग वही उत्सव

कितना कितने दिन की प्रस्तुति, संवेदनशील और
स्वतःस्फूर्त लगातार दीपावली—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आधी रात और निरन्तर दीपावली
गली बढ़ रही है—गली
पार हो रही है जमी राख की ढेर
उसकी कोई क्लान्ति नहीं। क्लान्ति

नहीं है उसे ? क्यों क्लान्ति नहीं ? अयोजन
स्फूर्त्त और अनिवार्य-भगवान
इस बार देख रहे हैं नीम का पेड़, चूहा उछलकर घुसा बिल में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मराठी | कुसुमाग्रज
शरच्चन्द्र मुक्तिबोध
केशव मेश्राम
द० भ० धामणस्कर
नारायण कुलकर्णीकवठेकर

(रूपान्तर—डॉ० चन्द्रकान्त बांदिवडेकर)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वापसी

—कुसुमाग्रज

दग्ध और
पंखहीन होकर इस तरह
तुम्हारे द्वार पर आऊँगा कभी
ऐसा मुझे लगा ही नहीं था।
अनेक बार आया, मिला
और बदस्तूर सुलगा भी।

लेकिन उस समय तुम विषय थीं
कभी भावनात्मक विलास का
कभी पार्थिव अनुसंधान का
कभी रीते मन के ज्वार का
तो कभी केवल
शब्दों के लिए गायी गयी आरती का।
लेकिन उस समय मैं
आकाश में परिभ्रमण कर रहा था
पंखों के बल पर अपराजेय—
वैनतेय की मुद्रा में।

आज पंखों के साथ अजेयता
जल कर हुई है ख़ाक
अपने ही जलाये हुए दावानल में,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और मैं खड़ा हूँ पुनः
तुम्हारे द्वार पर
पूर्णतः तुम्हारा होने के लिए
अवमानों के साथ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खेल

—शरच्चन्द्र मुक्तिबोध

घोड़े चौखूंट दौड़े : सीने फटे : अर्रा कर गिरे
एक बचा : सजा-संवार कर उसे शोभा-यात्रा में ले आये
वह देखो उसकी लगाम पकड़ कर
हाथ ऊंचा उठा कर कैसे हँस रहा है :
औरों को खींच-खींच कर ले जाया गया
आँख ओट कर दिया गया :
उसकी हँसी देख कर तो मैं डर गया।
अलवत्ता मैं यहीं बैठा था
सदा सर्वदा यहीं बैठा था

एक-एक सीने में फट रहा था : आँख ओट होता जा रहा था
उसके ख़ून पर शुभ्र बालू फेर कर जल्दी से
आँगन साफ़ होता जाता था
उसकी वह हँसी देख कर तो मैं डर गया।

अलबत्ता मैं यहीं बैठा था।
सदैव यहीं बैठा था।

फिर पता नहीं कैसे, एक दिन
असह्य हुआ, बहुत हो गया, दौड़ा
अपने को पूरी तरह भूल गया
दाँत पीसकर, ओठ काट कर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुट्ठी भाँजने लगा
बेरोक चिल्लाने लगा
वह सिर्फ़ मेरी ओर देख रहा था :
उसने शान्ति से हाथ ऊपर उठाया : और…
तालियों की गड़गड़ाहट हुई
एक ही हर्षनाद हुआ, "ख़ूब अच्छे, बहुत अच्छे"
और क्या, क्लिक, क्लिक, तस्वीरें ही तस्वीरें…

अब तो स्वाभाविक ही : सफ़ाई से मुट्ठी भाँजने लगा—
स्वाभाविक ही : सलीक़े से दाँत-ओठ भींच कर
चिल्ला-चिल्लाकर

दिखाने लगा : और बिल्कुल सिलसिले में ही
झुक-झुकर अभिवादन करने लगा : सिलसिले में…

इस तरह अब एक के स्थान पर दो खेल शुरु हो गये,
पके पत्तों की राशि ऊँची ही ऊँची होती जा रही है आस-पास
हाथों पैरों पर चींटियाँ चढ़ कर गन्ना कुतर रही हैं
पुतलियाँ देख रही हैं
मैं अपने ही अपसे से डर गया हूँ

पके पत्तां की राशि ऊंची ही ऊँची होती जा रही है
मैं वहीं हूँ जहाँ था वहीं बैठा रहनेवाला हूँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अक्षर पत्थर ही बनते हैं

—केशव मेश्राम

घोटे हुए पत्थरों पर ओटी हुई गरमी
अभंग चट्टान पर सरसराते साँप की तरह
पराकाष्ठा का त्वेष है जिसकी आँख में
पत्थर को नीला काला करनेवाले दंश की फटकार में

म्लान श्लथ मरियल झाग से तर मानवीय बस्ती
डरे सहमे झाड़-झंखाड़ कड़ुआ ज़हर चुपचाप
कुओं के गर्भाशय भी तड़के हुए शुष्क अपार
बहती है आग ही वायु में ऐसे आभास काले स्यार

ढोर-पाँखियों के करुणार्त्त विवश स्वर चू रहे हैं बाज़ार
मन के वात्सल्य की भी सूख गयी है चिरतन धार
हमला बोल आये हैं पुराण के प्रलय और नरक के वर्णन
और ज़िन्दा मनुष्यों की पूरी तरह हुई है खींचतान

छिली मुर्ग़ी की तरह नज़र और धूप का भार ऊपर
इतस्ततः बिखरे हैं, डैने अकाल के कामों के बंजर पर
पिचके गालों में खोजो भवितव्य तो दिखेगी खाँच में निराशा
बित्ते-भर धँसे पेट में चिनी हुई आज़ादी और ओठों में भरी हुई भाषा

मेरे अपने लोगों का यह आर्त्तनाद, आक्रोश और पुकार
अख़बारों पत्रों और गपोड़ों से कान पर आते हैं बेसुरे स्वर
मन्त्रालय की भक्कम भित्ती के पीछे बैठे बुतों को थोड़ा काम देते हैं
योजनाओं के कागज़ों पर घोटे हुए अक्षर पत्थर ही बनते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पतझड़

—द० भा० धामणस्कर

भेंट हुए बहुत दिन हुए होंगे
उस बार जब आये थे
सामनेवाले पेड़ पर ढेर सारे पत्ते थे
और तोते ।
निश्चिन्त बैठकर देखा करते थे यहाँ वहाँ
जैसे मायके आये हों
आकाश भी तब सुन्दर नीला था
नीले समुद्र की तरह
लगता था कि धूप में चलते हुए भी
ईश्वर का वरद हस्त पीठ पर था हमारी

अब अकिंचन वृक्ष पर कभी-कभार
आ बैठते हैं भटके बगुले
मुझे लगता है कि ये बगुले नहीं हैं
ये रंग उड़े तोते हैं
पुरानी पहचान की आशंका से वे भी
मेरी ओर देख रहे हैं—आँखों में
पहचान का किंचित् भी आश्वासन नहीं
पत्ते झर जाने के कारण शायद
मेरे कंकाल को उन्होंने
बिल्कुल ही नहीं पहचाना···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घरघराहट

—नारायण कुलकर्णीकवठेकर

उन्होंने हमें पाक-साफ़ रखा
माँज कर झकाझक।
पोंछ कर साफ़।
फ़िक्र हमारी इस तरह सर्वथा

हमें हमारी घिसाई
लगती थी अभिमान भरी
और एक महान् सात्विक आनन्द
कि कल के उत्थान में
हमारा नाम
नहीं होगा नींव के पत्थर पर खुदा हुआ
तो न हो

हम उनकी परवरिश से गद्गद्
उनके इशारे पर होशियार
उनके उकसाने पर क्रियाशील
उनके आशीर्वाद
उनका समर्थन
उनका मार्गदर्शन
उनका जादू
हम मानो
एक वर्दी में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपने को खोकर
धूप के छप्पर तले
वर्षा पीकर
ठण्डक ओढ़कर
उनके शब्दों की
गम्भीर प्रतिध्वनियाँ हम

एक दिन अचानक
अकस्मात्
देखा हमने उनको
स्नानगृह में
मिट्टी के पैरों को ख़ुश्क रख कर
स्नान करते हुए।

और बस
बदली उनकी नज़रें
मालूम हुआ हमको
अपने को अन्तःपुर से
हमारे लिए सुरक्षित किया था
फ़ासला उन्होंने

हमारी बेचैनी
हमारी तकलीफ़
हमारे तनावभरे चेहरे
निरखे उन्होंने
और किया हमें मुक्त
पीठ फेर कर,
रोका हमारा इस्तेमाल

हम अब रक्तहीन
सूनी आँखों से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जागते हुए देखते हैं सपने
तो वहाँ दिखती है
कल देखे सपनों की
घरघराहट।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मलयालम	एन. वी. कृष्ण वारियर
	ओ. एन. वी. कुरुप
	डॉ. के. अय्यप्प पणिक्कर
	सुगतकुमारी
	विष्णुनारायण नंपूतिरि
	(रूपान्तर—डॉ. विश्वनाथ अय्यर)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

त्रिपथगा[1]

—एन. वी. कृष्ण वारियर

हे भगवती गंगे ! पर्वतराज के
उत्तुंग हिमधवल अंक से निकलकर तुम
अपनी ही दया से रचे हुए पूरे आर्यावर्त को
जीवन से प्लावित करने के लिए
जीवों, शस्यों में रक्त और रस बनकर
यन्त्रों में वैद्युतिक ऊर्जा-वेग बनकर
अग्नि बन, ताप बन, पवन बन, शीतलता बन
घूमते चक्र का घुमाव बन, ज्योति बन
ओठों पर लगती प्याली का पानी बन
सामने तश्तरी पर भुनी मछली बन
दूध बन, दाल बन, पके फल बन, रोटी बन,
वसन बन, सुमन वन, पंछी का गीत बन
—यों मानव पर जीवन-भर कृपा-राशि बरसाने
प्रतिदिन जाने-अनजाने उसकी रची
मलिनताओं को दूर हटाने
आगे उसके मरने पर राख बना शरीर
वात्सल्य से गोद में लिये
भूतों के सूक्ष्म तत्त्वों में स्थूल तत्त्वों का

1. भारतीयों ने गंगा नदी के आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक इन तीन रूपों की कल्पना की है। पुराणों में बताया गया है कि गंगा भगवान वामन का चरणोदक है। यह कविता इन्हीं कल्पनाओं पर आधारित है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यथावत् विलय कर देने
पाप-पुण्य को छानकर समष्टि की हस्ती में
व्यष्टि-चिन्ता का विलय करने
बिना भेद-भाव के मानव को
भोग और मोक्ष का यथोचित दान करने
शम्भु की जटा छोड़, भगीरथ पर करुणा कर
पहले की ही तरह
पवित्र हरिद्वार की भू पर
समतलवाहिनी बनकर तुम बहती हो—
यह मैं देख चुका हूँ।

गंगे भगवती ! शून्य महाकाश के
गहन विवर के अन्तर की अव्यक्त दीप्ति बन
किसी सनातन स्थल-काल-अद्वय का
स्रोत लिये बहती हो—यह मैंने देखा है
अपने ग्रह-उपग्रह-परिवारों का संधारण करते हुए
धुरी पर चकरानेवाले
दस हजार करोड़ आदित्य तुम्हारी प्रवाह-धारा की
तेजस बुदबुद मालाएँ हैं।
अगर तुम्हारे एक तट से और किसी तट पर
कभी पहुँच जाना हो तो
शुभ्र श्वेत पंख मारते
रागारुण चंचु आगे बढ़ाते
नित्य प्रकाशपुंज के हंसों को
अविराम लक्ष वर्ष उड़ना होगा !

तुम्हारी सर्पिल आकार धारा की मध्य बिन्दु से
ज़रा-सा हटकर मैं
दूर की तरफ़ अपनी ख़ुर्दबीन मोड़कर
जब निरीक्षण करता तब देखता हूँ—
लाखों प्रकाश वर्षों के उस पार
तुम्हारी सहेली जमुना और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

—जहाँ तक दृष्टि जाती है वहाँ तक—
अन्य कितनी ही दीप्ति-स्रवन्तियाँ
तेज़ी से अलग-अलग बहती हैं
मानो आपस में रूठकर अलग बह जाती हों।
परस्पर दूर हटने पर भी—किसी प्रयाग पर
क्या तुम फिर से नहीं मिलोगी ?
परस्पर मिलकर एक हो जाने के बाद तुम
किस महासागर की ओर उन्मुख हो बहोगी ?

गंगे ! भगवती ! मेरे कपाल के भीतर
भरे हुए अनन्त मस्तिष्क-कोशों में
सहस्रदल श्वेत कमल में
उसके मध्य विराजे केसर में
अमृत-माधुरी का चैतन्य-सार बन
तुम घुलती हो—यह मैं जानता हूँ।
नित्य, निरन्तर और निरर्थक कर्मों से
इस क्लेश भरी जीवन की यात्रा में
धक्का देते, सांस के घुटते, लेते-देते
बड़ी थकान और ऊम्र के बढ़ते
मन में यही सवाल उठता है—
"ये सब काहे के लिए ?"
ऐन्द्रिय वृत्तियों के शान्त होने पर
अन्तर्मुख मन के शान्ति ढूँढ़ने पर
तुम्हारा मधु-स्रोत मेरे चेतना-केन्द्र में
मन्द-मन्द स्रवन करता जाता है
यह मैं जानता हूँ।

शत-शत धार बन फिर तुम मेरे तन में अणु-अणु में
धीरे-धीरे समा जाती हो !
मेरे रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि और मज्जा में
मधु-सागर बनकर तुम छलकती रहती हो !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपनी षडिन्द्रियों से मैं
इस पृथ्वी का व्यापक क्षेत्र जो आत्मसात् करता हूँ
उसके कण-कण में व्याप रही हो !
मैं उस सागर की बूंद हूँ; सागर भी बनता हूँ।
बूंद समुन्दर होती, समुन्दर बूंद होता,
फिर बूंद ग़ायब होती, सिर्फ़ सागर रह जाता।
ज्ञान, ज्ञेय और ज्ञाता—सब एक साथ मिलकर
एक आनन्द-संप्लव में विलीन हो जाते हैं।

गंगे ! भगवती ! जब तुम तुंग हिमालय का
उत्संग छोड़ नीचे उतर आती हो
जब नील महाकाश की सीमा में
नीहारिका का लोल रूप धारण कर
दूर-दूर बह जाती हो
मेरे सहस्रार मस्तिष्क-कमल की
मधु-बिन्दु बनकर छलक पड़ती हो !
अपने हर स्पर्श से वस्तु को
पवित्र बनाती दिव्य तीर्थ हो
यह मैं जानता हूँ।

आदि में जो आकाश, भूमि और पाताल
परस्पर मिले हुए एक रहे थे
उन्हें विश्वव्यापी विष्णु ने अलग-अगल करके
अपनो-अपनी जगह सदा के लिए प्रतिष्ठित किया था
भूत, भवद्, भावी के नाथ त्रिविक्रम ने
क्रीडा में अपना श्रीचरण जब उठाया तब
उसे देख विधाता उठे और
अपने कर का कमण्डलु झट ऊपर उठाकर
उस श्रीचरण का प्रक्षालन किया।
वही चरणोदक दिव की दीप्ति, भू का जल,
और मानव का चिद्रस है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गंगे ! भगवती ! जब तुम जीवन-धारा बन
मेरे देश की प्यास बुझाती हो
अव्यक्त दीप्ति बन काल-स्थल-अद्वय
रूपता के भीतर समा जाती हो।
सच्चिदानन्द का मरन्दकण बनकर
मेरी चेतना में छन-छन छा जाती हो !
सदा तुम वक्ष पर नित्य वीर्याद्भुत
त्रिविक्रम चरण की मुद्रा धारण करती हो !
उस मुद्रा से अंकित तुम मेरे मानस में
जो विराजती हो इसीलिए
मेरी तुच्छ मर्त्यता भी महनीय हो गयी है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धरती के प्रति चरमगीत (शोकगीत)

—ओ.एन. वी. कुरुप

अभी तक न मरी धरती ! तुम्हारी
आसन्न मृत्यु पर तुम्हारी आत्मा को शान्ति मिले
तुम्हारे (मेरे भी) अन्तिम संस्कार के लिए
हृदय-पट पर आज ही यह गीत अंकित करता हूँ।
मृत्यु का काला विषैला फूल जब खिले और
उसमें तुम कल सर्द हो जाओ तब
तुम्हारे निष्प्राण मुख पर अश्रुजल चढ़ानेवाला
कोई यहाँ न रहेगा, यह मैं भी न रहूँगा।
(इसलिए) में तुम्हारे लिए लिख छोड़ता हूँ
अभी तक न मरी धरती !
तुम्हारी आसन्न मृत्यु पर तुम्हारी आत्मा को शान्ति मिले।

बारह वंशों की जन्मदात्री डोमिन की माता !
तुमने परस्पर झगड़ती
अगणित सन्तानों को बड़ी पीड़ा झेल जन्म दिया।
एक का दूसरे को कच्चा खाना
अपनी आँखों से देखने पर भी
सब की नज़र बचाकर तुम आँसू पोंछती रहीं।
आगे वे तुम्हीं को थोड़ा-थोड़ा कर निगलते-निगलते
मस्त रहे, तब भी तुम उन्हें रोके बिना
सर्वसहा बनी रहीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हरी मृदुल चोली ज़रा-सी खोलकर
तुम्हारा पिलाया छाती का दूध पीकर बड़े बने ।
उन्हें प्यास लगी (आख़िरी प्यास)
उन्होंने तुम्हारे पवित्र हृदय का रक्त पीना चाहा ।
सूरज ने तुम प्रियवधू को जो पहनाया था
वह चित्रपट कंचुक फाड़कर
तुम्हारे नंगे बदन पर नाख़ून गड़ाये
धावों से रिसता ख़ून उन्होंने गटक लिया ।
उनके नंगे नाच की छम-छम से
जहाँ देखो वहाँ
मृत्यु का ताल अट्टहास करता है ।

अनजाने जननी को ब्याहे यवन-युवक की कथा
अब बहुत पुरानी हो चली ।
वसुधा के ये सपूत नयी कहानी लिखते हैं ।
वसुधा के वसन उतार लेते हैं
बाज़ार में उन्हें बेच शराब उँड़ेलते हैं ।
कुल्हाड़ी की धार अपनी लीला ज़ारी रखती है ।

धधकते सूरज की आँखों से
आग बरसती है, आक्रोश निकलता है ।
मौसम के बादल पीने का पानी खोजते हैं ।
आर्द्रा के दिन शीतलता ढूंढ़ते हैं ।
सावन एक नन्हा-सा फूल खोजते हैं
नदियाँ प्रवाह ढूँढ़ती हैं ।
सृजन-लय-ताल का क्रम बिगड़ जाता है
जीवरथ के चक्र लीक में धँसते हैं ।
चेतना-राका की एक रश्मि ही सही
जब तक शेष रहे तब तक
तुम से जन्म पाकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम से प्राण लिये हुए मुझमें
तुम्हारी स्मृतियाँ रहेंगी।

तुमने मेरी जीभ पर वशा और शहद की बूंद
प्रथम दिन जो दी उसकी आद्यानुभृति !
मेरे दीप के सदा के लिए बुझते समय
तुम तीर्थजल के रूप में मेरे भीतर
जो लीन हो जाओगी उसकी अन्तिम अनुभूति

तुम में जो दूर्वांकुर उगते हैं उनकी नोक के
तुषार की बिन्दु में भी
एक नन्हा सूरज है, उसे देख मेरे मन में
विस्मय-विभात का उदय हुआ है।
तुम्हारी तरु-पंक्तियों की छाया में
मेरी कामना-धेनु तृण चरती जाती है।
तुम्हारे सागर के जल-तल पर पवन ऐसे चले
जैसे कोई पैगम्बर चले थे।

मैं जानता हूँ
तुम हज़ारों ताज़ी फलियों का पालना
और लोरी बन जगी रहती हो
पेड़ों पर हज़ारों झूले रचती हो
बरगद के पत्तों पर बैठ थिरकती हो।
कबूतर बनकर तुम गुटर-गूँ करती हो
हज़ारों नदियों की तरगें बनकर
मेरे आत्महर्षों पर ताल देती हो।
शिरीष हो, शाल्मलि हो, कनेर हो
नये-नये छत्र जो बदलती हो
उल्लू की आवाज़ बन सब को डरातीं तुम
कोयल की कूक बन भय भगा देती हो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मानस में रंगोली भरने के लिए
सौ-सौ रंग डिबियों में समेट लेती हो
सायं बेला को सुनहली बनातीं
संध्या को लिये हुए वन में ग़ायब होतीं
फिर ऊषा को कन्धे पर ले आतीं
मुझे भी जगाने, मुझे अमृत चखाने
कदलीवन के हृदय-नीड़ में एक सारिका का अण्डा
सेते-सेते कविता विकसित कर लेतीं
जलकण जैसे तरल मेरे जीवन के लिए
कमल-पंखुड़ी-सा अवलम्ब बनतीं।

जानता हूँ मुझमें तुम समा जाती हो
तुम्हारी ये स्मृतियाँ ही मेरे लिए अमृत हैं।
डैनों पर संगीत वहन करते हे कलहंस!
तुम्हारे प्यारे पंखों के
पिच्छ की नोक पर
पल भर तो वही सही
मेरे जीवन का मधुर सत्य उज्ज्वल रहा है
वह बुझ जावे—तुम अमृत को भी
मृत्यु का बलिकाक चोंच मारे···
मुण्डित सिर, भ्रष्टा तुम
सौर मण्डल के बीहड़ पथ से
शील-भंग की बोरियाँ ढोते
सन्तान पाप की उतरन लिये हुए
सूने से दिल में
तीखी व्यथाओं की ज्वाला बन जो जा रही हो···
इस यात्रा में
क्या कराल मृत्यु शिराओं के ज़रिये भीतर समा नहीं रही है?

अभी तक न मरी धरती!
यह तुम्हारा मृति-शान्ति गीत है।
यह तुम्हारे (मेरे भी) अन्तिम संस्कार के लिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हृदय में आज ही अंकित गीत है।
तुम्हारे निष्प्राण मुख पर अश्रुजल चढ़ाने विलाप करने
यहाँ मैं नहीं बचूँगा
इसलिए इतना ही लिखता हूँ :
अभी तक न मरी धरती !
तुम्हारी आसन्न मृत्यु पर
तुम्हें आत्मशान्ति मिले !
मृति में तुम्हें अमृत शान्ति मिले !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हवाना

—डॉ. के. अय्यप्प पणिक्कर

लहराते-लहराते कभी अन्त न होती लहरो[1] !
तुम कौन-सी कहानी सुनाती हो ?
ख़त्म न होते इन झागों में, भँवरों में
कौन-सा मर्म तुम गुनगुनाती हो ?
क्या इस नये देश की वीरगाथाएँ ?
या पुराने दिनों के समुद्री डाके की
आह-भरी उत्पीडन की गाथाएँ ?
या पीछे यहाँ चले उपनिवेशी शासन का
दुःखान्त भेरीनाद ?
या लौह-सींखचों में तिलमिलाते दासों के
संस्मरण-संकीर्तन ?
कौन-सी कहानी सुनाती हो ?

लहराते-लहराते गरजती लहरो !
कौन-सी कहानी सुनाती हो ?
होटल हवाना लिबरे[2] से मैं

---

1. हवाना नगर से देखेने पर कासाब्लांका के सामने वाले द्वीप का लाइट-हाऊस और उसके चारों ओर के सागर की अथक तरंग-धारा दिखायी देती है।
2. प्रसिद्ध हवाना हिलटन होटल । स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद इसका नाम 'स्वतन्त्र हवाना होटल' रखा गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हारा गर्जन सुन रहा हूँ
उच्चण्ड-प्रचण्ड प्रघोष ताल
हृदय के समुद्री क्षितिज से लिपटी
उमड़ी-घुमड़ी पंखुड़ियाँ बिखेरती
लहरों का उत्तुंग गंम्भीर संगीत !
कभी न झुकते शीर्षों को देखने की स्वाभिमान चेतना
कविता के सामने खड़े[1]
पुरुषार्थी वीर सैनिक का मन्द्र नाद
संगर में लड़ते मर-मिटने पर भी पुनर्जन्म पाये
पुरुषार्थ का सोत्साह गरिमा का रूप !
कभी न थकते झागों में, भंवरों में
कौन-सा मर्म तुम गुनगुनाती हो ?

दोस्त और दुश्मन लहरों को फलांगते पहुँचते हैं
दुश्मन को तलवार से काटती भुजा से ही
दोस्त को गले लगाते हैं
मिलकर, गले लगकर
हर्ष से उल्लास-समारोह रचते हैं
लहराते-लहराते ज़रा भी न छीजती लहरो !
कौन-सी कहानी सुनाती हो ?
क्या दहकते सूरज को दिवा-ज्योति पीकर
उफनाता ईख का मधुजल बाँटनेवाले[2]
मीठे शक्कर के मधुर गीत ?
या गन्धयुक्त वर्णयुक्त परिवर्तन के
गरम खून बहाते शक्ति के गीत ?
मुझे आज विदित हो रहा है कि
तुम इस छोटे महान् देश की
शिराओं की धड़कन की

---

1. निकोलास धीय को आशान पुरस्कार देते समय फीडल कास्ट्रो ।
2. क्यूबा के प्रमुख निर्यात—चीनी और चुरुट (तम्बाकू)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लहरों का ताल हो, वृत्त हो, राग हो
अभिनन्दन हो, तालियाँ बजाती हो !
अटूट अथक झागों में भँवरों में
हँसी बिखेरती अट्टहास करती हो
बन्द कभी न करती।
बाजे बजा-बजाकर नाचती-गाती हो
लहराते-लहराते कभी न थमती लहरो !
क्या यही कथा सुनाती हो ?
इन कभी थमते-न-थमते झागों में भँवरों में
क्या यही मर्म गुनगुनाती हो ?

तम्बाकू का चुरुट जलाते-जलाते
नया साम्राज्य-लोभ जल जावे—यह समझने-समझाने
नये पल्लवों के ताल से तरलित बागान व्यग्र हो रहे हैं।
स्पेन की संस्कृति[1] के नशे से लिपटे
दोरंगे 'रम' में धड़कती
समभावना हो, वर्ण-संकर के सौहृद की सुषमा बन
हृदय की झाँकियाँ उफना रही हैं।
आगे लम्बी मंज़िल है तो क्या हुआ ?
ये पहाड़, ताड़, सफ़ेद बदरियों से भरा नीला-नीला आकाश
सहयोगी साक्षी बने हैं। इनके सामने
प्रभात और सन्ध्याएँ चुनौती देती हैं।
मेरिया, सारा और गोणसाल्व्स[2] मिलकर
गिटार के तार झनझनाते हैं
इनसे गूँज उठता—गवेरा गवेरा—वह मृदु मन्त्र

---

1. स्पेनी और हब्शी खून के मिश्रण से बनी संस्कृति ही क्यूबा में मिलती है।
2. धीय की रचना 'गवेरा पर शोकगीत' तीन लोग मिलकर गिटार पर गाते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भीगे नयनों से सुन मौन निकोलस धीय के
गाल लाल होते हैं।

कोई प्रभात हो तो उसकी प्रथम किरण होकर
कोई उपवन हो तो उसका प्रथम सुमन बनकर
करीबियन सागर की लहरों की सुषमा बन
चिरन्तन दुरितों का अन्त हो, दुलारा हो
नवचेतना का मान्त्रिक खिलता है, खिलाता है।

एक लिंकन का स्मरण हम करते हैं, आगे
एक लेनिन, मुसोलियन की याद आती है
एक गांधीजी याद आते हैं।
यहाँ क्या एक रण-प्रांगण की चेतना
या बलिदान की सुरभित स्मृतियाँ
या मानवता का चिरमधुर स्वप्न निश्वास भरता है ?
अपने कर्त्तव्य को औरों पर न ठेलनेवाले
पुरुषार्थी का साहस
बोलीविया के वन-बाँसों से टकराकर
वह भी गोरिल्लों की मृत्यु का धधक रहा है।

लहरो ! क्या उस भीषण तूफ़ान से बने सौन्दर्य को
दिन-रात यों झंझोड़ रही हो ?
दूर-दूर सागर को पार कर थकी हुई
तड़फड़ाती मनुज-चेतना को
क्या तुम ही सुषमा देती हो ?
लहरो ! इस प्राचीन नगर के नज़दीक
परम्परागत गरिमा से भूषित प्रान्तर में
जनराज्यवादी होसे मार्ती[1] के कर की
सेवा पायी हुई सांस्कृतिक भू पर

---

1. जोस मार्टी (1853-95) क्यूबा के स्वतन्त्रता आन्दोलन के नेता-कवि और गद्यकार।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक पुराना दुमंज़िला भवन
उसके एक छोटे-से कमरे में षोडशी कैथरीन।
उसका मँगेतर प्रेमी शिल्पकार
मुझ अतिथि को लेकर वहाँ पहुँचता है ।
एक लोकगीत[1] गूँज उठता है
चटुल चरण चलते हैं, अँगुलियाँ खिलती हैं
किसी अतीत में बीता कथांकुर
कहीं सुनी और भूली संगीतिका
कहीं हाथों से सहलाये तालवाद्यों में
फड़क उठते पाँवों की थिरकन, नृत्त-धारा।

वापस आते हुए पथ पर फूला पल्लवित होता
कुन्नल देश का[2] सागरतट जगमगा रहा है
वहाँ किसी अनजाने ग्राम की सीमा पर
कवि-जन्मभू पर[3] विहरती लहरो !
तुम नयी विश्व-मैत्री की
एक नव-मर्त्य दर्शन की गरिमा गाती हो।

वरदेरो[4] के सिक्तामय सागर के तीर पर
कितने ही पर्यटक आते ही रहते हैं
लहरें गिनते-गिनते पवित्रता खोजते
उन्हें कैसा दान देती हो ?
तुम इस प्रिय भू की परिक्रमा करती
ग्राम के लोकगीत गाती जगकर जब देखती हो तब भी
उस पार अणुवम गुर्रा रहा है[5]

---

1. क्यूबा का लोक-संगीत बड़ा सशक्त है, यहाँ का लोकनृत्त भी।
2. केरल का एक गाँव।
3. कुमारन आशान की जन्मभूमि।
4. दस मील लम्बा और तैरने की सुविधा से युक्त वरदेरो समुद्रतट।
5. अमरीका क्यूबा से सिर्फ 90 मील दूर है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंगारे के कालीन पर झूमती है मानवता ।
वैज्ञानिकों की शालाएँ चौंकती धुंधआती हैं ।
फिर भी तारों के नीचे
सपनों का हरित संगीत ! तुम्हारा नया कैबरे[1]
भद्दे अंग-प्रदर्शन से रहित
नया नृत्तोपहार—खिल उठते है
उन्हें देख दर्शक सराहते खुश होते हैं, तालियाँ बजाते हैं ।

तुम मेरी शिराओं में लहराते लहराते हर्षनाद करो
तीरों पर दूर झील के किनारों पर
सौवर्ण सुगन्धी केरल का बाग़ जाग उठे
केरवृक्ष सोपान संगीत आलाप करें
मोहिनी नृत्त नवराग ताल बने

लहराते-लहराते बन्द न होती लहरो,
तुम यही कथा सुनाती हो
न कँपते न थकते झागों में भँवरों में
यही मर्म गुनगाती हो !

---

1. खुले मंच की ट्रापिकाना नामक संगीतिका ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुरिंजिपुष्प

—सुगतकुमारी

कहते हैं—
पूर्वी पहाड़ के ऊँचे तल पर
उस दिशा में जहाँ मैं कभी चढ़ नहीं पाता
एक जगह समुन्दर-सा नीला कुरिंजिपुष्प खिलता है

कहते हैं—
वहाँ मामूली हवा नहीं बहती।
वहाँ फूलों की ख़ुशबू से महकती हवा चलती है।
उसे कान्हा के बदन का रंग मिला है।
उसे पीते ही रहने की इच्छा जी में होती है
जो कभी नहीं भरती।

कहते हैं—
वहाँ आकाश हरा-हरा रहता है
प्रकृति ओठों की मन्द हँसी को रोके खड़ी है
वह स्थान प्रभु के मानस-सा स्वच्छ व दयार्द्र है।

कहते हैं—
तम से आवृत पर्वत मौन हो
दिनों तक साधना करेगा
बारह वर्ष का युग बीतने पर
अरुण नील आभा बिखेरते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुरिंजिपुष्प फिर से खिलेंगे।

क्या फूलों ने आवाज़ दी ? पंख अचानक फड़फड़ाये ?
चमके ? झमके ?
कोटि-कोटि जीव-चलन ? गूँजेंगे तानपूरे ?
फिर से उत्सव शुरू ?

जानती हूँ
बारह सालों में सिर्फ़ एक बार कुरिंजिपुष्प खिलते हैं
जब वे नये सिरे से खिलेंगे तब
मेरे पाँवों में क्या पहाड़ पर चढ़ने की ताक़त रहेगी ?
बुढ़ापा चुपके से आ द्वार पर खड़ा है।
वह चेतावनी देता है—"अतिलोभ छोड़ो, संयम रखो।"
मैं रटती हूँ—"तुम्हारे लिए तुम्हारी छोटी सन्तानें
वह बहार देखेंगी।"

मगर क्या कल मानव कुल्हाड़ी, आग
और गीध की आँख ले उधर भी नहीं पहुँचेगा ?
क्या वहाँ रबड़ की क़तारें खड़ी होंगी ?
क्या वहाँ योजनाएँ कोलाहल करती पहुँच जाएँगी ?
अगले बारह वर्षों के बाद
फिर से पूर्वी पहाड़ पर क्या कुरिंजिपुष्प खिलेंगे ?

अब पूरे बारह वर्ष बीतने हैं।
पागल मन बकता है—"अब इतना
लम्बा इन्तज़ार कर नहीं पाऊँगा।"
उड़ती चिड़िया-सा मन उसी तरफ बढ़ता है
झागभरे कुसुमसागर की लहरों में जा गिरता है
दूधिया चाँदनी से उस सागर में नहाता है पंख मारता है।
रुदन, ताप और धूम से घुटते
इस नगर के सूने मन को लक्ष्य कर
वह दूर से मधुर कूजन और
असुलभ सुनील चेतना भेजता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

युगलप्रसाद[1]

—विष्णुनारायण नंपूतिरि

हे आरण्यक ! जर्जरवेष !
प्राकृत ! पांसुस्नात !
स्वच्छ-चन्द्रिका-स्नात नगर से
अपनी पदचाप छुपाये
आँगन के ताज़े फूल-पौधे व वेलें
गोद में समेटे
परछाईं से पुलियाँ और चौकियाँ
तेज़ी से लाँघकर
प्रभाती कुंकुम के झड़ जाने से पहले
बड़े वन में पहुँच जाते हो।
तुम्हें मैंने अपने प्राणों में प्रतिष्ठित किया था
ओ सच्चे महात्मा !

भीगे नयनों से मैंने फिर
तुम्हारा पुण्य कर्म देखा।
बिखरे नभ-खण्ड सदृश्य लहराते श्याम सर
अर्जुन और पुन्नाग की इन्द्रधनुषी
पुष्पवर्षा के स्थल में
वन-गज और वन-मार्जार के मदजल से
सुगंधित शिला की दरारों में

---

1. विभूतिभूषण वंद्योपाध्याय के उपन्यास 'आरण्यक' का निराला पात्र। कथावस्तु का घटनास्थल पूर्णिया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नर्तन करते मोरों के पंख
जिन टीलों पर झड़ते हैं (वहाँ)
प्रिय वसंत के लिए अपने को सजाती
वनश्री के नये-नये गहने
धरती पर उगाते पालते हो।
जूही, शेफाली, कुरबक, कदली, इंदीवर !
मिट्टी, इस्पात और सीमेंट से बने
हर कारागार से धरती के लाडलों को उबारते हो।
अविश्राम ऋतुचक्र के साथ घूमते हो।
तुम्हारे हाथों की उँगलियाँ घिसती हैं।
तुम प्रतिदिन खोजते हो
नया वर्ण, नयी शक्ल, नयी गंध, नयी रुचि।
दूर नागरिक जीवन का संगर गरज रहा है
तुम तो पूरे भूचक्र को
नवीकरण के तीर्थकलश से
मौन वसंतश्री का मंगल स्नान कराते रहते हो।

हे संत ! पूर्णिया की वन-भू पर
आप किस बरगद की छाया में
डंडा हाथ से छूटने और पैर डगमगाने से
धराशायी हो गये ?
उस मुद्रित नयन-युगल को
किसी अरुण कर ने चूमा होगा
उस अधखुले अधर पर
किसी तृण की नोक से जलकण टपका होगा।
नहीं तो थोड़ी दूर कंद खोदती गरीब भीलनी ने
पल्लव के दोने में बेंत के फल का अमृत-रस भेंट किया होगा।
फिर भी मैं जानता हूँ
तुम्हारा मन शान्त है। उदासी से दूर है।
तुमने अपना प्राणपट इस धरती पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूजा-पुष्प-सा चढ़ाया था।
हे आरण्यक ! निर्जितसंशय !
धीर ! कृताखिलकृत्य !
हे असभ्य ! मुझे विदित है कि
तुम्हारे खाद बन जाने से यह धरती
मेरी धात्री हो गयी है।

जब कुल्हाड़ी धारे हाथ कतार में खड़े हैं
हृदयों में कुल्हाड़ियाँ भरी हैं।
सूखे जलस्रोतों की इस मरुभूमि पर
विनतशीर्ष मुकुलित अंजलि से
'ना' 'ना' की प्रार्थना करता रहता हूँ
तुम्हारा तथ्य-सत्य जानता हूँ
बन्दूक उठानेवाला या शासन चलानेवाला
धरती, प्राण और दिल की दया
सुरक्षित नहीं रखता।

हे आरण्यक ! सत्य-स्वरूप तुम्हें
किसने असत्य बनाया ?
आरण्यक ! इस सोम-द्रव में
किसने विष-विन्दु मिलाई ?
मौन से कटुता छनती है
दुःख अगाध विवेक होता है
कल्पान्तक विभूतिभूषण का
नयन दहकता होगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संस्कृत	पं. अमीरचन्द्र शास्त्री
	डॉ. रमाकान्त शुक्ल
	डॉ. सी. आर. स्वामीनाथन्
	डॉ. रुद्रदेव त्रिपाठी
	डॉ. जगन्नाथ पाठक
	(रूपान्तर—डॉ. गुलाबचन्द्र जैन)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भारतवर्ष भूमि और पंजाब प्रदेश

—पं. अमीरचन्द्र शास्त्री

नाना पर्वतों के गौरव
पयोधि के समंजित गाम्भीर्य से
षड् ऋतुओं के उन उन गुणों से संसेवित
हो रहे हैं शोभित ये भारत-भूभाग।

कौन है वह कवि
वाणी का विभव पाकर भी
कह सकेगा इनका सौभाग्य
कारण जो उस परावर परमात्मा के
नाना रूप धारने में !

एकत्व से सम्मत, और
आश्रय ले अनेकत्व का शोभित ये भूभाग
और फिर, विभाजित होकर भी अनेक में
पा गये ऐक्य राष्ट्रैक भाव से।

कर रही अनुरंजित संस्कार-परम्परा एक ही
इस उदार सम्पूर्ण राष्ट्र को,
रम्योचित आचार-विचार शृंखला
अलंकरण जिसका, बन्धन नहीं।

कभी यह राष्ट्र रहा था विच्छिन्न
विभाजन कर देह का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सौ-सौ भागों में,
आज विराज रहा स्वाधीन
समलंकृत मांगलिक परिमित प्रदेशों से।

प्राची में स्थित अंग बंग कलिंग,
तेलुगु तमिल आदि दक्षिण में,
प्रतीची में प्रमुख सौराष्ट्र गुर्जर मरु,
प्रधान हैं उदीचि में पंजाब कश्मीर।

गीर्वाणवाणी का धारक
मुखरित बहु भाषाओं से,
विविध वेष-परिधानों से—
चित्र-विचित्र एक रूप
भासित यह देश।

वर्णित शोभा कश्मीर मरुभू की
शताब्दी ग्रन्थ के परार्ध-संक्रम में,
नहीं कर पा रहा संवरण लोभ का
पंजाब-छवि के निरूपण में।

पराक्रमी पंजाब पंचानन की भाँति, जहाँ
प्रवहमान पंच सरिताएँ अभिसेचिका
साक्षी हुए थे वेदमन्त्र ऋषियों को
उनके तट पर।

संवर्धित सौभाग्य अनेक का
ऋषि-मुनियों से,
गौरवान्वित अन्य परम-देवों से
पा गयीं महत्त्व अन्य सरिताएँ
सान्निध्य से दिव्य नराधिपों के।

रची यह सृष्टि सुन्दर प्रजापति कश्यप ने
पुलिन पर यहीं वितस्ता के,
कूल पर शतद्रु के समास्थित थे कौशिक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और
महर्षि वशिष्ठ ने पाया था—
विपाशा के तट का आश्रय।

यहीं,
चन्द्रभागा के सलिल में स्नापित चन्द्र
अमृत-पिपासुओं से,
और यहीं पर, इरावती के तीर
मार्जन किया था राघव ने
पौलस्त्य-वध के पाप का।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं स्वतन्त्रता बोल रही हूँ

—डॉ. रमाकान्त शुक्ल

बोल रही हूँ मैं—स्वतन्त्रता
ज़रा सुनो तो मेरी बात !
मन में निर्धार, फिर
विधेय जो यथोचित हो, करो।

वन्दनीय हैं सदा मेरे लिए
वे जन जिन्होंने—
आराधना में मेरी कर दिये समर्पित शिरोभाग
अर्पित है जिनका तन-मन-धन, और
झेली हैं जिन्होंने वक्ष पर अपने
गोलियाँ दनदनाती बन्दूकों की।

धारो चिरकाल आत्मजीवन में
दृश्यमान आर्थिकी समुन्नति यह
आज का यह नव-निर्माण और
स्वाधीनता का रसपान।

देख लिये तुमने
अन्तरिक्ष-गामी अपने ही देश के
दीक्षित किये कमाण्डो आततायियों के नाशक
और की समायोजित क्रीड़ा
एशिया बियासी की।
लो शुभकार एतदर्थ आज मेरा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

समर्पित शुभेच्छाएँ मेरी,
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
चाह रहती सदा तुम्हारी सुख-समृद्धि की
किन्तु,
कुछ परेशान-सी मैं
वर्तमान विचित्रकाल की गति से,
चाहूँगी कहना—सुनोगे !

कल्पना न थी कदापि
दुर्बल के शोषण की,
न थी कल्पना कदापि
दुर्जन के पोषण की,
और न ही सोचा था कि
होगी अवमानना सज्जन की।
सहा, सब कुछ सहा,
और न सहना पड़े, करो
ऐसा कुछ करो !

देखती हूँ जब जब बेरोज़गारी,
नीति-विहीनता यह,
झुक जाती है तब लज्जा से ग्रीवा और
निकलने लगते हैं मेरे प्राण।
दशा ऐसी और न हो अब
ऐसा कुछ करो !

सुनती हूँ जब जब
वधू-दाह पातक,
सुनती हूँ नृशंस कार्य
बलात्कार के, हत्या के
आहत हो जाती हूँ मर्मान्तक पीड़ा से।
पीड़ा यह दूर हो अब
ऐसा कुछ करो !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

कहीं विलास साधनों से मण्डित विलासी
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
तड़पते कहीं भूख से स्वदेश के निवासी
कहीं धन की पयस्विनी
निःस्वता कहीं पर।
यह दशा विलोपित हो
ऐसा कुछ करो !

दलात् दल पलायन
प्रवंचना क्षण-क्षण की
जन-जन में प्रतारणा
हिंसा पैसे-पैसे पर, और
रोगोत्पादक मिलावट कण-कण में
व्याकुल हो उठती हूँ देखकर।
दूर हो यह व्याकुलता मेरी
शीघ्र अतिशीघ्र !

हो रही पदोन्नत अयोग्यता
सुयोग्यता पदच्युत,
बन गयी चाटुकारिता अमोघ लाभकारिणी
दशा रही यही यदि देश की
कहो भला, हूँगी कैसे सुपुष्ट ?

सो रहते हैं फुटपाथों पर ही किस तरह मज़दूर
और उधर कर लेते हैं धर्म के नाम पर सब कुछ कैसे ?
चलती खरीद-फ़रोक्त देह की सुयोजित
निरख यह
करो तो कभी मन में समीक्षा !

हो आता स्मरण जब
पूर्वजों का अभ्यास कष्ट सहने का
पुलकित हो उठती हूँ आत्मगौरव से
किन्तु देख स्वार्थ-लाभ नेतृवर्ग का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खुश होऊँ आज या मनाऊँ अफसोस ?
विचारो तो स्वयं !

लभ्य सुरा पद-पद पर, जल नहीं
बातें हैं बहुत, पर क्रिया का अभाव
पद-पद पर भड़क उठते
भेद-भाव आपस के
सोचो,
दशा यह योग्य है समर्थन के ?

न तो धनाभाव
न ही अभाव श्रम का
प्रभादीप्त भारत में, फिर भी
पनप जाती विवेकहीनता यदा कदा ।
न पनपे कदापि वह
हो ऐसा विधान !

हो यहाँ न कोई निर्धन
न निर्बल,
न ही हो अवमानना किसी की,
बढ़े स्वावलम्बन सदा
जन-जन में भारत के
व्यक्त हो मोद-प्रमोदता
बोल रही हूँ मैं—स्वतन्त्रता ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वंशी विलास

—डॉ. सी. आर. स्वामीनाथन्

नमन करता हूँ मैं
मुरली को, जो—
अनुरंजित वेदों की गन्ध से
पूरित मुख-सुरभि से,
बन बैठी है आचार्या गोपियों की
अधरामृत-पान की निःसृत ध्वनियों से ।

सोचकर यह कि
अधिगत न होगा उनका पूर्ण ज्ञान
पाकर भी सान्निध्य श्रुति/कर्ण का
आ विराजी वह उनके अधरोपान्त में
छोड़कर श्रुति-स्थान ।

किस तप की महिमा है
या अनुष्ठान किया है किस व्रत का, री मुरली, तूने ?
बतलायेगी मुझे ?
पा गयी सुख कंसारि के करों का,
निभृत रस-पान का अधरामृत के,
और बार-बार कपोल-मणिदर्पण के स्पर्श का ।

कृपा-वैभव से ही तेरे
री मुरलिके,
गोपांगनाओं ने किया साक्षात्कार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उनका—
खड़े थे जो वन में चरणकमल टेके,
ग्रीवा झुकाए थोड़ी-सी,
लजा देती है नवाम्बुद को भी जिनकी—
सघन चंचल केशराशि, और
जिनकी देह शरच्चन्द्र की पीयूष-किरणों से
गौरवर्णी हो गयी है।

कृष्ण के करों में विलोडित
आस्वादित अधरों से, री मुरली !
सतत आप्लावित है तेरा अन्तस्तल
मुख-सुरभि से उनकी
और, पा गयी है छवि कमलहार की
उनकी अँगुलियों की नख-प्रभा से
इसीलिए
जल उठा है असूया से गोपांगनाओं का हृदय।

व्रजेश्वर के सुखासीन हाथों में
चहेती मधु-जैसी मध्वरि की,
अमृतरस-स्यन्दिनी, री मुरली !
शिक्षण देती है तू कोकिलाओं को भी
मधुर आलापों से अपने;
और, तेरे नाद में
पा जाती है श्रुति अपना सार्थक्य।
मुरलिके ! मुझे भी कृतार्थ कर।

वन में ग्वालवालों के साथ
भोजन-रत कृष्ण की कटि पर देख वंशी को
स्मरण हो आता है विधाता को
प्रलय-सागर के मध्य
विष्णु-नाभि से उत्पन्न वह कमल-नाल
जो गर्भवास के बहुत ही अनुकूल था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुरलिके !
अपने नाद से व्यक्त करती
फैला रही है तू वनभूमि में
गूढ़ अध्यात्म उपनिषद् का।
हाँ,
तू ही तो करा सकती है बोध उस तत्त्व का
हथेली पर बदरफल की भाँति
ब्रज की उन युवतियों को, गोप-गोपालों को।

चोरी से उतावलेपन में
दुग्धपान करने से
लग्न गोक्षीर-लेश मुख-परिसर में
प्रकट न कर दे कहीं चौर्य तेरे कान्हा का
मुरलिके !
पोंछ रही है मुख उनका तू—
इसीलिए दयार्द्र होकर ?

लेप कर अंगों को अपने
होठों पर लगे गोविन्द-सेवित नवनीत-कणों से,
चाहती है तू क्या, मुरली !
ललित पल्लव कोमलांग अधर में उनके
पीड़ा न हो तेरी कठोरता की ?

वन-निर्झरिणी के परिसर में
कीचक-कुल में जन्मी
तुच्छतनु बहुछिद्री वाताशनी दुर्बला होकर भी
मुरलिके !
वैद्यराज कान्हा के नखस्पर्श मात्र से
लग रही है तू अति आह्लादित
भर आये यौवन-सी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वनभूमि में
दावानल की ज्वालाओं में
शिथिल-गात्र होकर
पायी है तूने कीचकता
फिर भी
करतल पा जाने से मुरहर का
छोड़कर अरण्य का करुण क्रन्दन
आज मुस्कुरा रही है !

नादब्रह्म के विभावन में चतुर,
निरत वेदान्त-प्रतिपादित साम-गान में,
ब्रह्मामृत-स्यन्दिनी,
ज्ञाता की, ज्ञेय की और लय की आश्रय
अखिल जगत् का ताप हरने वाली यह वंशी
बन कर प्रेयसी नारायण की
विराज रही है हंसिनी-सी
उनके कर-कमल के क्रीडा-सरोवर में।

माधव के स्मित मुखाब्ज पर
भ्रमरी की भाँति
जाती है जब मुरलिके, तू
तो लगता है
उत्सर्ग कर कहीं दूर सकल विषय-गन्ध,
स्मरण तो नहीं कर रही है
उनके कर्ण में दैन्य मेरा कहने का ?

मुरलिके !
कान्ह के स्मित से उपजी
ज्योत्स्ना की किरणाभ से
सुन्दर बन चाँदी-सी,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रचकर विद्युच्छटा यमुना के कुंजों में,
दूर भगा कर
आसन्न वर्षा की शंका से चकित गोपियों को,
करती रहती है तू
रसपान उनके अधरों का
निर्बाध स्वच्छन्द।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जयति मंगला संस्कृत-वाणी

—डॉ. रुद्रदेव त्रिपाठी

वेद-हिमाद्रि से चिर प्रवहमान
कल्याणी निर्मल गंगा-सी
वेदांगों की धारा से उदार,
पूर्ण उपनिषदों के विचारों से,
दर्शन-तन्त्र-पुराण-स्मृति-नीति-
काव्य-कथा-नाटकों में व्याप्त,
सूक्तिसुधा-पान से जिसके
होते सुखी सकल जग प्राणी !
जयति मंगला संस्कृत-वाणी !

अतुलित जिसका शब्दागार
शास्त्रों का भी विपुल विस्तार
नीचे-ऊपर अभितः परितः
पूर्ण शुद्ध, निर्विकार
व्याकरण-विधि से शुचिता शब्दां की
शुद्धि परीक्षण शाणी !
जयति मंगला संस्कृत-वाणी !

विविध उपासना मार्ग का देती निर्देश
पा प्रवेश मानस में योग-युक्ति से
परब्रह्म निःश्वास रूप आम्नायों से, पा जाती—
मुक्तिपद का सहज स्पर्श।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दर्शन-मनन-निदिध्यासन से
लोकद्वय हित की निर्माणी !
जयति मंगला संस्कृत-वाणी !

स्वस्तिमती, जननी सर्व भाषाओं की
करती है मार्ग प्रशस्त सत्यसुधा-स्रोत का
संस्कारों के रुचिरांकुरों से—
विश्वजनीन यशःसुखदात्री
नवविचार युत होकर भी नित
प्रथित जगत् में परम-पुराणी !
जयति मंगला संस्कृत-वाणी !

विचरती सदा यह विश्व-प्रेम लेकर
बाँटती रहती मानवता का ज्ञान
समता, विवेक और समादर से
फैलती है जन-जन के हृदयों में
भक्ति से विनीत शिर, मेरे
बद्ध युगल पाणी !
जयति मंगला संस्कृत-वाणी !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्फुट पद्य

—डॉ. जगन्नाथ पाठक

'वसुधैव कुटुम्बकम्' मानकर जब मैं चला
कहा वसुधा ने हँसते हुए—
कर रहे क्या मूर्खता यह ?
और मुझे चलने से रोक दिया !

× × ×

प्यास से मर जाये कोई मरु देश में, संभव है
लेकिन सुना है—मर गये कितने
नदी किनारे ही प्यासे !

× × ×

उठ रहा है धुआँ सम्प्रति
अन्तर में कहीं से ?
कर रही है चेष्टा कोई चिनगारी
जलने की मुझमें ?

× × ×

विलीन हो गयी क्षण भर में ही
गिरकर चितवन कोई मुझ पर
आश्चर्य है बहुत मुझे
तुम्हें हो न हो !

× × ×

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुसरता था जिज्ञासा से जो कभी मुझे,
चला जा रहा हूँ आज मैं ही—
दूर तक उसके पीछे
एक पागल की भाँति।

× × ×

सार्थक है अनुभूति यह एक क्षण की
स्पर्श की तुम्हारे।
उस ज्ञान से क्या जो तुम्हें—
ले जाए दूर, बहुत दूर?

× × ×

देखकर तुम्हें उतावले हैं क़दम मेरे
बढ़ने को आगे,
मिला यदि आश्रय न कर का तुम्हारे
हो जाएँगे शिथिल ये शनैः-शनैः।

× × ×

रे तुम, न बनाओ मुझे
रस-वर्जित पात्र ज्ञान-भार का,
डाल दो इक दृष्टि बस
करुणामृत वर्षा की!

× × ×

कहा मुझसे एक दिन मेरी ही वाणी ने
होकर प्रकट एकान्त में—
पीटते रहोगे मुझे कब तक, कवि
पामरों के स्तवन की लाठियों से?

× × ×

ढूँढ़ रहा हूँ आज यहीं कहीं
बेचारी उस नदी को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गत दिनों डूब गयी थी जो
अपने ही जल में ।

× × ×

नहीं देखा धरती पर महामूर्ख तुझ जैसा
जगन्नाथ,
कर रहा यों शंका
अपने ही कृपालुओं पर !

× × ×

बाँधकर छोर से आंचल के
रखा था लौंग की नाईं तुमने मुझे
हतभाग किन्तु जा गिरा कहीं धरती पर
याद भी आयेगी अब कभी तुझको मेरी ?

× × ×

पाता हूँ तुम्हें सुमनों में, सुगन्धों में,
कहीं पक्षियों के कूजन में,
और कहीं अन्तस् के स्वरों में
अनुभूति-गोचर !

× × ×

न होगा, मेरे नाम का समन्वय
तेज के साथ न होगा
अतएव आओ तम, त्वरित मेरे पास
कर लो आत्मसात् आत्मवत् मेरे अस्तित्व को !

× × ×

सुन रहा हूँ वह पद-ध्वनि
बैठा हुआ एकान्त में यहाँ,
कभी सुना था जिसे गणिका आम्रपालिका ने
अपने गृह-द्वार पर ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिंधी	नारायण श्याम
	प्रभु वफ़ा
	रीटा शहाणी
	एम. कमल
	कृष्ण राही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिन्धी ग़ज़ल

—नारायण श्याम

ऐ शोर मचाती दुनिया, तू चुप भी रहती ज़रा
कुछ अनबोले-से बोलते, गूंजने भी तो देती ज़रा

इक इक सवाल के हैं कई जवाब यहाँ
कुछ सोचती, बहस के बदले तू खामोश ही रहती ज़रा

आकर औरों के सामने, तूने समझा उन्हें खूब
अपने आगे कभी ख़ुद को तो तू लाती ज़रा

कोयल की लात-सी, यह गुल के रंग-बू समान
हस्ती निखार कर, मुझे भी ज़िन्दगी देती ज़रा

बैठे-बैठे सिन्धु व सिन्धुड़ी का आया ख़याल
ऐ आँख, मिली न तू दिल से, आँसू न ऐसे निगल जाती ज़रा

तूने रूह को शरीर से कैसे माना जुदा 'श्याम'
रूह क्यों ऐसे मरती, गर तू जिस्म से ही जीने देती ज़रा

(रूपान्तर—लखू-रीटा)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिन्धी ग़ज़ल

—प्रभु वफ़ा

जो सब कुछ समझ कर भी न समझ पाया
किसी के समझाए भी वह नहीं समझा

जो समझेगा वह ख़ुद को दुखी पायेगा
लाख शुक्र कि मेरा मन कुछ भी नहीं समझा

वही-वही ग़लती दोहराई बार-बार
फिर तो ऐसा ही समझें कि वह नहीं समझा

सब परिणाम आँखों देखे हैं उसके
फिर भी इन्सान क्यों नहीं समझा

कहते हैं सब कि बुरी है यह दुनिया
लेकिन अपने को क्यों कोई बुरा नहीं समझा

अपने सीने से लगी है जो झकझोर
ख़ुद ही जाने, और कोई नहीं समझा

वहिदत[1] की है जिसने हासिल
किसी दूजे को वह ग़ैर नहीं समझा

1. अद्वैत ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपने हाथ को हल्की लहस भी कचोटती है
पर किसी दूजे के शोले को भी वह नहीं समझा

चाहे दूसरे का नुक़सान ही करता रहे
अपना फ़ायदा भी वह नहीं समझा

'वफ़ा' कैसी आफ़त आएगी कल
ख़ुद ख़ुदा भी यह नहीं समझा

(रूपान्तर—लखू-रीटा)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मानव : एक द्वीप

— रीटा शहाणी

द्वीप अलग हर इन्सान बावरे
इस बात का क्या कुछ ज्ञान बावरे

कोई तेरे कितना न निकट होता है
तू समझता है कि तू उसे समझता है
पर क्या तू सचमुच उसे समझ पाता है
कब जान सका कोई दूजी जान बावरे
द्वीप अलग हर इन्सान बावरे

अहंकार की लहरें हैं चहुँ ओर
द्वीपों को करें पृथक् मचा मचाकर शोर
न बंधने देती कभी प्रीति की डोर
द्वीप मिलन का न कोई संकेत बावरे
द्वीप अलग हर इन्सान बावरे

मात-पिता भाई बेटे-बेटियाँ
रखती हैं सब अलग-अलग हस्तियाँ
जग की हैं सब सतही डोरियाँ
सब हैं कच्चे धागे ऐ नादान बावरे
द्वीप अलग हर इन्सान बावरे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मोह माया से ख़ुद को बचाएँ
कमलों जैसे क्यों न बन जाएँ
जल में होते जल से अलग बिताएँ
वैराग्य राग का प्राण बावरे
द्वीप अलग हर इन्सान बावरे

(रूपान्तर—रीटा शहाणी)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिन्धी ग़ज़ल

—एम. कमल

लूट-खसोट सहो, आज कुछ कहो मत
समय समय की बलिहारी, आज कुछ कहो मत

कोई रास्ता रोके खड़ा हो
दूसरी राह पकड़ लो, आज कुछ कहो मत

आपकी ड्योढ़ी के पास किसी ने झुग्गी लगा दी
दूसरी ओर से रास्ता निकाल लो, आज कुछ कहो मत

'चोर चोर' की चिल्लाहट पर
झट से बन्द कर लो दरवाज़ा, आज कुछ कहो मत

अपने अधिकारों की बात रही दरकिनार
जो मिलता है ले लो, आज कुछ कहो मत

कुछ लिहाज़ रखो छोटों का भी
अशिष्टता को सहन करो, आज कुछ कहो मत

आख़िर घर के आप ही तो बड़े ठहरे
सब बोझ करो हमवार, आज कुछ कहो मत

जिधर ठेले हवा का झोंका
बस उधर चले चलो, आज कुछ कहो मत

(रूपान्तर—लखू)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रिश्ता अजनबीपन का

—कृष्ण राही

रिश्ते तो कई हैं
रिश्ता ख़ून और सगाई का
रिश्ता यारी-दोस्ती का
रिश्ता प्यार-मोहब्बत का
रिश्ता भाईचारे और मानवता का
पर ये रिश्ते पड़ गये हैं सभी पुराने
आज का नया रिश्ता है
रिश्ता अजनबीपन का

घर में रहते
दफ़्तर में काम करते
रास्ते से गुज़रते
बस या रेल में सफ़र करते
भाई-बन्धुओं से मिलते
मित्रों की महफ़िल में उठते-बैठते
सब साथ हैं
लेकिन हर एक अलग-थलग है
और एक-दूसरे से
अजनबीपन के रिश्ते से जुड़ा है

यह निहोड़ा अजनबीपन
जानकारी है यह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कि एक-दूसरे को नहीं जानते
पहचान है यह
कि एक-दूसरे को नहीं पहचानते
समीप इतने हैं
जितने दूर हैं
परिचित ऐसे हैं
जैसे कभी मिलना ही नहीं हुआ
न भाईचारा न सगाई
न मोह न आसक्ति
न प्रेम न घृणा
न दोस्ती न दुश्मनी
न जान न पहचान
सफ़ेद रंग ज्यों
सातों रंगों का मेल
सब भावों का जोड़
सब नातों का निचोड़
रिश्तों का रिश्ता
एक ही रिश्ता
मेरा तुझ से
तेरा मुझ से
सब का सब से
है यह रिश्ता अजनबीपन का

(रूपान्तर—लखु)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिन्दी	नरेन्द्र मोहन
	अब्दुल बिस्मिल्लाह
	डॉ. केदारनाथ सिंह
	विजय देव नारायण साही
	भवानी प्रसाद मिश्र

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

याद्दाश्त के सबब

—नरेन्द्र मोहन

सुनो, इस घर में
एक दिया जलाए रखो
शायद वह लौट आये
स्मृतियों के सहारे !

निपट अकेलेपन में डूबा
याद्दाश्त खो चुका-सा
वह चलता है
चलने के भ्रम में।

चलते तुम भी हो अकेले-अकेले
मेरे साथ क्यों नहीं चलते
साथ चलने की कोई याद तुम्हें नहीं रही क्या ?

क्या तुम्हारा और मेरा अकेलापन
उदासी और मायूसी
एक ही तरह की है
बेशक उनके सन्दर्भ अलग-अलग हों !

अकेलेपन में जिन्दा हूँ मैं
याद्दाश्त के सबब
मुझे बोटेनिकल गार्डन याद आता है—
एक ओर से फूटती हुई टहनी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
मीलों दूसरे सिरे तक फैलती हुई
टहनियों में उलझी हुई टहनियाँ
एक ही जड़ से फूटती हुई हज़ारों हज़ार टहनियाँ
पुनः पुनः मिट्टी से फूटती हुई
जन्मतीं तनतीं फैलतीं झुरमुट बनातीं बारम्बार।

पेड़ की जड़ों से जुड़ा
अकेलेपन का पहला एहसास
मेरी याद में तीर-सा चुभा है

सुनो, तुम एक दिया जलाए रखो
उसकी याद्दाश्त सुलगने लगी है
वह लौट सकता है !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चूज़े

—अब्दुल बिस्मिल्लाह

चूज़े देखते हैं
किस तरह उनकी माँ
अपने दड़बे की सीमा में
बैठती है खड़ी होती है
और उन्हें खेलने देती है
चूज़े देखते हैं
किस तरह उनकी माँ
कूड़े में गोबर में
और राख में उनके लिए
महीन दाने तलाशती है
चूज़े देखते हैं
किस तरह उनकी माँ
बिल्ली के आक्रमण से
उन्हें आगाह करती है
चूज़े देखते हैं
किस तरह उनकी माँ
सिल पर चौके पर
और दहलीज़ पर
चोंच तेज़ करने का
सलीका बताती है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और चूज़े देखते हैं
किस तरह उनकी माँ
उन्हें एक ख़ूंख़ार दुनिया सौंपकर
दावत बन जाती है
चूज़े देखते हैं
उनकी चोंच उन्हें शोरबा बनने से
बचा सकती है या नहीं
चूज़े
गमले की हरी पत्ती पर
अपनी चोंच आज़माते हैं
पत्ती टूट जाती है
चूज़े सोचते हैं
दुनिया क्या इस पत्ती से
ज़्यादा सख्त होगी ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बनारस

—केदारनाथ सिंह

इस शहर में बसन्त
अचानक आता है
जब आता है तो मैंने देखा है
लहरतारा या मंडुवाडीह की तरफ़ से
उठता है धूल का एक बवण्डर
और इस महान् पुराने शहर की जीभ
किरकिराने लगती है

जो है वह सुगबुगाता है
जो नहीं है वह फेंकने लगता है पचखियाँ
आदमी दशाश्वमेध पर जाता है
और पाता है घाट का आख़िरी पत्थर
कुछ और मुलायम हो गया है
सीढ़ियों पर बैठे बन्दर की आखों में
एक अजीब-सी नमी है
और एक अजीब-सी चमक से भर उठा है
भिखारियों के कटोरों का ख़ालीपन

तुमने कभी देखा है
ख़ाली कटोरों में बसन्त का उतरना !
यह शहर इसी तरह खुलता है
इसी तरह भरता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और ख़ाली होता है यह शहर
इसी तरह रोज़-रोज़ एक अनन्त शव
ले जाते हैं कन्धे
अंधेरी गली से
चमकती हुई गंगा की तरफ़

इस शहर में धूल
धीरे धीरे उड़ती है
धीरे धीरे चलते हैं लोग
धीरे धीरे बजते हैं घण्टे
शाम धीरे-धीरे होती है

यह धीरे धीरे होना
धीरे धीरे होने की एक सामूहिक लय
दृढ़ता से बाँधे है समूचे शहर को
इस तरह कि कुछ भी गिरता नहीं है
कि हिलता नहीं है कुछ भी
कि जो चीज़ जहाँ थी
वहीं पर रखी है
कि पानी वहीं है
कि वहीं पर बँधी है नाव
कि वहीं पर रखी हैं तुलसीदास की खड़ाऊँ
सैकड़ों बरस से

कभी सई साँझ
बिना किसी सूचना के
घुस जाओ इस शहर में
कभी आरती के आलोक में
इसे अचानक देखो
अद्भुत है इसकी बनावट
यह आधा जल में है
आधा मन्त्र में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आधा फूल में है
आधा शव में
आधा नींद में है
आधा शंख में
अगर ध्यान से देखो
तो यह आधा है
और आधा नहीं है

जो है वह खड़ा है
बिना किसी स्तम्भ के
जो नहीं है उसे थामे हैं
राख और रोशनी के ऊँचे ऊँचे स्तम्भ
आग के स्तम्भ
और पानी के स्तम्भ
धुएँ के
ख़ुशबू के
आदमी के उठे हुए हाथों के स्तम्भ

किसी अलक्षित सूर्य को
देता हुआ अर्घ्य
शताब्दियों से इसी तरह
गंगा के जल में
अपनी एक टाँग पर खड़ा है यह शहर
अपनी दूसरी टाँग से
बिल्कुल बेख़बर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साँप काटे हुए भाई से

—विजयदेव नारायण साही

मुझे दिख रहा है
दिमाग़ धीरे-धीरे पथराता जा रहा है
अब तो नसों की ऐंठन भी महसूस नहीं हो रही है
और तुम्हें सिर्फ़ एक ऐसी
मुलायम सहलाने वाली रागिनी चाहिए
जो तुम्हें इस भारीपन से आराम दे सके
और तुम्हें हल्की ज़हरीली नींद आ जाए।

लेकिन मेरे भाई, मैं तुम्हें सोने नहीं दूँगा
क्योंकि अगर तुम सो गये
तो साँप का यह ज़हर
तुम्हारे सारे शरीर में फैल जाएगा
फिर कुछ लहरें आयेंगी
और क़िस्सा ख़त्म हो जाएगा।

सोना मत, हरगिज सोना मत !
देखो, जहाँ तुम्हें साँप ने काट खाया था
वहाँ मैंने नश्तर लगा दिया है
उस ज़ख्म से अभी भी रुक रुक कर
धड़क धड़क कर
ख़ून बह रहा है।

घण्टे घड़ियाल तुरहियों की कर्कश

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आवाज़ों के साथ
तुम्हें जगाए रखने के लिए
बेहद शोर किया जा रहा है
सारा कबीला चीटियों की क़तार की तरह
बेचैन हो कर इधर-उधर दौड़ रहा है।

सोना मत !
ओ मेरे साँप काटे भाई
सोना मत !
नशा चढ़ रहा है
गले में साँस की जगह ख़राश आ रही है
आँखें झपी जा रही हैं
लेकिन जहाँ जहाँ मैंने तुम्हारी नसें चीर दी हैं
वहाँ से कितना काला
ख़ून उमड़ रहा है
नहीं मेरे भाई
इससे यह नहीं साबित होता
कि मैं तुम्हारे ख़ून का प्यासा हूँ
बल्कि यही कि तुम्हारी ज़िन्दगी ही
तुम्हारे ख़ून की प्यासी है
तमाम ज़हर के बावजूद
तुम्हारा दिल अभी भी धड़क रहा है
इसलिए मेरे भाई
सोना मत ! सोना मत !!

यह जो झूम झूम कर तूँबी बजा रहा है
और यह जो मन्तर पढ़ कर
सिर को झटका देता है
यह जो बार-बार लकीर पर
लाठी पटक रहा है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह जो छाती पीट कर रो रहा है
यह जो तुम्हारे पाले हुए साँप ने
तुम्हीं को काटा :
इस पर व्यंग्य बोल रहा है
यह जो सारे क़बीले को कोस रहा है
ये सब तुम्हें रोकने में असमर्थ हैं
अगर भरोसा है तो सिर्फ़ तुम्हारे
बहते हुए ख़ून
और जागती हुई आँखों का भरोसा है—
इस ख़ून को जारी रखने के लिए
सोना मत !
ओ मेरे भाई सोना मत !!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होना तो उनका है

—भवानीप्रसाद मिश्र

होना तो उनका है
जो चुप हैं
जैसे बीज
माटी के भीतर का

सन्नाटा
किसी अद्भुत क्षण में
वन का
तल्लीन हो रहना
मन का
चिन्ताहीन किसी उन्मुखता में

होने को हम भी हैं
मगर फूट चुके हैं
अंकुर बन कर

हरहरा रहे हैं
अभी झुक कर
अभी तन कर

और मुखर हैं
अपने ही बारे में ऐसे
जैसे सब कुछ जानते हों।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सहयोगी कवि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रबीन्द्र सरकार

(असमी)

जन्म—1943, गोहाटी। आजीविका-शासकीय सेवा।

प्रकाशित कृतियाँ—मृत्युर सीमान्तें दरीन, बृत्य भांगर शामे, सत्तुरर पदातिक, होची मिनार कविता, कालांतरार कविता, नाजिम हिकमतार निर्वाचित कविता, नाजिम हिकमतार दुष्प्राप्य कविता और भूल युजर सबयात्री।

पता—एल. आई. सी. आई. डिवीजनल ऑफिस, गोहाटी-1 (असम)

अनीस उज़्-ज़मान

(असमी)

जन्म—1946, असम के एक छोटे से गाँव बामुनबारी (जि. शिबसागर) में। गोहाटी विश्वविद्यालय से असमी साहित्य में एम.ए.। दस वर्ष तक अध्यापन के उपरान्त दो वर्ष के लिए साहित्यिक पत्रिका 'संजना' और एक वर्ष के लिए 'रामधेनु' में कार्य। विभिन्न असमी पत्र-पत्रिकाओं में लगभग 200 कविताएँ प्रकाशित। कविता-संकलन—अज्ञाती, केवल हृदये-हृदये। विभिन्न समारोहों में असमी के प्रतिनिधि कवि के रूप में सम्मिलित। कविताएँ गुजराती, बांग्ला, हिन्दी और उड़िया में अनूदित।

पता—पूर्वांचल प्रिंटर्स, बी. आर. फूकन रोड, भारालुमुख, गोहाटी-९ (असम)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नीलमणि फूकन

(असमी)

जन्म—1933। कवि, अनुवादक एवं कला-समीक्षक।

कविता के लिए 'असम प्रकाशन परिषद पुरस्कार' तथा 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित।

1982 में यूगोस्लाविया में आयोजित काव्य-समारोह में भारत के प्रतिनिधि कवि के रूप में सम्मिलित। चार काव्य-संकलन प्रकाशित। संप्रति—आर्य विद्या-पीठ कॉलेज में इतिहास के अध्यापक।

पता—वेजबरुआनगर गोहाटी-11 (असम)

हरे कृष्ण डेका

(असमी)

जन्म—1943; गाहाटी विश्वविद्यालय से अँग्रेज़ी साहित्य में एम. ए.। गोहाटी कामर्स कॉलेज में अध्यापन 1965 से 1967 तक। 1968 से भारतीय पुलिस सेवा में। संप्रति—असम की पुलिस विशेष शाखा में उप महानिरीक्षक। प्रकाशित काव्य-संग्रह—स्वरबोर (ध्वनियाँ), रातिर शोभायात्रा (रात की शोभा-यात्रा), एक कथासंग्रह 'प्राकृतिक अरु अन्यान्य' (प्राकृतिक एवं अन्य)।

पता—उपमहानिरीक्षक, पुलिस, एस.बी. काहिलीपाड़ा, गोहाटी, (असम)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रफ़ीकुल हुसैन

(असमी)

जन्म—31 दिसम्बर, 1954। काव्य-लेखन 1971 से। प्रकाशित-अप्रकाशित कविताएँ लगभग 150; प्रथम काव्य-संग्रह 'सराबिद्ध आकाश' 1984 में प्रकाशित।

1975 से ही नाट्य-लेखन तथा नाट्य-निर्देशन में सक्रिय।

पता—चौरस गोष्ठी, बोकाखाँट टाऊन, असम-785 612

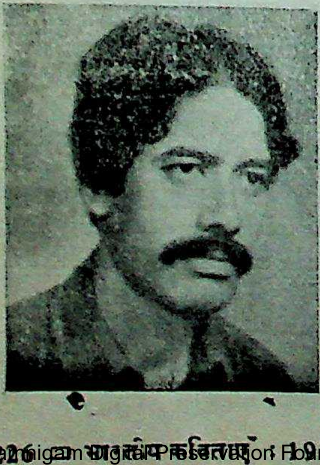

डॉ० सौभाग्य कुमार मिश्र

(उड़िया)

जन्म—1941, अँग्रेज़ी साहित्य में एम. ए., पी-एच. डी.। कवि, आलोचक और अनुवादक।

प्रकाशित रचनाएँ—उड़िया में 5 और अँग्रेज़ी में 'काउण्टर मेज़र' कविता-संग्रह प्रकाशित। अन्य अनुवादों में काफ्का के 'द केसल' उपन्यास का उड़िया में अनुवाद। विषुव मिलन और उड़ीसा साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित।

संप्रति—उड़ीसा के ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय के अँग्रेज़ी विभाग में प्राध्यापक।

पता—अंग्रेज़ी विभाग, बरहमपुर विश्व-विद्यालय, भांजा, विहार, बरहमपुर-7

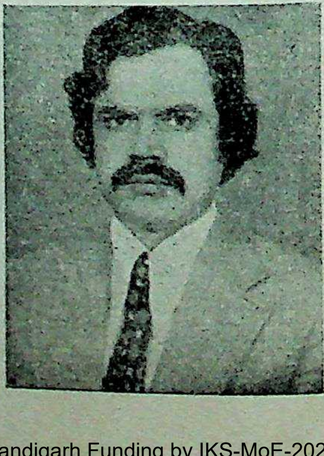

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डॉ. सीताकांत महापात्र

(उड़िया)

जन्म—1937 महाङग, उड़ीसा। उड़िया में छ: कविता-संग्रह तथा पाँच अँग्रेज़ी अनुवाद प्रकाशित। केन्द्रीय साहित्य अकादमी, उड़ीसा साहित्य अकादमी, कुमारन एसन पोइट्री तथा सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार से सम्मानित। दो साल तक भाभा फेलो रहे। अँग्रेज़ी में सात जनजातीय कविता-संग्रहों का अनुवाद किया। संप्रति—भारतीय प्रशासनिक सेवा के अन्तर्गत उड़ीसा सरकार के अधीन कार्यरत।

पता—क्वार्टर 1, टाईप-8
यूनिट-1, भुवनेश्वर-751001

डॉ. जगन्नाथप्रसाद दास

(उड़िया)

जन्म-1936, उड़ीसा में। कला-इतिहास पर पी-एच. डी.।

उड़िया के सुप्रसिद्ध कवि, नाटककार और कहानीकार। रचनाएँ—हिन्दी और अँग्रेज़ी के अलावा अन्य कई भारतीय भाषाओं में भी अनूदित। कई नाटक देश के विभिन्न शहरों में खेले गये तथा रेडियो और दूरदर्शन से प्रसारित हुए। होमी भाभा फेलोशिप के अन्तर्गत उड़ीसा की चित्रकला पर एक पुस्तक प्रकाशित। संप्रति—दिल्ली में रहकर स्वतन्त्र लेखन।

पता—226, वेस्ट किदवई नगर, नयी दिल्ली-110023

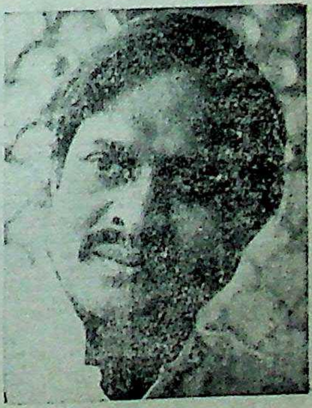

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रमाकान्त रथ

(उड़िया)

जन्म—1934, अँग्रेज़ी साहित्य में एम. ए.।

उड़िया में छः कविता-संग्रह प्रकाशित। 'सप्तम ऋतु' नामक काव्य-संग्रह केन्द्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित। इसका हिन्दी अनुवाद भी। विषुव मिलन, उड़ीसा साहित्य अकादमी आदि पुरस्कारों से सम्मानित। संप्रति- भारतीय प्रशासनिक सेवा से संबद्ध।

पता—द्वारा श्रीमती शान्ति रथ,
ई-4/1, एम. एस. फ्लैट्स, सेक्टर-13,
आर. के. पुरम, नयी दिल्ली-110022

राजेन्द्रकिशोर पण्डा

(उड़िया)

जन्म—1944। इलाहाबाद विश्व-विद्यालय से राजनीतिशास्त्र में एम. ए.। 1967 में एम. ए. उत्तीर्ण करने के तुरन्त बाद भारतीय प्रशासनिक सेवा के सदस्य के रूप में कार्यरत।

25 वर्ष से कविता लिख रहे हैं। अभी तक सात कविता-संग्रह प्रकाशित। अद्यतन संग्रह 'शैलकल्प' (1982)। संप्रति—उड़ीसा सरकार के राजस्व विभाग में अतिरिक्त सचिव।

पता—फ्लैट्स 5, आर-9, यूनिट-3,
भुवनेश्वर-751001

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

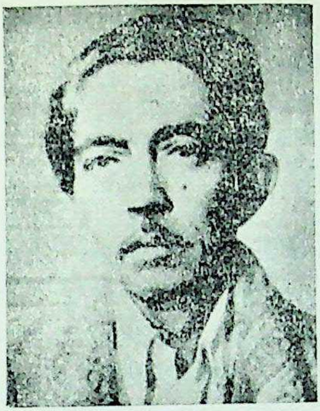

क़ाज़ी सलीम
(उर्दू)

जन्म—27 नवम्बर, 1930, ज़िला औरंगाबाद (महाराष्ट्र) में। उस्मानिया विश्वविद्यालय से एल-एल.बी.। 1950 से काव्य-लेखन। प्रथम काव्य-संग्रह 'निजात से पहले' 1972 में प्रकाशित; दूसरा काव्य-संग्रह 'ज़मीर' प्रकाशनाधीन। महाराष्ट्र सरकार द्वारा पुरस्कृत। अनेक कविताएँ अलीगढ़ विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में। 1962 से 1972 तक महाराष्ट्र विधान सभा में मनोनीत। 1981 में लोकसभा सदस्य। पता—न्यू उस्मानपुरा, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

ए. एम. ख़ान 'शहरयार'
(उर्दू)

जन्म—16 जून, 1936; एम. ए., पी-एच. डी.। उर्दू विभाग, अलीगढ़ विश्व-विद्यालय में रीडर।

प्रकाशित काव्य-संग्रह—इस्मे अज़म, सातवाँ दर, हिज्र के मौसम, क़ाफ़िले यादों के (देवनागरी लिपि में)। साहित्य अकादमी के लिए गत बीस वर्षों से काव्य-चयनिका का सम्पादन कर रहे हैं। 'गमन' तथा 'उमराव जान' फ़िल्मों के लिए लिखे गये गीतों पर 6 पुरस्कार। 'सातवाँ दर' काव्य-संग्रह पर उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी का पुरस्कार। 'राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्' में उर्दू पाठ्य-पुस्तकों के सह-सम्पादक। अलीगढ़ में पत्रिका 'हमारी ज़बान', 'उर्दू अदब', 'ग़ालिब', 'चौपाल' आदि का सम्पादन। आकाशवाणी, दूरदर्शन द्वारा आयोजित मुशायरों में शामिल। पता—रीडर, उर्दू विभाग, अलीगढ़ विश्वविद्यालय, अलीगढ़ (उ० प्र०)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अमीक़ हनफ़ी

(उर्दू)

पूरा नाम—अब्दुल अजीज हनफ़ी। उर्दू, हिन्दी और कभी-कभी अंग्रेजी में लिखते हैं। प्रकाशित रचनाएँ—'सांसों का संगीत' (हिन्दी कविताएँ), 'आइने का कोरस' (रेडियो नाटक), 'उस्ताद रजब अली खां' (जीवन एवं संगीत आलोचना)। हाल ही में उर्दू में प्रकाशित 'शेर चीज़े दीगरअस्त' शीर्षक से काव्यशास्त्र पर भारतीय, अरबी, फारसी और अन्य सन्दर्भों सहित एक सैद्धान्तिक पुस्तक चर्चित। उर्दू कविताओं के तीन संग्रह और दो लम्बी कविताएँ भी प्रकाशित। 'आइने का कोरस' उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा पुरस्कृत।

1965 से आकाशवाणी में कार्यरत। संप्रति—आकाशवाणी के कर्मचारी प्रशिक्षण संस्थान (कार्यक्रम) के निदेशक।

पता—ए-223, पंडारा रोड, नयी दिल्ली-110003

निदा फाज़ली

(उर्दू)

जन्म—12 अक्तूबर, 1938 ग्वालियर में। उर्दू में एम. ए.। प्रकाशित रचनाएँ—लफ़्ज़ों का पुल (काव्य-संग्रह), मोर नाच (काव्यसंग्रह), मुलाक़ातें (आलोचना)। हिन्दी और उर्दू पत्रिकाओं के सम्पादन के बाद आजकल फ़िल्मों के लिए गीत-लेखन।

पता—103, अमर अपार्टमेण्ट, डान पारा, खार (वेस्ट) बम्बई-52

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बलराज कोमल

(उर्दू)

जन्म—25सितम्बर, 1928, सियालकोट में। पंजाब विश्वविद्यालय से अँग्रेज़ी में एम. ए.। 1948 से उर्दू में काव्य एवं गद्य लेखन। कभी किसी की शागिर्दी नहीं की।

प्रकाशित रचनाएँ—'मेरी नज़्में', 'रिशता-ए दिल' (काव्य), 'नारियल के पेड़' (कविताएँ देवनागरी लिपि में), 'हरियल का एक टुकड़ा' (हिन्दी लघु उपन्यास), 'सफर मुदाम सफर' (कविता), 'इन्तिख़ाब' (कविता), 'निजाद-ए-संग' (कविता), 'आँखें और पाँव' (कहानी संग्रह) 'परिंदों भरा आसमान' (कविता)। अनेक साहित्य पुरस्कारों से सम्मानित। संप्रति—शिक्षा विभाग, दिल्ली में उपशिक्षा अधिकारी।

पता—ई 139, कालकाजी, नयी दिल्ली-110019

सिद्धलिंगय्या

(कन्नड़)

जन्म—1954। दलित काव्य-विधा के सुविख्यात कवि। बंगलूर विश्वविद्यालय में कन्नड अध्यापक।

प्रकाशित काव्य-संग्रह—'होले मादिगर हाडु' (गीत अछूतों के), तथा 'साविरारु नदिगलु' (हज़ारों नदियाँ)।

पता—4/92, आर. जी. कालोनी, श्रीरामपुर, बंगलूर-41

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एम. गोपाल कृष्ण अडिग

(कन्नड़)

जन्म—1918, नव्य-काव्य विधा के प्रवर्तकों में से एक। कन्नड़ के लब्ध-प्रतिष्ठ कवि। प्रकाशित कृतियां—चौबीस से अधिक। 1974 में केन्द्रीय साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत। अखिल भारतीय कन्नड़ साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष रह चुके हैं।
पता—460-ए, 6 क्रास, 6 वां ब्लाक (पश्चिम) जयनगर, बंगलूर-82

डॉ० एन. एस. लक्ष्मीनारायण भट्ट

(कन्नड़)

जन्म—1936। लोकप्रिय कवि एवं आलोचक।
बंगलूर विश्वविद्यालय में कन्नड़ रीडर।
प्रकाशित पुस्तकें—लगभग एक दर्जन।
पता—2263, 22वां क्रास, बनशंकरी द्वितीय स्तर, बंगलूर-10

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के. एस. नरसिंह स्वामी

(कन्नड़)

जन्म—1915, कन्नड़ के अति लोकप्रिय कवियों में से एक। कविता-संग्रह- 'तेरेद बागिलु' (खुला दरवाज़ा) केन्द्रीय साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत। कर्नाटक साहित्य अकादमी के भी पुरस्कार विजेता।

पता—54, मेखला, मैसूर बैंक कालोनी, बंगलूर-50

एच. एस. शिवप्रकाश

(कन्नड़)

नयी पीढ़ी के कवियों में विशेष रूप से उल्लेखनीय। कर्नाटक के कॉलेज शिक्षा निदेशालय में अँग्रेज़ी विभाग में प्राध्यापक।

कविता-संग्रह--'मिलरेप' और 'मलेबिद्द नेलदल्लि' (बरसात से भीगी धरती में)।

पता—-अँग्रेज़ी विभाग, गृहविज्ञान कॉलेज, शेषाद्रि मार्ग, बंगलूर-9

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रहमान राही

(कश्मीरी)

जन्म—1925, श्रीनगर में। 1950 के आसपास कश्मीरी में काव्य-लेखन का प्रारम्भ। इससे पूर्व उर्दू में काव्य रचना। 1960 के आसपास कश्मीरी काव्य में एक नये मुहावरे का विकास। कश्मीरी ग़ज़ल में वैचारिकता के तत्त्व का समावेश। इधर की कविताओं में रहस्यात्मकता की प्रवृत्ति। कई वर्ष तक कश्मीर विश्वविद्यालय में फारसी का अध्यापन। विभाग की ओर से प्रकाशित कश्मीरी पत्रिका 'अनहार' के सम्पादक। 1961 में अपने दूसरे काव्य संग्रह 'बहरोजि सवा' के लिए साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत।

पता—विभागीय अध्यक्ष, कश्मीरी, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर।

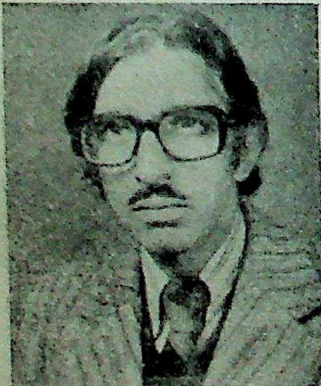

दीनानाथ नादिम

(कश्मीरी)

जन्म—1915, श्रीनगर में। प्रारंभिक काव्य-लेखन उर्दू और हिन्दी में। लेकिन 1946 से लगातार कश्मीरी में ही। कश्मीरी में प्रथम बार मुक्त छन्द का प्रयोग; प्रथम कश्मीरी सॉनेट और गीत-नाट्य की रचना। निरन्तर प्रयोगरत। 1978 में सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार। कवियों की एक पूरी की पूरी पीढ़ी को प्रभावित करने के बावजूद अभी तक कोई काव्य-संग्रह प्रकाशित नहीं। पर अब प्रथम काव्य-संग्रह 'शिहिल्यकुल' शीघ्र प्रकाश्य। पाँच गीत-नाट्यों की रचना, 'बाम्बुरयम्बरजल' और 'वितस्ता' विशेष रूप से प्रसिद्ध। 1957-63 में जम्मू कश्मीर विधान परिषद् के सदस्य। 1961-65 में कश्मीर नेशनल थियेटर्स के अध्यक्ष।

पता—जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी, जम्मू।

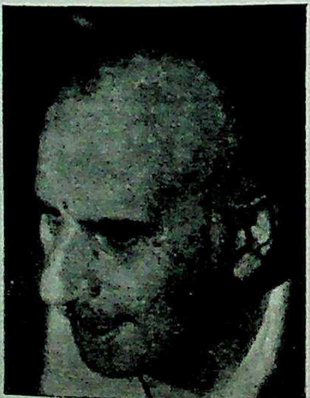

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चमनलाल चमन

(कश्मीरी)

जन्म—1937, श्रीनगर में। गत 25 वर्षों से कश्मीरी में काव्य-रचना। कुछ ग़ज़लें लिखने के बावजूद नज़्म के कवि। 1960 के बाद कविताओं में सामाजिक, आर्थिक स्थिति द्वारा जनित तनावों में जी रहे मध्यवित्तीय व्यक्ति के मोहभंग और व्यथा की अभिव्यक्ति तथा मूल्यों के विघटन का एहसास। 1964 में प्रकाशित 'शबनेम्य शार' शीर्षक कविता-संग्रह पर जम्मू कश्मीर राज्य कल्चरल अकादमी का पुरस्कार।

जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी से प्रकाशित कश्मीरी शब्दकोश के सम्पादक रहे।

पता—जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी, जम्मू।

मोतीलाल 'साक़ी'

(कश्मीरी)

पूरा नाम—मोतीलाल राज़दान।

जन्म—1936 बिजबिहारा, कश्मीर।

कवि और निबन्धकार।

मानव के आत्मिक उन्नयन और आन्तरिक शान्ति के कवि। ग़ज़ल और नज़्म दोनों विधाओं में प्रयोग। 'मनसर' (कविता-संग्रह) पर साहित्य अकादमी पुरस्कार। कल्चरल अकादमी द्वारा प्रकाशित वार्षिक साहित्यिक संकलन 'सोन अदब' का सम्पादन। कश्मीरी लोक-गीतों का पाँच खण्डों में विस्तृत भूमिका सहित सम्पादन।

प्रकाशित रचनाएँ—'गाशिये' (आधुनिक कवियों के जीवन पर परिचयात्मक लेख) और 'मोदुर्य खान' (कविता-संग्रह)

पता—जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी, लाल मण्डी, श्रीनगर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सैयद रसूल पोम्पुर

(कश्मीरी)

पूरा नाम—सैयद गुलाम रसूल शाह। जन्म—1940, बिजबिहारा, कश्मीर में। फारसी में एम.ए.। ग़ज़ल और नज़्म दोनों में समान रूप से प्रयोग शील। प्रकाशित रचनाएँ—दो कविता संग्रह। एक कृति आलोचना साहित्य पर। राजेन्द्रसिंह बेदी के उपन्यास 'एक चादर मैली-सी' का साहित्य अकादमी के लिए (कश्मीरी अनुवाद)। 'नज़रते शेख-उल आलम के सैयद खुलका' (शोध), वेथु आगुर एवं नूर आगुर (सम्पादन)। 'शीरी कलाम' राज्य कल्चरल अकादमी से प्रकाशित।

पता—असिस्टेंट रजिस्ट्रार, जम्मू कश्मीर अकादमी ऑफ आर्ट कल्चरल एवं भाषा, लाल मण्डी, श्रीनगर-190008

डॉ. सितांशु यशश्चन्द्र

(गुजराती)

जन्म—1941, भुज (गुजरात) में। शिक्षा—एम. ए., पी-एच. डी.। कवि, समालोचक एवं नाट्यकार। एम. आई. बड़ौदा विश्वविद्यालय में गुजराती विभाग के अध्यक्ष। 1968-1972 फुलब्राइट स्कालर और फोर्ड वेस्ट यूरोपियन फ़ैलोशिप होल्डर। साहित्य अकादमी के भारतीय साहित्य कोश के प्रधान सम्पादक (1977-1982 तक)। काव्य-संग्रह पर कवि मानेकलाल पुरस्कार एवं राज्य पुरस्कार। इसके अतिरिक्त साहित्यालोचन, साहित्य, सिद्धान्त, कविता, नाटक आदि विधाओं पर कई पुस्तकें प्रकाशित। अनेक विदेश-यात्राएँ।

पता—भुज, कच्छ (गुजरात)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डॉ. चन्द्रकान्त शेठ

(गुजराती)

जन्म—3 फरवरी 1934, कालोल (ज़िला-पंचमहाल) में।

शिक्षा—पी-एच. डी.।

सम्प्रति—अध्यापन। कविता, नाटक ललित निबन्ध और भाषान्तर के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान।

पता—भाषा साहित्य भवन, गुजरात यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद।

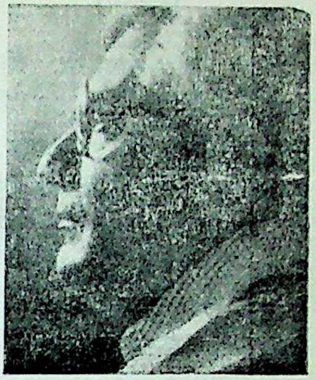

लाभशंकर ठाकर

(गुजराती)

जन्म—14 जनवरी 1935, सेडला (ज़िला-सुरेन्द्र नगर) में। शिक्षा—एम. ए.। व्यवसाय से वैद्य। कविता के अतिरिक्त कथा-साहित्य एवं नाट्य में महत्त्वपूर्ण योगदान।

पता—ए-2, कैपिटल कमर्शियल सेन्टर, पहली मंजिल, संन्यास आश्रम, एलिस ब्रिज, अहमदाबाद।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डॉ. चिनु मोदी

(गुजराती)

पूरा नाम—डॉ. चिनु सी. मोदी। जन्म—30 सितम्बर, 1939। शिक्षा गुजराती साहित्य में एम. ए, एल-एल. बी.। गुजराती साहित्य पर पी-एच. डी.। 1961 से गुजराती के प्रोफ़ेसर।

केवल कुछ वर्षों के लिए दूरदर्शन आलेखक। गुजरात सरकार के विधि विभाग एवं औषध नियन्त्रण में विधि सहायक। कवि, उपन्यासकार, नाट्यकार और समालोचक।

प्रकाशित कृतियाँ—5 उपन्यास, 8 कविता-संग्रह, 2 एकाकी-संग्रह, 8 समालोचना ग्रन्थ, 1अनुवाद, 3 पुस्तकों का सह-सम्पादन। एक उपन्यास, एक कविता-संग्रह और एक एकांकी गुजरात राज्य पुरस्कार से सम्मानित।

पता—16, जितेन्द्र पार्क, पालडी, अहमदाबाद-380007

राजेन्द्र अनन्तराय शुक्ल

(गुजराती)

जन्म—12 अक्तूबर 1942, बाँटवा (ज़िला-जूनागढ़) सौराष्ट्र में। संस्कृत और प्राकृत में एम. ए.। 1982 तक अध्यापन के बाद अब वर्तमान औपचारिक शालेय शिक्षण प्रणाली के विकल्प की खोज एवं काव्य-लेखन में संलग्न।

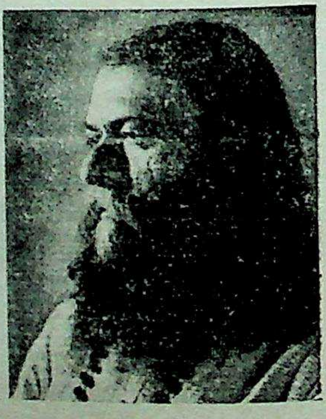

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तमिलन्बन

(तमिल)

पूरा नाम—न. जगदीशन तमिलन्बन जन्म—1940 में। सम्प्रति—मद्रास न्यू कॉलेज में तमिल प्राध्यापक। 8 कविता-संग्रह प्रकाशित। एक संग्रह पर तमिलनाडु सरकार द्वारा प्रथम पुरस्कार (1972)। एक उपन्यास भी प्रकाशित। काव्य में मानवीय सम्बन्धों की अभिव्यक्ति।

पता—एल. आई. लोगास कालोनी, पीटर्स रोड, मद्रास-14

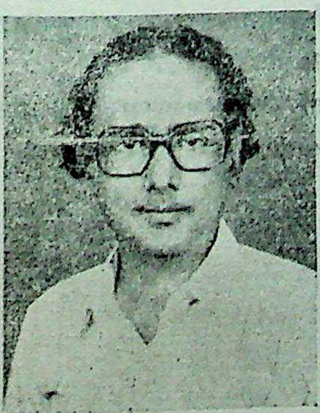

डॉ. मा. रामलिंगम 'एषिल मुदलवन्'

(तमिल)

जन्म—1939 में। सम्प्रति—राजकीय कॉलेज (छात्र) कुम्भकोणम के तमिल विभागाध्यक्ष। प्रकाशित रचनाएँ—दस समालोचना, दो कविता-संग्रह, दो लघु कथा-संग्रह। 'पुदिय उरैनडै' (नया गद्य) पर साहित्य अकादमी पुरस्कार। एक अन्य पुस्तक पर तमिलनाडु सरकार द्वारा पुरस्कार। तमिल के अग्रणी समालोचक।

पता—76, नाथ गुड्डी स्ट्रीट, कुम्भ-कोणम— 612018 थजावुऊ (तमिलनाडु)।

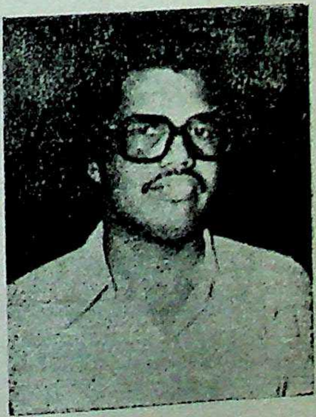

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वैरमुत्तु

(तमिल)

जन्म—1950, मदुरै जिले के वडुकप्पट्टी नामक एक छोटे से ग्राम में। तमिल में एम. ए.। प्रख्यात तमिल सिने गीतकार। तीन सौ से भी अधिक गीत। प्रकाशित रचनाएँ—पाँच कविता संग्रह, एक उपन्यास, 'अभी तक मैं' (आत्मकथा) और राष्ट्रीय गीतों का एक कविता-संग्रह विशेष उल्लेखनीय।

पता—34, सर्कुलर रोड, यूनाइटिड इण्डिया कालोनी, मद्रास-600024

शिल्पी (शिर्पि) बालसुब्रह्मण्यम

(तमिल)

जन्म—1936, संप्रति—एन. जी. एम. कॉलेज, पोल्लाच्चि में तमिल प्राध्यापक। तमिल भाषा के 'भरल' नामक नयी कविता आन्दोलन के प्रवर्तक। 'भरल' नामक एक काव्य पत्रिका का संचालन। प्रकाशित रचनाएँ—6 कविता-संग्रह, 1 निबन्ध-संग्रह। कविता-संग्रह 'मौन मूर्च्छाएँ' तमिलनाडु सरकार द्वारा पुरस्कृत। मार्क्सवादी दृष्टिकोण।

पता—50 अलगप्पा ले आउट, पलाची, कोयम्बटूर (तमिलनाडु)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

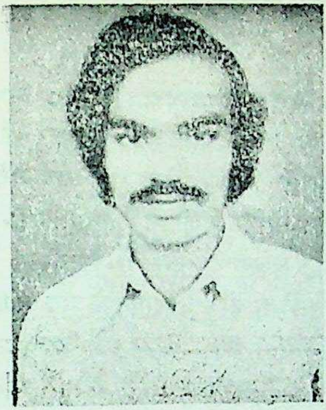

पावण्णन

(तमिल)

जन्म—तमिलनाडु में। संप्रति—कर्नाटक राज्य में जूनियर इन्जीनियर के रूप में कार्यरत। युवा कवि। कविता में विशेष रुचि। कुछ लघु-कथाएँ, दो-लघु उपन्यास भी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

पता—द्वारा कैम्प ऑफ़ीसर, कॉक्सीयल केबल प्रोजेक्ट, हासपेट-58320।

डॉ. दाशरथी

(तेलुगु)

जन्म—22 जुलाई 1926, कवि, स्वाधीनता सेनानी, भाषाविद् विद्वान, वक्ता, सिने गीतकार और इन सबसे बढ़कर मानवतावादी। हैदराबाद के जन-संघर्ष में भाग लेने वाले कवि। बांग्ला देश, वियतनाम और अन्यत्र जन-आन्दोलन का समर्थन। प्रकाशित रचनाएँ—लगभग एक दर्जन काव्य-संग्रह एवं अनेक रेडियो नाटक। साहित्यिक निबन्धों का लेखन। ग़ालिब, इकबाल, ज़फर, शेखशादी और हाफ़िज सीराजी के अनुवाद। अनेक पुरस्कारों से सम्मानित। मानद डाक्टरेट। तेलुगु फ़िल्मों के लगभग 2000 गीतों के रचियता। आन्ध्र के राज्य कवि। तेलुगु कविता में ग़ज़ल और रुबाइयों के प्रवर्तक। अनेक विदेश यात्राएं।

पता—104 सी. मातृश्री अपार्टमेंट, हैदरगुडा, हैदराबाद-500001

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आचार्य तिरुमल

(तेलुगु)

जन्म 1945, राजामुंदरी (आ० प्र०) में। चैतन्य कलाशाला, हैदराबाद में तेलुगु विभागाध्यक्ष।

प्रकाशित रचनाएं—लगभग 20, अनेक पुरस्कारों से सम्मानित। 'कवि कौस्तुभ' 'साहित्य सम्राट' उपाधियों से विभूषित। चैतन्यकलाशाला के संस्थापक अध्यक्ष। 1983 में थाइलैंड, सिंगापुर, मलेशिया की यात्रा करने वाले किन्नर सांस्कृतिक प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व। कविता के अतिरिक्त नाटक, कहानियाँ, काव्य-शास्त्र और निबन्ध भी।

पता—अध्यक्ष, तेलुगु विभाग, चैतन्य कलाशाला, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद।

डा. बोयी भीमन्ना

(तेलुगु)

जन्म—19 सितम्बर, 1911; आ० प्र० में निर्धन हरिजन परिवार में। शिक्षा के लिए आर्थिक सहायता लेनी पड़ी। संघर्षमय जीवन, अन्ततः मूर्धन्य शीर्षक लेखक के रूप में प्रतिष्ठित। पत्रकारिता और अध्यापन के बाद राजनीति में सक्रिय। 1955 में सरकारी नौकरी स्वीकार कर ली। कवि, नाटककार, गीतकार और गद्य-लेखक।

प्रकाशित रचनाएँ—लगभग तीस से ऊपर। युवकों में विशेष रूप से लोकप्रिय। कवि द्वारा स्वयं अपनी कविता का अँग्रेज़ी में अनुवाद। अनेक साहित्यिक संस्थानों से सम्बद्ध। काशी विश्वविद्यालय तथा आन्ध्र विश्वविद्यालय द्वारा मानद डॉक्टरेट। पद्मश्री से विभूषित।

पता—आई. सी. 85 आई. एम. कालोनी, हैदराबाद—500004

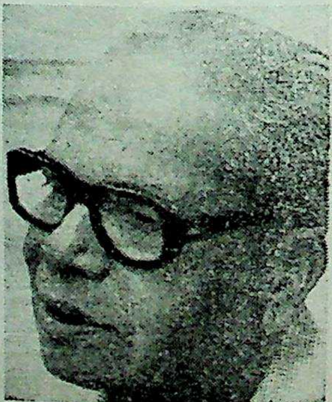

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के. एम. सत्यनारायण शास्त्री

(तेलुगु)

जन्म—1920 पल्लीपलम (आ. प्र.)। पण्डितों और वैद्यों के परिवार में। स्कूली जीवन में चमत्कारी बालक के रूप में विख्यात। बीस साल की उम्र में ही 'आन्ध्री' पत्रिका का प्रकाशन। 'आन्ध्र रचायितालु' (तेलुगु कवियों की जीवनी) से प्रकाश में आये। उनकी सर्वाधिक विशिष्ट रचना 'आन्ध्रपुराणम्' इतिहास और कविता का अद्भुत संगम। आन्ध्र प्रदेश साहित्य अकादमी के पुरस्कार से सम्मानित। आन्ध्र विश्वविद्यालय से मानद डाक्टरेट की उपाधि से विभूषित। प्रकाशित रचनाएं—25, कतिपय संस्कृत नाटकों के तेलुगु अनुवाद भी।

पता—पो. आ. राजामुन्दरी, पूर्व गोदावरी, आन्ध्र प्रदेश

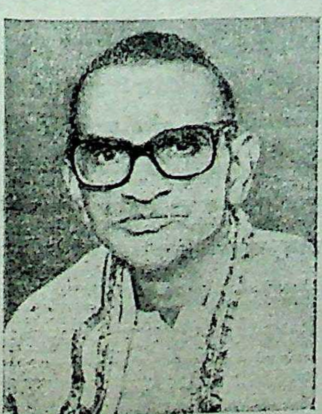

डॉ. सी. नारायण रेड्डी

(तेलुगु)

जन्म—29 जुलाई 1931, ग्राम हनुमांजीपेट (आ० प्र०) में। उस्मानिया विश्वविद्यालय से एम. ए. पी-एच. डी.। अ. प्र. आफिशियल लेंगवेज कमीशन के अध्यक्ष। अनेक अकादमी एवं साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध। आन्ध्र विश्वविद्यालय द्वारा मानद डॉक्टरेट। 'ऋतुचक्रम' काव्य पर आ. प्र. साहित्य अकादमी पुरस्कार। 'मनतालु मानवुदु' (कविता-संग्रह) पर केन्द्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार। अनेक सिनेगीत वर्ष के सर्वश्रेष्ठ घोषित। 'विश्वंभरा' (काव्य-कृति) पर कुमार आशान पुरस्कार। सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार। लगभग 40 ग्रंथ प्रकाशित। लम्बी कविताएँ, मुक्त छन्द, गीत, नाटक, साहित्यालोचन, अनुवाद भी। अनेक विदेश यात्राएं।

पता—अध्यक्ष, आफिशियल लेंग्वेज कमीशन, आ. प्र. सचिवालय, हैदराबाद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अवतार

(पंजाबी)

जन्म—27 अप्रैल 1937, ज़िला-जालन्धर (पंजाब) में। 'पंजाब विश्वविद्यालय से कला एवं शिक्षण में स्नातक। 1963 से इंग्लैण्ड प्रवास। संप्रति-ब्रिटिश सरकार के कर्मचारी। 1961 में पंजाबी कविताओं का संग्रह 'कप्पड़-छालन'। अनेक लेख और 'लन्दन में जीवन' पर एक किताब। नव्यतम प्रकाशन—'मेरे पर्त ऑन तक'। बातचीत के शौक़ीन। अपने गाँव लौटने के लिए लालायित। दर्शन में विशेष रुचि।

पता—76 सेवर्न क्रेसेन्ट, लांगले, स्लाड (बक्स), यू. के.

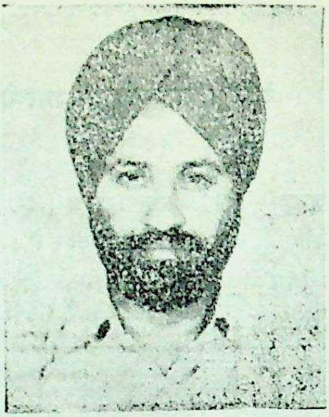

हरभजन हलवारवी

(पंजाबी)

जन्म—10 मार्च, 1943, हलवारा, ज़िला-लुधियाना (पंजाब) में। गणित एवं पंजाबी में एम. ए.। लुधियाना ज़िला और शहर के हायर सैकेण्डरी स्कूलों में विज्ञान का अध्यापन। एक वर्ष तक पंजाब विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी-पंजाबी कोष विभाग में कार्य। संप्रति—पंजाबी ट्रिब्यून में सहायक संपादक। प्रकाशित कविता-संग्रह 'पौण उदास है'। अक्तूबर 1981 में भारत-चीन मैत्री संघ की ओर से एक प्रतिनिधि मंडल में शामिल होकर दो सप्ताह की चीन-यात्रा। यात्रा विवरण प्रकाशनाधीन।

पता—सहायक संपादक, पंजाबी ट्रिब्यून, चंडीगढ़।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सरोद सुदीप
(पंजाबी)

जन्म—2 जनवरी, 1943, चीमना, ज़िला-लुधियाना (पंजाब) में। पंजाबी में एम. ए.। व्यवसाय—अध्यापन। प्रकाशित काव्य-संकलन 'बेनाम बस्ती' (1977), 'उसको कहो' (1980)। पता—दाना मण्डी, समराला, ज़िला-लुधियाना (पंजाब)

मनजीत टिवाणा
(पंजाबी)

मनोविज्ञान और अंग्रेज़ी में एम. ए.। पी-एच. डी. के लिए शोध का विषय—'सर्जनात्मक साहित्यकारों का व्यक्तित्व'। प्रकाशित पुस्तकें—इलहाम (कविता), इल्ज़ाम (कविता) पंजाबी की प्रथम नाट्य-लेखिका। 'पन्न तड़ागी' (पद्य नाटिका)। पिछले 15 वर्षों से लेखन, प्रकाशन एवं प्रसारण। सरकारी कॉलेज में आठ वर्ष का अध्यापन अनुभव। सम्प्रति—शासकीय महिला कॉलिज में प्राध्यापिका। कई बार विदेश-यात्रा।
पता—प्राध्यापिका, शासकीय कॉलेज (महिला) डेरा बस्ती, निकट चण्डीगढ़।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आलोक सरकार

(बांग्ला)

जन्म—23 मार्च, 1931। कलकत्ता विश्वविद्यालय से बांग्ला भाषा एवं साहित्य में एम.ए.। श्यामसुन्दर कॉलिज बर्दवान में बांग्ला विभाग के अध्यक्ष।
प्रकाशित रचनाएं—उत्ताल निर्जन, आलोकितो समन्वय, अंधकार उत्सव, बिशुद्ध अरण्य, अमुल संभव रात्रि, निशीथ वृक्ष। 'आलोक सरकारेर श्रेष्ठ कविता, (काव्यसग्रह) 'आलोक सरकारेर काव्यनिर्वाचित' (काव्य-नाटक)।
पता—45 ए. रासविहारी एवेन्यू, कलकत्ता-700026

लालसिंह दिल

(पंजाबी)

जन्म—11 अप्रैल, 1943, गांव किंगराली, जिला लुधियाना (पंजाब) में।
शिक्षा—दसवीं कक्षा तक। व्यवसाय—मजदूरी
प्रकाशित काव्य रचनाएँ—'सतलुज दी हवा' और 'बहुत सारे सूरज'।
पता—गांव व पोस्ट समराला, जिला-लुधियाना, पंजाब

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुनील गंगोपाध्याय

(बांग्ला)

जन्म—1934, पूर्वी बंगाल (अब बांगला देश) में। कलकत्ता विश्व विद्यालय से एम. ए.। पिछले 25 वर्ष से बांग्ला की प्रसिद्ध काव्य-पत्रिका 'कृत्तिबास' का संपादन। सम्प्रति—'देश' में एसोसिएट एडिटर। प्रकाशित कृतियाँ—15 काव्य-संग्रह, 12 कहानी-संग्रह, 32 उपन्यास, 6 निबन्ध एवं समालोचन-संग्रह। दो उपन्यासों पर सत्यजीत रे, एक पर निर्मलसेन, एक पर रायचौधरी द्वारा फ़िल्म-निर्माण। बिब्बल राय चौधरी द्वारा निर्मित फ़िल्म पर 1978 में सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म का पुरस्कार। 'सई समय' पर बंकिम पुरस्कार। देश-विदेश का व्यापक भ्रमण।

पता—अपार्टमेंट न० 2/9, 24 मांडेविले गार्डन्स, कलकत्ता-700019

शक्ति चट्टोपाध्याय

(बांग्ला)

जन्म—नवम्बर 1933। प्रेसीडेन्सी कालेज, कलकत्ता से स्नातक। संप्रति-आनन्द बाज़ार पत्रिका से संबद्ध। तीस से भी अधिक काव्य-संग्रह एवं चयनिकाएँ। बाल साहित्य भी। हाल में ही आनन्द तथा अकादमी पुरस्कार से सम्मानित।

पता—आनन्द बाजार पत्रिका लि०
6, प्रफुल्ल सरकार स्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रणवेन्दु दासगुप्त

(बांग्ला)

जन्म—1936; कवि, निबन्धकार एवं कला-समीक्षक के रूप में प्रख्यात। सम्प्रति—जादवपुर विश्वविद्यालय में तुलनात्मक साहित्य विभाग में रीडर। पता—3, नार्थ रोड, जादवपुर, कलकत्ता-32

द. भा. धामणस्कर

(मराठी)

जन्म—1930। शिक्षा — एम. ए.। संप्रति—रिजर्व बैंक में नौकरी। प्रकाशित काव्य-संकलन—'प्रावत्तनाचे संदर्भ'। स्वच्छन्द एवं मौलिक कविता के प्रणेता। हृदयस्पर्शी बिम्बों के माध्यम से जीवन की तरल कोमल अभिव्यक्ति एवं प्रकृति-चित्रण। कोमल पारदर्शी शैली, शब्दों में मितव्ययता और भावोत्पादकता आपकी कविता की खास पहचान। पता — अकल्पित गजबन्धन को. हो. सोसायटी, सी. के. पी. हॉलसमोर, गडकरी पथ, डोबिवली (पूर्व) 421201

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नारायण वामन कुलकर्णी कवठेकर

(मराठी)

जन्म—1951 । शिक्षा—एम. ए., बी. एड. । अकोला में प्राध्यापक । खेती में विशेष रुचि ।

प्रकाशित रचनाएँ—'हे माझ्या गवताच्या पात्या' । परम्परा-मुक्त कविता के माध्यम से आसपास के कठोर क्रूर दोगले यथार्थ का सामना । अनुभूति के बदलते रूपों के साथ विविध रूप धारण करने वाली बहुरंगी शैली ।

शरच्चन्द्र मुक्तिबोध

(मराठी)

जन्म--1921 । शिक्षा—बी. ए., एल-एल. बी. । मॉरिस कॉलेज, नागपुर में कई वर्ष तक मराठी के प्राध्यापक । महत्त्वपूर्ण प्रकाशन —'नवी मलवाट', 'यात्रिक' (काव्य संकलन), 'क्षिप्रा', 'सरहद्द', 'जन हे वोलतु जेथे' (उपन्यास); 'सृष्टि, सौन्दर्य और साहित्य' (समीक्षा)। काव्य, उपन्यास, समीक्षा के क्षेत्र में विशेष योगदान । 'सृष्टि, सौन्दर्य और साहित्य, पर साहित्य अकादमी पुरस्कार । कविता-संग्रह विशेष रूप से चर्चित ।

भूल से श्री शरच्चन्द्र मुक्तिबोध और श्री कुसुमाग्रज के चित्र अदल-बदल गये हैं ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुसुमाग्रज

(मराठी)

पूरा नाम—विष्णु वामन शिरवाडकर। जन्म—1912। शिक्षा—बी. ए.। प्रकाशित कृतियाँ—'विशाखा', 'किनारा' (कविता); 'वैष्णव', जाह्नवी (उपन्यास); 'नट सम्राट' 'बीज मृणाली धरतीला' (नाटक)। प्रारम्भ में पत्रकारिता। इधर अनेक वर्षों से मसीजीवी। कविता-संग्रहों पर राज्य सरकार के अनेक पुरस्कार। 'नट सम्राट' नाटक साहित्य अकादमी से सम्मानित। पहला कविता-संग्रह बहुत लोकप्रिय। प्रेमगीत और नाट्यगीत भी अत्यन्त प्रभावी।

प्रा. केशव तानाजी मेश्राम

(मराठी)

जन्म—1937। शिक्षा—एम. ए.। महर्षि दयानन्द कॉलेज, बम्बई में मराठी विभाग के अध्यक्ष। प्रमुख प्रकाशन—उत्खनन (कविता-संग्रह), हक़ीकत व जटायू (लघु उपन्यास), पोखरण (उपन्यास)। तीनों रचनाएँ महाराष्ट्र राज्य सरकार द्वारा पुरस्कृत। शीर्षस्थ दलित साहित्यकार। जीवन की ज्वलंत अनुभूति की अभिव्यक्ति के साथ कला मूल्यों का निर्वाह। निरा आक्रोश नहीं, संयत अंतर्मुखता। उपन्यास, कहानी, समीक्षा लिखने पर भी मूलतः कवि। पता—महर्षि दयानन्द कॉलेज, बम्बई

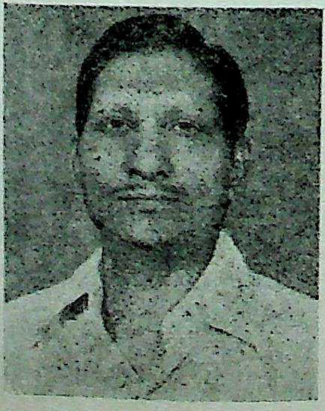

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एन. वी. कृष्ण वारियर

(मलयालम)

पूरा नाम—नेरुक्कविल वारियत कृष्ण वारियर
जन्म—13 मई, 1916, जिला—त्रिचूर (केरल) में।
शिक्षा—एम. ए., एम. लिट्. एवं अनेक परीक्षाएँ उत्तीर्ण। अध्यापन। 'मातृभूमि' (सचित्र साप्ताहिक), 'युग प्रभात' (हिन्दी पाक्षिक) 'कुमकुमम्' (साप्ताहिक) और 'कलालयम' (मासिक) का सम्पादन।
साहित्य निपुण और साहित्य रत्न। स्वर्ण-पदकों, सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, स्वाधीनता सेनानी ताम्रपत्र आदि से सम्मानित।
प्रकाशित कृतियाँ—20 कविता-संग्रह, 2 कत्थक शैली नाटक, 2 यात्रा विवरण, 6 निबन्ध संकलन, 3 नाट्य संकलन तथा कई अनुवाद।
पता—पालकस्सेरी, क्विलोन-13 (केरल)

ओ. एन. वी. कुरुप

(मलयालम)

जन्म—27 मई, 1931, चवारा (केरल) में।
शिक्षा—मलयालम में एम. ए.।
संप्रति—गवर्नमेंट कॉलेज फार वूमेन त्रिवेन्द्रम में मलयालम स्नातकोत्तर विभाग के अध्यक्ष। 'अक्षरम', 'उप्पू' 'दाहीक्कुन्न पानपात्रम', 'मयिलप्पीली' सहित 6 कविता-संकलन प्रकाशित। एक निबन्धसंग्रह, एक बाल कविता-संग्रह कुल 16 पुस्तकें प्रकाशित। 'अक्षरम' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार। 'अग्निसलभंगल' पर केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार। 'अप्पू' पर सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार। सर्वश्रेष्ठ मलयालम गीतकार के रूप में छः बार फ़िल्म पुरस्कारों से सम्मानित। दो बार रूस-यात्रा।
पता—इन्दीवरम, क्रॉटनहिल, त्रिवेन्द्रम (केरल) 695014

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

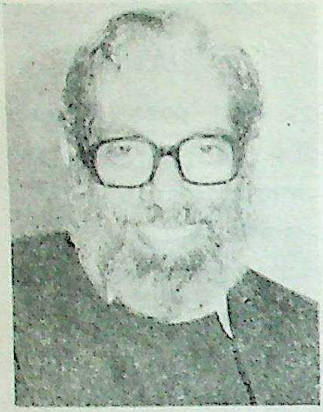

डॉ. के. अय्यप्पा पणिक्कर

(मलयालम)

जन्म—1930, कवालम (केरल) में। शिक्षा—केरल विश्वविद्यालय से एम. ए.। इण्डियाना विश्वविद्यालय से पी-एच.डी.। संप्रति—प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, इंस्टीट्यूट ऑफ इंग्लिश केरल विश्वविद्यालय। कविता पर 1975 का केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार और समालोचना पर केरल साहित्य अकादमी का 1984 का पुरस्कार। अन्य पुरस्कार भी। कई फ़ैलोशिप। अनेक शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं से सक्रिय रूप से सम्बद्ध। 'केरल कविता' (त्रैमासिक) के संपादक। प्रकाशित पुस्तकें—4 मलयालम में और 3 अँग्रेज़ी में। अनेक पुस्तकों का संपादन भी। अमेरिकी साहित्य, अँग्रेज़ी में भारतीय लेखन। सौन्दर्य शास्त्र, मलयालम साहित्य, रंगमंच आदि पर 30 से अधिक आलेख। कई रचनाएँ हिन्दी में अनूदित।

सुगत कुमारी

(मलयालम)

पूरा नाम—बी. सुगत कुमारी। जन्म-जनवरी 1934, त्रिवेन्द्रम (केरल) में। केरल विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में एम. ए.। 'दर्शन की भारतीय शाखाओं में मोक्ष परिकल्पना' विषय पर शोध। केरल राज्य जवाहर बालभवन की प्राचार्य। बाल-पत्रिका 'तलिरु' की सम्पादक। प्रमुख रचनाएँ—8 कविता संग्रह, कुछेक कृतियों के अनुवाद भी। अनेक रचनाएं केरल एवं कालिकट विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में निर्धारित। 'रात्रि माझा' पर केन्द्रीय साहित्य अकादमी, 'पतिर पूकल' पर केरल साहित्य अकादमी, 'अम्बालमणि' पर कुमारन आशन एवं अन्य पुरस्कारों से सम्मानित। अनेक संस्थाओं की सदस्या।

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

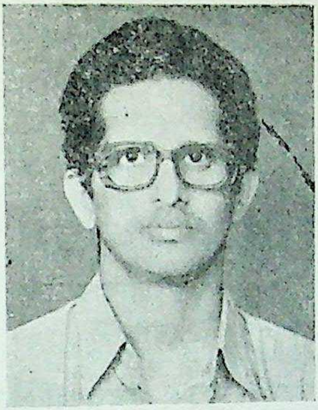

विष्णु नारायण नंबूदिरि

(मलयालम)

जन्म—1939, तिरुवल्ला में। 8 वर्ष की वय से ही वेद अध्ययन में दीक्षित। पारम्परिक रूप में संस्कृति का शिक्षण, अंग्रेजी साहित्य में एम. ए.। तीन वर्ष तक मासिक 'ग्रन्थालोकम' का सम्पादन। सम्प्रति—त्रिवेन्द्रम के युनिवर्सिटी कॉलेज में अंग्रेजी के प्राध्यापक। 1979 में हिमालय गिरि-शृंखला की यात्रा। संरक्षण आन्दोलन में सक्रिय सहयोग। अनुवाद सहित 5 कविता-संग्रह और 3 गद्य कृतियाँ प्रकाशित। कविता के लिए कल्याणी कृष्णा मेनन पुरस्कार, केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार एवं ओडक्कुषल पुरस्कार।

पता—'अपराजित', वेल्लायम्पालम्, त्रिवेन्द्रम

डॉ. रुद्रदेव त्रिपाठी

(संस्कृत)

जन्म—1925 दशपुर, मन्दसौर (म०प्र०) में।

शिक्षा—आचार्य, एम. ए. (हिन्दी एवं संस्कृत), बी. एड., साहित्यरत्न तथा पी-एच. डी., डी. लिट्.।

सम्प्रति—लालबहादुर शास्त्री के. सं. विद्यापीठ में प्रोफेसर एवं शोध विभागाध्यक्ष। कुछ-पत्रिकाओं का सम्पादन।

प्रकाशित रचनाएँ—काव्य, गद्य, समीक्षा आदि विविध विधाओं में लगभग 75 ग्रन्थ।

पता—लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नयी दिल्ली 16

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

पं. अमीरचन्द शास्त्री

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(संस्कृत)

जन्म—जुलाई 1918, झंग (पश्चिम पंजाब) में। शिक्षा—1937 तक हरिद्वार गुरुकुल में। फिर शास्त्री आचार्य की परीक्षाएँ उत्तीर्ण। संस्कृत और संस्कृति विषय से सम्बद्ध शोध-प्रबन्ध पर विद्यावाचस्पति की उपाधि।

अनेक विद्यालयों, विश्वविद्यालयों में अध्यापन करते रहे। सम्प्रति—लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ में प्राध्यापक। अनेक उपाधियाँ। राष्ट्रपति द्वारा 1978 में सम्मानित एवं पुरस्कृत। कुछ वर्ष 'सत्साहित्य' एवं 'संस्कृत रत्नाकर' पत्रों का सम्पादन। प्रकाशित रचनाएँ—गीत कादम्बरी, रससिद्धान्त, नेहरूचरितम्, शास्त्री सप्तशती, राजेन्द्रप्रसादचरित्रम्, गोस्वामी-चरितम् तथा संख्ययोगयोर्वेदमूलतत्त्वम्। अनेक संस्कृत ग्रन्थों का सम्पादन भी। पता—लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विधापीठ, नयी दिल्ली

डॉ. जगन्नाथ पाठक

(संस्कृत)

जन्म—1934, सहसराम (बिहार) में। शिक्षा—हिन्दी एवं संस्कृत में एम.ए., साहित्याचार्य एवं पी-एच. डी.। सम्प्रति—गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यपीठ इलाहाबाद में प्रवाचक। प्रकाशित रचनाएँ—'कापि शायिनी' (संस्कृत पद्य), 'थेरीगीत गाथा' और 'पत्रलेखा के पत्र' (कथा)। कुछ प्राचीन ग्रन्थों का सम्पादन भी। 'कापि शायिनी' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार।

पता—गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, इलाहाबाद (उ० प्र०)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डॉ. सी. आर. स्वामीनाथन्

(संस्कृत)

जन्म—10 मार्च 1927, पालघाट (केरल) में।

शिक्षा — एम. ए., पी-एच. डी., साहित्याचार्य। प्रचीन हस्तलिखित ग्रन्थों पर नेपाल में रहकर विशेष कार्य।

सम्प्रति—शिक्षा मन्त्रालय में उप-परामर्शदाता (संस्कृत)।

प्रकाशित रचनाएँ—दो काव्य-संकलन, एक कविता-संग्रह एवं शोध-लेख, चार शोध एवं आलोचना से सम्बन्धित पुस्तकें।

पता—5/30, वेस्ट ईस्ट एरिया, करोल बाग, नयी दिल्ली-110005

रमाकान्त शुक्ल

(संस्कृत)

जन्म—24 दिसम्बर, 1940 में खुर्जा (उ०प्र०) में।

शिक्षा — एम. ए., पी-एच. डी., साहित्याचार्य।

सम्प्रति— राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग में।

प्रकाशित रचनाएँ—लगभग एक दर्जन ग्रन्थ जिनमें काव्य, नाटक आदि प्रमुख। उत्तर प्रदेश प्रशासन, उत्तर प्रदेश संस्कृति अकादमी आदि द्वारा कई पुरस्कार। मारिशस एवं फिलाडेलफिया में संस्कृत कवि-सम्मेलन में प्रतिनिधित्व।

पता—6, वाणी विहार, नयी दिल्ली-110059

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

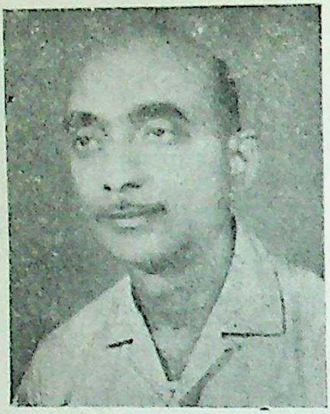

नारायण श्याम

(सिन्धी)

जन्म—15 जुलाई, 1922। गाँव खाही क़ासिम, नवाबशाह (सिन्ध) में। उच्चकोटि के छायावादी कवि, विभिन्न छन्दों में प्रयोग। सिन्धी कविता में अँग्रेज़ी 'सानेट' और जापानी 'हाइकू' का प्रयोग। वारीअ मरियो पलांदू (बालू लिप्त चूनरी) ग़ज़ल-संग्रह पर साहित्य अकादमी पुरस्कार। 7 कविता-संग्रह प्रकाशित। सम्प्रति—साहित्य अकादमी की सिन्धी परामर्श समिति के संयोजक।

पता—ए 1/बी-37, जनकपुरी, नयी दिल्ली-110058

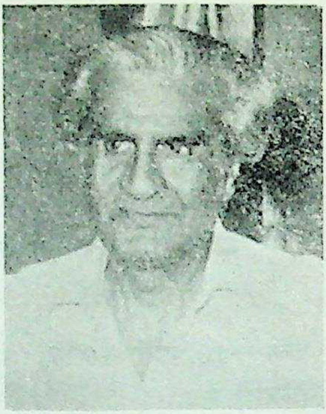

प्रभु 'वफ़ा'

(सिन्धी)

जन्म—19 सितम्बर, 1915, गाँव पंजोदेरो, लाड़िकाणों (सिन्ध) में। संगीतात्मक कवि के नाते प्रसिद्ध। सिन्धी में 'पंजिकिड़ा' रूप की लोकप्रियता के सूत्रधार। 'परवाज़' कविता संग्रह पर साहित्य अकादमी पुरस्कार। गीतों का पहला संग्रह 'झंकार' 1952 में प्रकाशित। सरकारी सेवा से रिटायर होकर बम्बई बस गये।

पता—सी-3, मधुबन, सेन्ट एन्ड्रयूस रोड, बान्द्रा, बम्बई-400050

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कृष्ण 'राही'

(सिन्धी)

जन्म—25 मई, 1932, लाड़िकाणों (सिन्ध) में। विभाजन के बाद बम्बई में आ बसे। ओजस्वी प्रगतिवादी एवं प्रभावशील कवि। 'सिन्धियत' (सिन्धी पहचान) विषय पर मार्मिक गीत-रचना। 'कमाच' कविता-संग्रह पर साहित्य अकादमी पुरस्कार। 'लुडक ए मुर्क' (आंसू और मुस्कान) कहानी-संग्रह बहुत चर्चित।

पता—बी. ए. आर. सी. कालोनी, चेम्बूर, बम्बई।

एम. कमल

(सिन्धी)

जन्म—8 अगस्त, 1925, कंडियारो नवाबशाह (सिन्ध) में। भारत की प्रमुख सिन्धी बस्ती उल्हासनगर के वासी।

प्रगतिवादी ग़ज़ल के कवि के रूप में विशेष विख्यात। भाषा पर अच्छा अधिकार एवं प्रयोगधर्मी के नाते प्रतिष्ठित।

प्रकाशित रचनाएँ—चार कविता-संग्रह और एक एकांकी संग्रह। नाटकों को रंगमंच पर लाने में विशेष योगदान।

पता—540/1079, उल्लास नगर 421604 (महाराष्ट्र)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रीटा शहाणी

(सिन्धी)

जन्म— हैदराबाद सिन्ध में।

शिक्षा—लखनऊ में। विवाह के बाद पुणे में निवास। कविता में प्रकृति और मानस का आकर्षक तालमेल। हाल ही में दो कविता-संग्रह प्रकाशित। कहानियाँ, एकांकी और स्मृति-चित्र भी। मराठी के 'गीत रामायण' पर आधारित सिन्धी गीतों का संगीत और नृत्य द्वारा मंच से सफल प्रस्तुतीकरण।

पता—फ्लोरियाना, बोट क्लब रोड़, पुणे-411001

डॉ० केदारनाथ सिंह

(हिन्दी)

जन्म—1934, बलिया (उ० प्र०) में। शिक्षा—हिन्दी में एम. ए., पी-एच. डी.।

संप्रति — जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के भारतीय भाषा केन्द्र में हिन्दी के प्रोफ़ेसर। प्रकाशित कृतियाँ —'तीसरा सप्तक' (संकलित कवि) 'अभी बिल्कुल अभी', 'जमीन पक रही है', 'यहाँ से देखो' (कविता) 'कल्पना और छायावाद', तथा 'आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब विधान का विकास' (समालोचना)।

पता—जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-110057

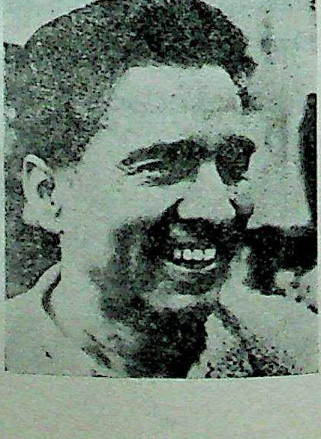

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भवानी प्रसाद मिश्र

(हिन्दी)

जन्म—1913 टिगरिया, होशंगाबाद (म० प्र०) में।

मृत्यु—20 फरवरी, 1985।

शिक्षा — बी. ए.। कई स्थानों पर अध्यापन। तीन वर्ष तक 'कल्पना' का संपादन। आकाशवाणी से सम्बद्ध। सम्पूर्ण गाँधी-वाङ्मय का सम्पादन। स्वतन्त्र लेखन। राष्ट्रीय आन्दोलन से सम्बद्ध जिसमें तीन वर्ष का कारावास।

प्रकाशित कृतियाँ—'दूसरा सप्तक' (संकलित कवि, गीत फरोश', 'चकित है दुख', 'अँधेरी कविताएँ', ('गाँधी पंचशती', 'बुनी हुई रस्सी', 'खुशबू के शिलालेख', 'व्यक्तिगत', 'अनाम तुम आते हो', 'परिवर्तन जिये' 'कालजयी', 'त्रिकाल संध्या'। 'बुनी हुई रस्सी' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार।

विजयदेव नारायण साही

(हिन्दी)

जन्म—अक्तूबर 1924, काशी में।

निधन—5 नवम्बर, 1983।

शिक्षा — अंग्रेज़ी में एम. ए.। काशी विद्यापीठ तथा प्रयाग विश्वविद्यालय में अंग्रेज़ी के प्राध्यापक रहे। राजनीति में सक्रिय रुचि रही आयी।

प्रकाशित कृतियाँ—'तीसरा सप्तक' (संकलित कवि), 'मछलीघर', 'साखी' (कविता), 'जायसी'(आलोचना)।'नयी कविता' और 'आलोचना' के संपादक-मंडल में रहे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

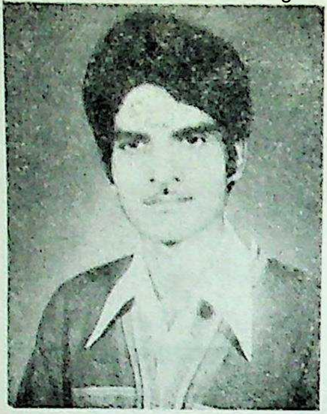

डॉ. अब्दुल बिस्मल्लाह
(हिन्दी)

जन्म—5 जुलाई, 1949, बलापुर (इलाहाबाद) में। शिक्षा—हिन्दी में एम. ए., डी. फिल.। कुछ दिनों तक पत्रकारिता। आजकल वाराणसी के एक स्कूल में अध्यापन। प्रकाशित रचनाएं—'मुझे बोलने दो', 'छोटे बुतों का बयान' (कविता), 'त्रयी-त्रयी' (संकलित कवि), 'कितने-कितने सवाल', 'टूटा हुआ पंख' (कहानी संग्रह)

पता—हिन्दी विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली-110025

डॉ. नरेन्द्र मोहन
(हिन्दी)

जन्म—30 जुलाई, 1935, लाहौर में। शिक्षा—हिन्दी में एम. ए., पी-एच. डी.। विगत 16 वर्षों से खालसा कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय में प्राध्यापक। प्रकाशित कृतियाँ—'इस हादसे में', 'समना होने पर', 'एक अग्निकांड जगहें बदलता' (कविता) आलोचना साहित्य पर 5 कृतियाँ भी। अनेक वर्षों तक 'संचेतना' के संपादक-मण्डल में। अनेक कृतियों का संपादन।

पता—डी-239, एम. आई. डी. फ्लैट्स राजौरी गार्डन, नयी दिल्ली।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चयन-मण्डल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

असमी

नीलमणि फूकन

(परिचय के लिए देखें 'सहयोगी कवि')

उड़िया

डॉ. जगन्नाथ प्रसाद दास

(देखें 'सहयोगी कवि')

उर्दू

डॉ. गोपीचन्द नारंग

जन्म—1 जनवरी 1931, दुक्की, बलूचिस्तान में।
शिक्षा—एम. ए., पी-एच. डी.। इण्डियाना यूनिवर्सिटी, अमेरिका से भाषा-विज्ञान एवं व्याकरण का विशिष्ट अध्ययन। कई विदेशी विश्वविद्यालयों में उर्दू अध्यापन।
सम्प्रति—जामिया मिलिया विश्वविद्यालय में उर्दू भाषा एवं साहित्य के प्रोफ़ेसर। ग़ालिब पुरस्कार एवं उर्दू अकादमी पुरस्कार से सम्मानित। साहित्यिक अध्ययन से सम्बन्धित अनेक पुस्तकें प्रकाशित।
पता—डी-252, सर्वोदय एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017

कन्नड

प्रो. एच. एम. नायक

जन्म—1631, होसामने, शिमोगा, ज़िला (कर्नाटक) में।
कन्नड़—विद्वान, आलोचक, निबन्धकार एवं स्तम्भ-लेखक के रूप में लोकप्रिय। कर्नाटक साहित्य अकादमी के अध्यक्ष, मैसूर विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कन्नड़ अध्ययन संस्थान के निदेशक एवं अन्य कई संस्थाओं से सम्बद्ध। अनेक बार विदेश-यात्राएं। मैसूर विश्वविद्यालय एवं कर्नाटक राज्य द्वारा पुरस्कृत।
प्रकाशित रचनाएँ—60 से अधिक पुस्तकों का लेखन, सम्पादन एवं अनुवाद। कन्नड़ एन्साइक्लोपीडिया के प्रधान सम्पादक।
पता—'गोधूलि' जयलक्ष्मीपुरम्, मैसूर-570012

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कश्मीरी

डॉ. शशिशेखर तोषखानी

जन्म—24 मई, 1935 श्रीनगर में।
शिक्षा—अँग्रेज़ी और हिन्दी में एम. ए.। कश्मीर विश्वविद्यालय से पी-एच. डी.।
हिन्दी लेखक तथा कवि। अध्यक्ष: 'दिशा' (समाज सापेक्ष लेखन के प्रति प्रतिबद्ध कश्मीरी के लेखकों की संस्था),
प्रकाशित रचनाएं—'थोड़ा-सा आकाश' (कविता-संग्रह), 'एक अपरिचित आकाश' के सम्पादक। जीवनी लेखक तथा अनुवादक
पता—एफ-2947, नेताजी नगर, नयी दिल्ली 110023

गुजराती

डॉ. दिगीश मेहता

जन्म—12 जुलाई, 1934। शिक्षा—एम. ए., पी-एच. डी.। विभिन्न कालेजों में अँग्रेज़ी पढ़ाने के पश्चात् 1970 से गुजरात विश्वविद्यालय के अँग्रेज़ी विभाग के रीडर।
प्रकाशित रचनाएँ—'दूरना ए सूर' (व्यक्तिगत निबन्धों का संग्रह) तथा 'आपनो हाडीक संग' (उपन्यास)। दोनों ही पुस्तकों पर राज्य पुरस्कार। अनेक आलेख एवं लेख भी।
पता—युनिवर्सिटी स्कूल ऑफ लेंग्वेजेज, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद।

तमिल

डॉ. एम. रामलिंगम् एषिलमुदलवन

(देखें 'सहयोगी कवि')

तेलुगु

डॉ. पी. एस. आर. अप्पाराव

जन्म—26 जून, 1925, वांदापुरम, पश्चिम गोदावरी जिला, (आ० प्र०) में।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षा—एम. ए., पी-एच. डी.। संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी के ज्ञाता। लगभग 10 वर्ष अध्यापन एवं बाद में अन्य अनेक सरकारी संस्थाओं में उच्च पद पर। अनेक साहित्यिक एवं राजकीय संस्थाओं से सम्बद्ध।

प्रकाशित रचनाएं—'नाट्यशास्त्रम्', एवं 'ताजमहल' (नाटक), 'विश्वभारती' (उपन्यास), 'वेनुवु' (गद्य काव्य) के अतिरिक्त 9 अन्य पुस्तकें। कुछ पुस्तकों का सम्पादन भी। 'नाट्यशास्त्रम्' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार।

पता—फ्लैट नं० 6, ब्लाक नं० 1, सत्यनगर, हैदराबाद

पंजाबी

डॉ. हरभजन सिंह

जन्म—18 अगस्त, 1920, लुमडिंग, आसाम में।

शिक्षा—एम. ए. पी-एच. डी.।

सम्प्रति—दिल्ली विश्वविद्यालय में पंजाबी विभाग में प्रोफेसर। दिल्ली साहित्य कला परिषद् एवं अन्य अनेक संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत। और 'न धुप्पे न छावें' (काव्य-संकलन) पर साहित्य अकादमी पुरस्कार।

प्रकाशित रचनाएँ—पांच काव्य-संकलन। आलोचना विधा पर भी एक पुस्तक।

पता—ए-10, मॉडल टाउन, दिल्ली-9

बांग्ला

प्रणवेन्दु दास गुप्त

(देखें 'सहयोगी कवि')

मराठी

शान्ता जनार्दन शेलके

शिक्षा—मराठी तथा संस्कृत में एम. ए.। अनेक वर्षों तक [illegible] दयानन्द कॉलिज में मराठी विभाग की अध्यक्षा। अब सेवानिवृत्त।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रकाशित रचनाएँ—वर्षा, रूपसी, गोंदण (कविता-संग्रह), बाल साहित्य, कहानियाँ, समीक्षा, गीत आदि भी। पिछले तीन दशकों में नाटकों एव फ़िल्मों के लिए कई गीत भी लिखे।

सम्प्रति—मसीजीवी।

पता—साहित्य सहवास, बान्द्रा पूर्व, बम्बई-400051

मलयालम

डॉ. के. एस. जार्ज

जन्म—1914

शिक्षा—मद्रास विश्वविद्यालय से एम. ए., पी-एच. डी.। मलयालम और अँग्रेजी में 37 पुस्तकों के लेखक और अनेक महत्त्वपूर्ण प्रकाशनों के सम्पादक। मलयालम साहित्य के जाने-माने परिचायक। चार बार विदेश-यात्रा। अनेक संस्थाओं से सक्रिय रूप से सम्बद्ध।

पता—करीम पुमान्निल, काडियर, त्रिवेन्द्रम-3

संस्कृत

डॉ. मण्डन मिश्र

जन्म—7 जून, 1929। शिक्षा—एम. ए., पी-एच. डी., आचार्य (साहित्य एवं मीमांसा)। विभिन्न उच्च शिक्षा-संस्थानों में 35 वर्ष तक अध्यापन कार्य। तिरुपति, इलाहाबाद, जम्मू और दिल्ली में केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ के प्राचार्य रहे।

संप्रति-- राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली के निदेशक तथा लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली के प्राचार्य पद पर आसीन।

राष्ट्र स्तर की अनेक सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं के संस्थापक/अध्यक्ष/सदस्य। अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन (1959-67) के मुख्य सचिव। अमेरिका में सम्पन्न विश्व संस्कृत कान्फ्रेन्स में भारतीय प्रतिनिधि मण्डल के संयोजक। साहित्य कला परिषद् दिल्ली प्रशासन से पुरस्कृत। पद्मभूषण उपाधि से अलंकृत।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कृतित्व—मौलिक लेखन के साथ लगभग तीन दर्जन ग्रन्थों का सम्पादन। 'शोध प्रभा' तथा 'विमर्श' पत्रिकाओं के मुख्य सम्पादक।

पता—लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ, कटवरया सराय नई दिल्ली-16

सिंधी

डॉ. एल. एम. खूबचन्दाणी

जन्म—1932, कराची में।

शिक्षा—एम. ए; पेन्सिलवानिया विश्वविद्यालय से पी-एच. डी.। पत्रकारिता में डिप्लोमा भी। कुछ वर्ष पत्रकारिता एवं बाद में देश-विदेश में कई स्थानों पर कार्य। पूर्व-पश्चिम केन्द्र होनोलुलु के सीनीयर फैलो रहे।

सम्प्रति—निदेशक, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एजूकेशन, पूना।

प्रकाशित कृतियाँ—'गाँधी एण्ड कंटेम्पोरेरी वर्ल्ड, एवं 'लेंग्वेज, एजूकेशन, सोसल जस्टिस'।

पता—सेन्टर फार कम्युनिकेशन स्टडीज़, न्यू 270, सिन्द सोसायटी, गणेश खिन्द, पुणे 411007 (महाराष्ट्र)

हिन्दी

डॉ. रामदरश मिश्र

जन्म—15 अगस्त, 1924, डुमरी (गोरखपुर) में।

शिक्षा—एम. ए; पी-एच. डी.। दिल्ली विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग में प्रोफ़ेसर।

प्रकाशित कृतियाँ—5 कविता संग्रह, 8 उपन्यास, 6 कहानी-संग्रह, 1 निबन्ध-संग्रह, 5 आलोचना ग्रन्थ, तथा 4 अन्य पुस्तकें। 6 पुस्तकों का सम्पादन भी।

पता—आर-38, वाणी बिहार, उत्तम नगर, नयी दिल्ली-59

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भारतीय कहानियाँ : 1983

प्रतिनिधि कहानीकार

असमी : लक्ष्मीनन्दन बॉरा, अपूर्व शर्मा
उड़िया : चन्द्रशेखर रथ, रवि पट्टनायक
उर्दू : इक़बाल मजीद, सागर सरहदी
कन्नड़ : यू.आर. अनंतमूर्ति, यशवंत चित्ताल
कश्मीरी : अख्तर महीउद्दीन, हरिकृष्ण कौल
गुजराती : गुलाब दास ब्रोकर, धीरेन्द्र मेहता
तमिल : ना. पार्थसारथी, अशोक मित्तन्
तेलुगु : वी.राजाराम मोहनराव, दादा हयात
पंजाबी : बूटासिंह, चंदन नेगी
बांग्ला : संजीव चट्टोपाध्याय, सुव्रत सेनगुप्त
मराठी : आशा बगे, भारत सासणे
मलयालम : एम. मुकुन्दन्, टी. पद्मनाभन्
सिन्धी : ईश्वरचन्दर, मोतीलाल जोतवाणी
हिन्दी : भीष्म साहनी, पंकज विष्ट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh,Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भारतीय ज्ञानपीठ

उद्देश्य

ज्ञान की विलुप्त, अनुपलब्ध और
अप्रकाशित सामग्री का अनुसन्धान
और प्रकाशन तथा लोक-हितकारी
मौलिक साहित्य का निर्माण

•

संस्थापक

(स्व०) साहू शान्तिप्रसाद जैन

(स्व०) श्रीमती रमा जैन

•

अध्यक्ष

साहू श्रेयांस प्रसाद जैन

•

मैनेजिंग ट्रस्टी

श्री अशोक कुमार जैन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant